श्रीबगला-कल्पतरु

'कौल-कल्पतरु'
चण्डी

जय पीताम्बर-धारिणि! जय सुखदे! वरदे!
मातः जय सुखदे! वरदे!

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

'चण्डी' : विशेष प्रस्तुति

श्रीबगला-कल्पतरु

श्रीबगला-साधना (पुष्प १)

◈ 'गायत्री'-साधना ◈

◈ 'कवच'-साधना ◈

◈ 'ध्यान'-साधना ◈

◈ 'मातृका'-साधना ◈

◈ 'सहस्र-नाम'-साधना ◈

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

✶

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक :

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, श्रीचण्डी-धाम,

प्रयाग-राज-२११००६ ☎(०५३२)-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७

अनुदान ४५/-

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

जिनकी 'दिव्य कृपा' से
प्रस्तुत श्रीबगला-कल्पतरु का
संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

'राष्ट्र-गुरु'
पूज्य स्वामी जी

कौल-कल्पतरु
पं० देवीदत्त शुक्ल

कुल-भूषण
पं० रमादत्त शुक्ल

चतुर्थ संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण
दीपावली, 'सौम्य' सं० २०७३ वि०-३० अक्टूबर, २०१६

परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

***

दो शब्द

दश महा-विद्याओं में भगवती बगला की उपासना बहुत लोक-प्रिय है। प्रायः भक्त-गण उनकी उपासना के प्रति आकर्षित होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक द्वारा भगवती बगला की उपासना के विविध प्रकारों को शोध-पूर्ण ढङ्ग से सरल-से-सरल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास हो रहा है। हमें विश्वास है कि इससे इच्छुक बन्धु लाभान्वित होंगे।

तन्त्रोक्त उपासना 'भाव'-मय होती है। भावों के प्रति विशेष ध्यान देने से ही तन्त्र-मार्ग में अभीष्ट सफलता प्राप्त होती है। भगवती पीताम्बरा का स्वरूप कैसे विलक्षण भावों से युक्त है, यह भगवती के विविध ध्यानों से सहज ही स्पष्ट होता है। 'सहस्त्र'-नामों के विशिष्ट नामों से भी भगवती के विलक्षण स्वरूप का परिचय प्राप्त होता है। उदाहरण-स्वरूप कुछ विशिष्ट नामों को देखिए। यथा-

ब्रह्मेशी	पर-ब्रह्म (अर्द्ध-नारीश्वर) की शक्ति।
कटाक्ष-क्षेम-कारिणी	दृष्टि-मात्र से कल्याण करनेवाली ।
कामनी	सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली।
कामुका	ऐश्वर्य की स्वामिनी एवं दायिनी।
काम-चारिणी	स्वतन्त्र, स्वेच्छा से क्रिया-शीला।
कालाक्षी	'काल' को व्याप्त करनेवाली, विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार विशिष्ट कार्य करनेवाली।
क्षुद्र-क्षुद्रा	क्षुद्रों (दुष्टों) के लिए कठोर ।
गोपनी	भक्तों की रक्षा करनेवाली।
जायिनी	विजय प्रदान करनेवाली, दुष्टों/शत्रुओं का दमन करनेवाली।
ट-वर्गगा	सर्व-व्याधि-नाशिका, सर्व-सम्पत्-प्रदा, सर्व-सिद्धि-प्रदा ।
टट-पतिर्यमनी	बड़े-से-बड़े सामर्थ्यवालों को भी संयमित करनेवाली।
ठक्कर-प्रिय	उद्यमियों को प्रोत्साहित करनेवाली।
ठग-तन्त्र-प्रकाशिनी	ढोंगियों के कार्य-कलापों से सावधान करनेवाली
तल्पदा	सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुँचानेवाली।
दम्भनी	अहङ्कारियों का दमन करनेवाली।
प्र-मध्यमाशेषा	पूर्णतया निष्पक्षा।
पाशघ्नी	पाशों को नष्ट करनेवाली।
लीला-लग्ना-निरीक्षिणी	पर-ब्रह्म की लीला का सञ्चालन करनेवाली ।

स्पष्ट है कि भगवती बगला का स्वरूप अत्यन्त विलक्षण है। यह एक ओर दुष्ट जनों का स्तम्भन करनेवाला, उग्र विघ्नों का शमन करनेवाला, शक्ति-शाली दुष्ट व्यक्तियों का दमन करनेवाला है, तो दूसरी ओर दरिद्रता को दूर करनेवाला, करुणा-पूर्ण नेत्रोंवाला, दुष्ट वृत्तियों का शमन करनेवाला, मृत्यु का भी मारक है।

संक्षेप में, भगवती बगला की आराधना से सभी प्रकार की विद्याएँ, लक्ष्मी, सौभाग्य, दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि, मान, भोग, आरोग्यता, सुख आदि की प्राप्ति होती है।

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज — ऋतशील शर्मा

'वेद' एवं 'तन्त्र' के सन्दर्भ में :

सिद्धि-प्रदा श्रीबगला-मुखी

'राष्ट्र-गुरु' श्री स्वामी जी महाराज

'शक्ति'-उपासना में काली, तारा और षोडशी विद्या के ही रूप ध्येय, ज्ञेय रूप से विशेषतः प्रचार में हैं। अन्य महा-विद्याओं के विषय में बहुत कम ही प्रकाश हुआ है। श्रीबगला-मुखी महा-विद्या के विषय में 'वेद' एवं 'तन्त्र'-ग्रन्थों में जो कुछ कहा गया है; उस पर यहाँ कुछ विचार करते हैं, जिससे श्रीबगला विद्या का रहस्य पाठकों को व्यक्त होगा।

'स्वतन्त्र तन्त्र' में भगवान् शङ्कर, पार्वती जी से कहते हैं कि 'हे देवि! श्रीबगला विद्या के आविर्भाव को कहता हूँ। पहले कृत-युग में सारे जगत् का नाश करनेवाला वात-क्षोभ (तूफान) उपस्थित हुआ। उसे देखकर जगत् की रक्षा में नियुक्त भगवान् विष्णु चिन्ता-परायण हुए। उन्होंने सौराष्ट्र देश में 'हरिद्रा सरोवर' के समीप तपस्या कर श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी भगवती को प्रसन्न किया। श्री श्रीविद्या ने ही बगला-रूप से प्रकट होकर समस्त तूफान को निवृत्त किया। त्रैलोक्य-स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र बगला महा-विद्या श्री श्रीविद्या एवं वैष्णव-तेज से युक्त हुई।

मङ्गलवार-युक्त चतुर्दशी, मकार, कुल-नक्षत्रों से युक्त 'वीर-रात्रि कही जाती है। इसी की 'अर्ध-रात्रि' में श्रीबगला का आविर्भाव हुआ था।

उक्त कथानक के अनुकूल 'कृष्ण-यजुर्वेद' की काठक-संहिता में दो मन्त्र आए हैं, जिनसे श्रीबगला विद्या का वैदिक रूप प्रकट होता है–

विराड्-दिशा विष्णु-पत्न्यघोरास्येशाना सहसो या मनोता ।
विश्व-व्यचा इषयन्ती सुभूता शिवा नो अस्तु अदितिरुपस्थे ।।
विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या अस्येशाना सहसो विष्णु-पत्नी ।
वृहस्पतिर्मातारश्वोत वायुस्संध्वाना वाता अभितो गृणन्तु ।।

(काठक संहिता, २२ स्थानक, १, २ अनु० ४९, ५०)

अर्थात्–'विराट् दिशा' दशों दिशाओं को प्रकाशित करनेवाली, 'अघोरा' सुन्दर स्वरूपवाली, 'विष्णु-पत्नी' विष्णु की रक्षा करनेवाली वैष्णवी महा-शक्ति, 'अस्य' त्रिलोक जगत् की 'ईशाना' ईश्वरी तथा 'सहसः' महान् बल को धारण करनेवाली 'मनोता' कही जाती है।

'मनोता' का विवेचन ऐसा किया गया है–

वाग् वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांसि ओतानि,

अग्निर्वै देवानां मनोता तस्मिन् हि तेषां मनांसि ओतानि ।
गौर्हि देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांसि ओतानि ।।

(ऐतरेय ब्राह्मण २, १०)

अर्थात् **देवताओं का मनस्तत्त्व** वाक्, अग्नि और गौ में ओत-प्रोत है। अतः इन तीनों शक्तियों के समुदाय को **'मनोता'** कहते हैं।

'विश्व-व्यचा' अन्तरिक्ष लोक-स्वरूप समस्त **नक्षत्र-मण्डल** में प्रकाशित होनेवाली (**'अन्तरिक्षं विश्व-व्यचाः' तैत्तरीय ब्राह्मण ३-२-३७**)।

'इषयन्ती' समस्त जगत् को प्रेरित करनेवाली **इच्छा-शक्ति**-रूपा।

'सुभूता' आनन्दार्थ अनेक रूपों में आविर्भाव होनेवाली।

'अदितिः' अविनाशी-स्वरूप देव-माता **'उपस्थे'** हम उपासकों के समीप, **'शिवा'** कल्याण-स्वरूपवाली, **'अस्तु'** हो।

'दिवः विष्टम्भः' अर्थात् दिव-लोक का स्तम्भन करनेवाली।

इस प्रकार **'कृष्ण यजुर्वेद'** के उक्त मन्त्र में आया **'विष्टम्भः'** पद **श्रीबगला विद्या** के प्रसिद्ध **'स्तम्भन'**-तत्त्व को बताता है।

'धरुणः पृथिव्याः' पद **पृथिवी तत्त्व की प्रतिष्ठा** बताता है–**'प्रतिष्ठा वै धरुणम्'** (**शतपथ ब्राह्मण** ७-४-२-५)।

श्रीबगला विद्या का बीज पार्थिव है–'बीजं स्मेरत् पार्थिवम्' तथा बीज-कोश में इसे ही **'प्रतिष्ठा कला'** भी कहते हैं।

'अस्य सहसः ईशाना' सारे जगत् पर जिसका शासन है, उन **'विष्णु-पत्नी'** अर्थात् **विष्णु की रक्षा** करनेवाली, **वृहस्पति, मात-रिश्वा** और वायु-रूपवाली, **'संध्वाना'** शब्द-तत्त्व का कारण, **'वाता'** वात-क्षोभ को शान्त करनेवाली, **'अभितो गृणन्तु'** हमें उभय-लोक में **भुक्ति एवं मुक्ति** अर्थात् **'स्वर्गापवर्ग-प्रदे'** प्रदान वरनेवाली **श्रीबगला विद्या** को बताता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि **'स्वतन्त्र तन्त्र'** में उल्लिखित कथा और **'कृष्ण यजुर्वेद'** के दोनों मन्त्रों में कथित **श्रीबगला-तत्त्व** अभिन्न हैं।

***

भगवती बगला का वास्तविक रूप

आभिचारिक प्रसङ्गों में श्रीबगला विद्या की प्रधानता होने से बहुत से लोग इन्हें 'तामसिक शक्ति' कहते हैं। 'कामधेनु-तन्त्र' में तामस प्रकरण में ही इनकी गणना की गई है और 'कल्याण' के शक्ति-अङ्क के 'दश महा-विद्या' शीर्षक लेख में पं० मोतीलाल शर्मा ने शत्रु-निरोध में ही इस विद्या का उपयोग लिखा है, परन्तु यह बात एक-देशीय है, प्रधानता के अभिप्राय में ही है, वास्तविक रूप से नहीं। 'शक्ति-सङ्गम-तन्त्र' (तारा-खण्ड) में तो श्रीबगला को त्रि-शक्ति-रूप में माना गया है–

सत्ये काली च श्रीविद्या, कमला भुवनेश्वरी।
सिद्ध-विद्या महेशानि!, त्रिशक्तिर्बगला शिवे!।।

अत: श्रीबगला माता को तामस मानना ठीक नहीं है। आभिचारिक कृत्यों में रक्षा की ही प्रधानता होती है। यह कार्य इसी शक्ति द्वारा निष्पन्न होता है। इसीलिए इसके बीज की एक संज्ञा 'रक्षा-बीज' भी है (देखिए, मन्त्र-योग-संहिता)–

शिव-भूमि-युतं शक्ति-नाद-विन्दु-समन्वितम्।
वीजं रक्षा-मयं प्रोक्तं, मुनिभिर्ब्रह्म-वादिभिः।।

'यजुर्वेद' के प्रसिद्ध 'आभिचारिक प्रकरण' में अभिचार-स्वरूप की निवृत्ति में इसी शक्ति का विनियोग किया गया है। इस प्रकरण का 'यजुर्वेद' की सभी संहिताओं (तैत्तरीय, मैत्रायणी, काक, काठक, माध्यन्दिनि, क्राण्व) में समान-रूप से पाठ आया है। 'माध्यन्दिनि संहिता' के भाष्य-कर्त्ता उव्वट, महीधर भाष्यकारों ने जैसा अर्थ इसका लिया है, उसका सार यहाँ देते हैं। पं० ज्वालाप्रसाद कृत मिश्र भाष्य में इसका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है।

'शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनि संहिता' के पाँचवें अध्याय की २३, २४, २५ वीं कण्डिकाओं में अभिचार-कर्म की निवृत्ति में श्रीबगला महा-शक्ति का वर्णन इस प्रकार आया है–

'रक्षोहणं वलग-हनं वैष्णवीमिदमहं तं वगलमुत्किरामि।'

अर्थात् 'राक्षसों द्वारा किए गए अभिचार की निवृत्ति के लिए वैष्णवी महा-शक्ति को प्रतिपादन करनेवाली महा-वाणी को इन्द्र से कहो' इत्यादि प्रसङ्ग में बगला-मुखी विद्या का स्वरूप वेद ने परम-रहस्य रूप से बताया है।

वेद में 'तन्त्र-शास्त्र'-प्रसिद्ध बगला-पद 'वलगा'–इस व्यत्यय नाम से कहा जाता है। इसका अर्थ उव्वट ने ऐसा किया है–

'**वलगान् कृत्या-विशेषान् भूमौ निखनितान् शत्रुभिर्विनाशार्थं हन्तीति वलगहा तां वलग-हनम्।**'

अर्थात् 'शत्रु के विनाश के लिए कृत्या-विशेष भूमि में जो गाड़ देते हैं, उन्हें नाश करनेवाली **वैष्णवी महा-शक्ति** को **वलगहा** कहते हैं।' यही अर्थ **वगला-मुखी** का भी है।

'**खनु अवदारणे**' इम धातु से '**मुख**' शब्द बनता है, जिसका अर्थ मुख में पदार्थ का चर्वण या विनाश ही अभिप्रेत होता है। इस प्रकार शत्रुओं द्वारा किए हुए **अभिचार को नष्ट करनेवाली महा-शक्ति** का नाम '**बगला-मुखी**' चरितार्थ होता है। **श्रीमहीधर** ने इसका स्पष्ट अर्थ ऐसा किया है–

'**पराजयं प्राप्य पलायमानं राक्षसैरिन्द्रादि-वधार्थमभिचार-रूपेण भूमौ निखाता अस्थि-केश-नखादि-पदार्थाः कृत्या-विशेषा वलगाः।**'

अर्थात् 'इन्द्रादि देवताओं द्वारा पराजित होकर भागे हुए राक्षसों ने देवताओं के बध के लिए **अस्थि, केश, नखादि** पदार्थों के द्वारा अभिचार किया।'

'**तैत्तरीय ब्राह्मण**' में भी कहा है–'**असुरा वै निर्यन्तो देवानां प्राणेषु वलगान् न्यखनन्**' अर्थात् देवताओं को मारने के लिए असुरों ने अभिचार किया।

'**शतपथ ब्राह्मण**' (३-४-३) में भी इसे इस प्रकार बताया है–

'**यदा वै कृत्यामुत्खनन्ति अथ सालसाऽमोघाऽभि-भवति तथा एवैष एतद्-यस्मा अत्र कश्चित् द्विषन् भ्रातृव्यः कृत्यां वलगान् निखनति तानेवैतदुत्किरत्ति।**'

उक्त ही अर्थ इस वचन का भी है। '**वलगा**' का अर्थ **महीधर** ने इस प्रकार किया है–

'**यस्य बधार्थं क्रियते तं वृण्वन्नाच्छादयन् गच्छतीति वलगः।**'

अर्थात् 'जिसके वध के लिए कृत्या का प्रयोग किया जाता है, उसे गुप्त रीति से मार देता है।'

इसीलिए **महर्षि यास्क** ने '**वलगो वृणौतः**' (**निघण्टु ६**) '**वृञ् आच्छादने**' धातु से बनाया है। '**वलगान्**' इसी द्वितीयान्त पद के अनुकरण से '**बगला**' तान्त्रिक नाम निष्पन्न हुआ है।

भगवती के '**बगला-मुखी**' इस संज्ञा नाम की सिद्धि पर वैयाकरण लोग आपत्ति करते हैं कि यह नाम अशुद्ध है क्योंकि '**नख-मुखात् संज्ञायाम्**' इस सूत्र से ङीष्' प्रत्यय का निषेध होकर आ-प्रत्यय होकर '**बगला-मुखा**' ही नाम शुद्ध है, परन्तु '**स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्**' इस सूत्राधिकार से उक्त सूत्र की प्रवृत्ति होती है। यहाँ '**मुखी**' शब्द स्वाङ्ग-वाची नहीं है। **बगला** के निःसारण में ही '**मुख**' शब्द का प्रयोग है। '**मुखं निःसरणम् इत्यमरः**' तथा '**मुखमुपाये प्रारम्भे श्रेष्ठे निःसरणास्ययोः इति हैमः**'। उपाय, प्रारम्भ, श्रेष्ठ, निःसरण और मुख के अर्थ में ही '**मुख**' शब्द का प्रयोग होता है। अतः उक्त सूत्र की यहाँ प्राप्ति ही नहीं है। **ज्वाला-मुखी, सूर्य-मुखी, गौ-मुखी** शब्दों की तरह यह शब्द भी सिद्ध ही है।

***

श्री बगला-ध्यान-साधना

भगवती बगला के 'ध्यान' को समझकर उसका समुचित रूप से ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है। 'ध्यान' के अनुसार चिन्तन होने पर ही सिद्धि प्राप्त होती है। इसीलिए कहा गया है–'**ध्यानं विना भवेन्मूकः, सिद्ध-मन्त्रोऽपि साधकः।**' अर्थात् ध्यान के बिना सिद्ध-साधक भी गूँगा ही रहता है।

भगवती बगला के अनेक 'ध्यान' मिलते हैं। 'तन्त्रों' में विशेष कार्यों के लिए विशेष प्रकार के 'ध्यानों' का वर्णन हुआ है। यहाँ कुछ ध्यानों का एक संग्रह दिया जा रहा है। आशा है कि बगलोपासकों के लिए यह संग्रह विशेष उपयोगी सिद्ध होगा, वे इसे कण्ठस्थ अर्थात् याद करके विशेष अनुभूतियों को प्राप्त करेंगे। —सम्पादक

१. चतुर्भुजी बगला

सौवर्णासन-संस्थितां *१ त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्ग-रुचिं शशाङ्क-मुकुटां स्रक्-चम्पक-स्रग्-युताम् *२ ।
हस्तैर्मुद्गर - पाश - वज्र-रसनां संविभ्रतीं भूषणै –
र्व्याप्ताङ्गीं बगला-मुखीं त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं *३ चिन्तये ।।

अर्थात् सुवर्ण के आसन पर स्थित, तीन नेत्रोंवाली, पीताम्बर से उल्लसित, सुवर्ण की भाँति कान्ति-मय अङ्गोंवाली, जिनके मणि-मय मुकुट में चन्द्र चमक रहा है, कण्ठ में सुन्दर चम्पा पुष्प की माला शोभित है, जो अपने चार हाथों में- १. गदा, २. पाश, ३. वज्र और ४. शत्रु की जीभ धारण किए हैं, दिव्य आभूषणों से जिनका पूरा शरीर भरा हुआ है—ऐसी तीनों लोकों का स्तम्भन करनेवाली श्रीबगला-मुखी की मैं चिन्ता करता हूँ।

२. द्वि-भुजी बगला

मध्ये सुधाऽब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्याम्, सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम् ।
पीताम्बराऽऽभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीम्, देवीं नमामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।।१
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीम्, वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम् ।
गदाऽभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि ।।२

अर्थात् सुधा-सागर में मणि-निर्मित मण्डप बना हुआ है और उसके मध्य में रत्नों की बनी हुई चौकोर वेदिका में सिंहासन सजा हुआ है, उसके मध्य में पीले रङ्ग के वस्त्र और आभूषण तथा पुष्पों से सजी हुई श्रीभगवती बगला-मुखी को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।। भगवती पीताम्बरा के दो हाथ हैं ; बाँएँ से शत्रु की जिह्वा को बाहर खींचकर दाहिने हाथ में धारण किए हुए मुद्गर से उसको पीड़ित कर रही हैं।।२।।

३. चतुर्भुजी बगला (मेरु-तन्त्रोक्त)

गम्भीरां च मदोन्मत्तां, तप्त-काञ्चन-सन्निभाम् । चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन-संस्थिताम् ।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं, वामे जिह्वां च वज्रकम् । पीताम्बर-धरां सान्द्र-वृत्त-पीन-पयोधराम् ।।
हेम-कुण्डल-भूषां च, पीत-चन्द्रार्ध-शेखराम् । पीत-भूषण-भूषां च, स्वर्ण-सिंहासन-स्थिताम् ।।

अर्थात् साधक गम्भीराकृति, मद से उन्मत्त, तपाए हुए सोने के समान रङ्गवाली, पीताम्बर धारण किए वर्तुलाकार परस्पर मिले हुए पीन स्तनोंवाली, सुवर्ण-कुण्डलों से मण्डित, पीत-शशि-कला-सुशोभित-मस्तका भगवती पीताम्बरा का ध्यान करे, जिनके दाहिने दोनों हाथों में मुद्गर और पाश सुशोभित हो रहे हैं तथा वाम करों में वैरि-जिह्वा और वज्र विराज रहे हैं तथा जो पीले रङ्ग के वस्त्राभूषणों से सुशोभित होकर सुवर्ण-सिंहासन में कमलासन पर विराजमान हैं।

४. चतुर्भुजी बगला (बगला-दशक)

वन्दे स्वर्णाभ-वर्णां मणि-गण-विलसद्धेम-सिंहासनस्थाम् ।
पीतं वासो वसानां वसु - पद - मुकुटोत्तंस - हाराङ्गदाढ्याम् ।।
पाणिभ्यां वैरि-जिह्वामध उपरि-गदां विभ्रतीं तत्पराभ्याम् ।
हस्ताभ्यां पाशमुच्चैरध उदित-वरां वेद-बाहुं भवानीम् ।।

अर्थात् सुवर्ण जैसी वर्णवाली, मणि-जटित सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान और पीले वस्त्र पहने हुई एवं 'वसु-पद' (अष्ट-पद/अष्टापद) सुवर्ण के मुकुट, कण्डल, हार, बाहु-बन्धादि भूषण पहने हुई एवं अपनी दाहिनी दो भुजाओं में नीचे वैरि-जिह्वा और ऊपर गदा लिए हुईं, ऐसे ही बाँएँ दोनों हाथों में ऊपर पाश और नीचे वर धारण किए हुईं, चतुर्भुजा भवानी (भगवती) को प्रणाम करता हूँ।

५. श्रीब्रह्मा द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

क. वादी मूकति, रङ्कति क्षिति-पतिर्वैश्वानरः शीतति ।
क्रोधी शान्तति, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रांनुगः खञ्जति *४ ।।
गर्वी खर्वति, सर्व-विच्च जड़ति *५ त्वद्-यन्त्रणा यन्त्रितः ।
श्री-नित्ये बगला-मुखि! प्रति-दिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः ।।

ख. कुटिलालक-संयुक्तां *६ मदाघूर्णित-लोचनाम् । मदिरामोद-वदनां प्रवाल-सदृशाधराम् ।।
सुवर्ण-शैल-सुप्रख्य-कठिन-स्तन-मण्डलाम् । दक्षिणावर्त्त-सन्नाभि-सूक्ष्म-मध्यम-संयुताम् ।।

ग. युवतीं च मदोन्मत्तां, पीताम्बरा-धरां शिवाम् । पीत-भूषण-भूषाङ्गीं, सम-पीन-पयोधराम् ।।
मदिरामोद-वनां प्रवाल-सदृशाधराम् । पान-पात्रं च शुद्धिं च, विभ्रतीं बगलां स्मरेत् ।।

घ. पीताम्बर-धरां सौम्यां, पीत-भूषण-भूषिताम् । स्वर्ण-सिंहासनस्थां च, मूले कल्प-तरोरधः ।।
वैरि-जिह्वा-भेदनार्थं, छुरिकां विभ्रतीं *७ शिवाम् । पान-पात्रं गदां पाशं, धारयन्तीं भजाम्यहम् ।।

च. सर्व-मन्त्र-मयीं देवीं, सर्वाकर्षण-कारिणीम् । सर्व-विद्या-भक्षिणीं च, भजेऽहं विधि-पूर्वकम् ।।

६. श्री अक्षोभ्य ऋषि द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

प्रत्यालीढ-परां *८ घोरां, मुण्ड-माला-विभूषिताम् । खर्वां लम्बोदरीं भीमां, पीताम्बर-परिच्छदाम् ।।
नव-यौवन-सम्पन्नां, पञ्च-मुद्रा-विभूषिताम् । चतुर्भुजां ललज्जिह्वां, महा-भीमां वर-प्रदाम् ।।
खड्ग-कर्त्री-समायुक्तां, सव्येतर-भुज-द्वयाम् । कपालोत्पल-संयुक्तां, सव्य-पाणि-युगान्विताम् ।।
पिङ्गोग्रैक-सुखासीनां, मौलावक्षोभ्य-भूषिताम् । प्रज्वलत्-पितृ-भू-मध्य-गतां दंष्ट्रा-करालिनीम् ।।
तां खेचरां स्मेर-वदनां, भस्मालङ्कार-भूषिताम् । विश्व-व्यापक-तोयान्ते, पीत-पद्मोपरि-स्थिताम् ।।

७. ऋषि श्रीनारद द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

१. चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन-संस्थिताम् । त्रिशूलं पान-पात्रं च, गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ।।
बिम्बोष्ठीं *९ कम्बु-कण्ठीं *१० च, सम-पीन-पयोधरां। पीताम्बरां मदाघूर्णां, ध्याये ब्रह्मास्त्र-देवतां ।।
२. पीताम्बरां पीत-माल्यां, पीताभरण-भूषिताम् । पीत-कञ्ज-पद-द्वन्द्वां *११, बगलां चिन्तयेऽनिशम् ।।

८. ऋषि श्रीदुर्वासा द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

चतुर्भुजां त्रि-नयनां, पीनोन्नत-पयोधराम् । जिह्वां खड्गं पान-पात्रं, गदां धारयन्तीं पराम् ।।
पीताम्बर-धरां देवीं, पीत-पुष्पैरलंकृताम् । बिम्बोष्ठीं चारु-वदनां, मदाघूर्णित-लोचनाम् ।।
सर्व-विद्याकर्षिणीं च, सर्व-प्रज्ञापहारिणीम् । भजेऽहं चास्त्र-बगलां, सर्वाकर्षण-कर्मसु ।।

९. ऋषि श्रीवशिष्ठ द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

पीताम्बर-धरां देवीं, द्वि-सहस्र-भुजान्विताम् । सान्द्र-जिह्वां *१२ गदा चास्त्रं, धारयन्तीं शिवां भजे ।।

१०. ऋषि श्रीअग्नि-वराह द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

विलयानल-सङ्काशां *१३, वीरां वेद-समन्विताम् । विराण्मयीं महा-देवीं, स्तम्भनार्थे भजाम्यहम् ।।

११. ऋषि श्रीकालाग्नि-रुद्र द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

जातवेद-मुखीं देवीं *१४, देवतां प्राण-रूपिणीम् । भजेऽहं स्तम्भनार्थं च, चिन्मयीं विश्व-रूपिणीम् ।।

१२. ऋषि श्रीअत्रि द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

ज्वलत्-पद्मासन-युक्तां *१५, कालानल-सम-प्रभाम् । चिन्मयीं स्तम्भिनीं देवीं, भजेऽहं विधि-पूर्वकम् ।।

१३. ऋषि श्रीदारुण द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

ध्याये प्रेतासनां देवीं, द्वि-भुजां च चतुर्भुजाम् । पीत-वासां मणि-ग्रीवां, सहस्त्रार्क-सम-द्युतिम् *१६ ।।

१४. ऋषि श्रीसविता द्वारा उपासिता श्रीबगला-मुखी

कालानल-निभां देवीं *१७, ज्वलत्-पुञ्ज-शिरोरुहां *१८ । कोटि-बाहु-समायुक्तां, वैरि-जिह्वा-समन्वितां ।।
स्तम्भनास्त्र-मयीं देवीं, दृढ-पीन-पयोधराम् । मदिरा-मद-संयुक्तां, वृहद्-भानु-मुखीं *१९ भजे ।।

१५. श्रीबगला-पटलोक्त ध्यान

**उद्यत्-सूर्य-सहस्राभां, मुण्ड-माला-विभूषिताम् । पीताम्बरां पीत-प्रियां, पीत-माल्य-विभूषिताम् ।।
पीतासनां शव-गतां, घोर-हस्तां स्मिताननाम् । गदारि-रसनां हस्तां, मुद्गरायुध-धारिणीम् ।।
नृ-मुण्ड-रसनां बालां, तदा काञ्चन-सन्निभाम् । पीतालङ्कार-मयीं, मधु-पान-परायणाम् ।
नानाभरण-भूषाढ्यां, स्मरेऽहं बगला-मुखीम् ।।**

१६. श्रीब्रह्मास्त्र-कल्पोक्त सूर्य-मण्डल-स्थित श्रीबगला-मुखी का ध्यान

नव-यौवन-सम्पन्नां, सर्वाऽऽभरण-भूषिताम् । पीत-माल्यानुवसनां, स्मरेत् तां बगला-मुखीम् ।।

१७. श्रीसांख्यायन-तन्त्रोक्त भगवती बगला के विविध ध्यान

**१. चलत्-कनक-कुण्डलोल्लासित-चारु-गण्ड-स्थलां ।
लसत् - कनक - चम्पक-द्युतिमदिन्दु - बिम्बाननाम् ।।
गदाहत - विपक्षकां कलित - लोल-जिह्वाञ्चलां ।
स्मरामि बगला-मुखीं विमुख-वाङ्-मन-स्तम्भिनीं ।।**

**२. पीयूषोदधि - मध्य - चारु - विलसद् - रत्नोज्ज्वले मण्डपे ।
श्री - सिंहासन - मौलि-पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।।
स्वर्णाभां कर-पीडतारि-रसनां भ्राम्यद्-गदां विभ्रतीम् ।
यस्त्वां पश्यति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽम्ब! सर्वापदः ।।**

**३. पीत - वर्णां मदाघूर्णां, सम - पीन - पयोधराम् ।
चिन्तयेद् बगलां देवीं, स्तम्भनास्त्राधि-देवताम् ।।**

४. पाठीन-नेत्रां *२० **परिपूर्ण-गात्रां** *२१**, पञ्चेन्द्रिय-स्तम्भन-चित्त-रूपां ।
पीताम्बराढ्यां पिशिताशिनीं** *२२ **तां, भजामि स्तम्भन-कारिणीं सदा ।।**

**५. पीताम्बर - धरां सान्द्रां, पूर्ण-चन्द्र-निभाननाम् ।
वामे जिह्वां गदामन्ये, धारयन्तीं भजाम्यहम् ।।**

**६. बिम्बोष्ठीं चारु-वदनां, सम-पीन-पयोधराम् ।
पान - पात्रं वैरि - जिह्वां, धारयन्तीं शिवां भजे ।।**

**७. पीताम्बरालंकृत-पीत-वर्णां, सप्तोदरीं शर्व-मुखामरार्च्चिताम् ।
पीन-स्तनालंकृत-पीत-पुष्पां, सदा स्मरेऽहं बगला-मुखीं हृदि ।।**

**८. कम्बु-कण्ठीं सु-ताम्रोष्ठीं, मद-विह्वल-चेतसाम् ।
भजेऽहं बगलां देवीं, पीताम्बर - धरां शिवाम् ।।**

९. नमामि बगलां देवीमासव - प्रिय - भामिनीम् ।
भजेऽहं स्तम्भनार्थं च, गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ।।

१०. कौलागमैक-संवेद्यां, सदा कौल-प्रियाम्बिकाम् ।
भजेऽहं सर्व - सिद्ध्यर्थं, वगलां चिन्मयीं हृदि ।।

११. निधाय पादं हृदि वाम-पाणिनां, जिह्वां समुत्पाटन-कोप-संयुताम्*[२३]।
गदाभिघातेन च भाल-देशके, अम्बां भजेऽहं बगलां हृदम्बुजे ।।

१२. सुधाब्धौ रत्न-पर्यङ्के, मूले कल्प-तरोस्तथा ।
ब्रह्मादिभिः परिवृतां, बगलां भावयाम्यहम् ।।

१३. पीत-वर्णां मदाघूर्णां, दृढ-पीन-पयोधराम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं, स्तम्भनास्त्र-स्वरूपिणीम् ।।

१४. पीत-बन्धूक-पुष्पाभां, बुद्धि-नाशन-तत्पराम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं, स्तम्भनास्त्राधि-देवताम् ।।

१५. जिह्वाग्रमादाय कर-द्वयेन, छित्वा *[२४] दधन्तीमुरु-शक्ति-युक्तां*[२५] ।
पीताम्बरां पीन-पयोधराढ्यां, सदा स्मरेऽहं बगलाम्बिकां हृदि ।।

१६. नमस्ते बगलां देवीं, जिह्वा-स्तम्भन-कारिणीम् ।
भजेऽहं शत्रु-नाशार्थं, मदिरासक्त-मानसाम् ।।

१७. चतुर्भुजां त्रि-नयनां, पीत-वस्त्र-धरां शिवाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं, शत्रु-स्तम्भन-कारिणीम् ।।

१८. सर्वावयव-शोभाढ्यां, सम-पीन-पयोधराम् ।
हृदि सम्भावये देवीं, बगलां सर्व-सिद्धिदाम् ।।

१९. पर - प्रज्ञापहारीं तां, पर - गर्व - प्रभेदिनीम् ।
पर - विद्या - भक्षिणीं तां, बगलां हृदि भावये ।।

२०. नमस्ते देव-देवेशीं, जिह्वा-स्तम्भन-कारिणीम् ।
पान-पात्र-गदा-युक्तां, भजेऽहं बगला-मुखीम् ।।

२१. स्वर्ण-सिंहासनासीनां, सुन्दराङ्गीं शुचि-स्मिताम् ।
बिम्बोष्ठीं चारु - नयनां, ध्याये पीन-पयोधराम् ।।

२२. अम्बां पीताम्बराढ्यामरुण-कुसुम-गन्धानुलेपां त्रि-नेत्रां ।
गम्भीरां कम्बु-कण्ठीं कठिन-कुच-युगां चारु-बिम्बाधरोष्ठीं ।।
शत्रोर्जिह्वां च खड्गं शर-धनु-सहितां व्यक्त-गर्वाधि-रूढां ।
देवीं तां स्तम्भ-रूपां हृदि परिवसितमम्बिकां तां भजामि ।।

२३. नमस्ते बगलां देवीं, शत्रु-वाक्-स्तम्भ-कारिणीम् ।
भजेऽहं विधि-पूर्वं त्वां, जयं देहि रिपून् दह ।।

२४. जातवेद - मये देवि!, जगज्जनन - कारिणि! ।
जय पीताम्बर - धरे!, बगले! ते नमो नमः ।।

२५. नानालङ्कार - शोभाढ्यां, नर-नारायण - प्रियाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं, पर - ब्रह्माधि - दैवताम् ।।

२६. बाल-भानु-प्रतीकाशां, नील-कोमल-कुन्तलाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं, स्तम्भनास्त्र-स्वरूपिणीम् ।।

२७. नमस्ते देव - देवेशि! नमः पन्नग - भूषणे! ।
पान-पात्र-युते देवि! बगले! त्वां नमाम्यहम् ।।

२८. कल्प-द्रुमाधो*[२६] हेम-शिलां प्रविलसच्चित्तोल्लसत्-कान्तिम् ।
पञ्च-प्रेतासनमारूढां भक्त-जन-काम-वितरण-शीलाम् ।।

२९. विश्वेश्वरीं विश्व-वन्द्यां, विश्वानन्द-स्वरूपिणीम् ।
पीत-वस्त्रादि-संयुक्तां, पीतां हृदि निवासिनीम् ।।

३०. योषिदाकर्षणे शक्तां, फुल्ल-चम्पक-सन्निभाम् ।
दुष्ट-स्तम्भनमासक्तां, बगलां स्तम्भिनीं भजे ।।

३१. योगिनी-कोटि-सहितां, पीताहारोप-चञ्चलाम् ।
बगलां परमां वन्दे, पर-ब्रह्म-स्वरूपिणीम् ।।

३२. पीतार्णव-समासीनां, पीत-गन्धानुलेपनाम् ।
पीतोपहार-रसिकां, भजे पीताम्बरां पराम् ।।

१८. श्रीबगला-हृदयोक्त ध्यान

गम्भीरां च मदोन्मत्तां, स्वर्ण-कान्ति-सम-प्रभाम् । चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन-संस्थिताम् ।।
ऊर्ध्व-केश-जटा-जूटां, कराल-वदनाम्बुजाम् । मुद्गरं दक्षिणे हस्ते, पाशं वामेन धारिणीम् ।।
रिपोर्जिह्वां त्रि-शूलं च, पीत-गन्धानुलेपनाम् । पीताम्बर-धरां सान्द्र-दृढ-पीन-पयोधराम् ।।
हेम-कुण्डल-भूषां च, पीत-चन्द्रार्ध-शेखराम् । पीत-भूषण-भूषाढ्यां, स्वर्ण-सिंहासने स्थिताम् ।।

१९. त्रैलोक्य-विजय-कवचोक्त ध्यान

चन्द्रोद्-भासित-मूर्धजां रिपु-रसां मुण्डाक्ष-माला-कराम् ।
बालां सत्स्रेक-चञ्चलां*[२७] मधु-मदां रक्तां जटा-जूटिनीम् ।।

शत्रु-स्तम्भन-कारिणीं शशि-मुखीं पीताम्बरोद्-भासिनीम् ।
प्रेतस्थां बगला-मुखीं भगवतीं कारुण्य-रूपां भजे ।।

२०. ब्रह्मास्त्र-रक्षा-कवचोक्त ध्यान

शुद्ध-स्वर्ण-निभां रामां, पीतेन्दु-खण्ड-शेखराम् । पीत-गन्धानुलिप्ताङ्गीं, पीत-रत्न-विभूषणाम् ।।१
पीनोन्नत-कुचां स्निग्धां, पीतालाङ्गीं*[२८] सुपेशलाम्*[२९] । त्रि-लोचनां चतुर्हस्तां, गम्भीरां मद-विह्वलाम् ।।२
वज्रारि-रसना-पाश-मुद्गरं दधतीं करैः । महा-व्याघ्रासनां देवीं, सर्व-देव-नमस्कृताम् ।।३
प्रसन्नां सुस्मितां क्लिन्नां, सु-पीतां प्रमदोत्तमाम् । सु-भक्त-दुःख-हरणे, दयार्द्रां दीन-वत्सलाम् ।
एवं ध्यात्वा परेशानि! बगला-कवचं स्मरेत् ।।४

२१. श्रीबगला-खड्ग-माला-स्तोत्रोक्त ध्यान

मध्ये-सुधाब्धि मणि-मण्डित-रत्न-वेद्याम् । सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वस्त्राम् ।।
भ्राम्यद्-गदां*[३०] कर-निपीडित-वैरि-जिह्वाम् । पीताम्बरां कनक-माल्य-वतीं नमामि ।।

★★★

श्रीबगला-ध्यान-साधना के कठिन शब्दों का अर्थ

१. सौवर्णासन-संस्थितां	सुवर्ण के आसन पर बैठी हुई।
२. स्त्रक्-चम्पक-स्त्रग-युताम्	चम्पक-पुष्प-माला से सुशोभिता।
३. संस्तम्भिनी	सम्यक् रूप से नियन्त्रित करनेवाली/सहारा देनेवाली/विरोधी शक्तियों को कुण्ठित करनेवाली।
४. क्षिप्रानुगः खञ्जति	शीघ्र पीछा करनेवालों को आहत करनेवाली।
५. सर्व-विच्च जड़ति	सर्वज्ञों को भी सभी प्रकार से मूर्ख बनानेवाली।
६. कुटिलालक-संयुक्तां	घुँघराले बालोंवाली।
७. छुरिकां विभ्रतीं	छुरी को कौशल-पूर्वक पास रखनेवाली।
८. प्रत्यालीढ-परां	पीछे पैर कर आसुरी शक्तियों पर निशाना लगानेवाली।
९. बिम्बोष्ठीं	बिम्ब-फल के समान लाल सुन्दर ओठोंवाली।
१०. कम्बु-कण्ठीं	शङ्ख के समान सुडौल कण्ठवाली।
११. पीत-कञ्ज-पद-द्वन्द्वां	पीले कमल के समान सुन्दर कोमल चरणोंवाली।
१२. सान्द्र-जिह्वां	जिह्वा को संयत् अर्थात नियन्त्रित करनेवाली।

१३. विलयानल-सङ्काशां	संसार के विघटन या विनाश-रूपी अग्नि के समान उग्र एवं तेजस्विनी।
१४. जातवेद-मुखीं देवीं	अग्नि के समान तेजस्वी मुखवाली देवी।
१५. ज्वलत्-पद्मासन-युक्तां	पद्मासन लगाए हुए प्रदीप्त स्वरूपवाली।
१६. सहस्रार्क-सम-द्युतिम्	हजारों सूर्य के समान ज्योतिवाली।
१७. कालानल-निभां देवीं	प्रलय-काल की उग्र अग्नि के समान तेजस्विनी देवी।
१८. ज्वलत्-पुञ्ज-शिरोरुहाम्	ढेर सारी जलती हुई अग्नि के समान उज्ज्वल केशोंवाली।
१९. वृहद्-भानु-मुखी	विशाल सूर्य के समान तेजस्वी मुखवाली।
२०. पाठीन-नेत्रां	'पाठीन' अर्थात् मछली के समान अत्यधिक सजग नेत्रोंवाली।अथवा विशेषज्ञ की दृष्टिवाली।
२१. परिपूर्ण-गात्रां	हृष्ट-पुष्ट शरीरवाली।
२२. पिशिताशिनीं	मांसाहार करनेवाली।
२३. जिह्वां समुत्पाटन-कोप-संयुताम्	सम्यक् रूप से 'जिह्वा' अर्थात् वाक्-शक्ति का उन्मूलन कर क्रोधित होनेवाली
२४. जिह्वाग्रमादाय कर-द्वयेन छित्वा	जीभ को दोनों हाथों से खींचकर काटनेवाली।
२५. दधन्तीमुरु-शक्ति-युक्तां	अतिशय शक्तियों को धारण करनेवाली।
२६. कल्प-द्रुमाधो	कल्प-वृक्ष के नीचे।
२७. सत्त्रेक-चञ्चलां	सर्वोत्तम गतिशीलता को प्रदान करनेवाली लक्ष्मी देवी।
२८. पीतलाङ्गीं	पीली आभावाली सुन्दरी।
२९. सुपेशलाम्	सौन्दर्य अर्थात् लावण्य-मयी/विशेषज्ञा।
३०. भ्राम्यद्-गदां	गदा को इधर-उधर घुमानेवाली।

भगवती श्रीबगला-गायत्री-साधना

'सांख्यायन तन्त्र' के बारहवें पटल में कुमार कार्तिकेय ने भगवान् शङ्कर से पूछा कि मुझे 'बगला की गायत्री' बताइए। भगवान् शङ्कर ने बताया कि 'ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-वाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात्'-यह 'बगला-गायत्री' है, जो सर्व-सिद्धि-दायक है। इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता चिन्मयी शक्ति-रूपिणी-ब्रह्मास्त्र-विद्या बगला हैं, बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्लीं' और कीलक 'विद्महे' है। इसका पुरश्चरण चार लाख जप से होता है। जप के दशांश से 'तर्पण' और उसके दशांश से घृत द्वारा 'होम' तथा उसके दशांश से 'ब्राह्मण-भोजन' होता है। –सम्पादक

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगला-गायत्री-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीचिन्मयी शक्ति-रूपिणी-ब्रह्मास्त्र-बगला देवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः, विद्महे कीलकं, श्रीब्रह्मास्त्र-बगलाम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास- श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीचिन्मयी शक्ति-रूपिणी-ब्रह्मास्त्र-बगला-देवतायै नमः हृदि, ॐ-बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं-शक्तये नमः पादयोः, विद्महे-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, श्रीब्रह्मास्त्र-बगलाम्बा-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास :	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्तम्भन-बाणाय धीमहि	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
तन्नः बगला प्रचोदयात्	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
स्तम्भन-बाणाय धीमहि	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तन्नः बगला प्रचोदयात्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान-

गम्भीरां च मदोन्मत्तां, स्वर्ण-कान्ति-सम-प्रभाम् । चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन - संस्थिताम् ।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं, वामे जिह्वां च विभ्रतीम् । पीताम्बर-धरां सौम्यां, दृढ-पीन-पयोधराम् ।।
हेम-कुण्डल-भूषाङ्गीं, पीत-चन्द्रार्द्ध-शेखराम् । पीत-भूषण-भूषाङ्गीं, स्वर्ण-सिंहासन-स्थिताम् ।।

प्रातः-कालीन बगला-गायत्री का ध्यान-

मुद्गरं दक्षिणे पाशं, वामे जिह्वां च विभ्रतीम्। पीताम्बर-धरां सौम्यां, दृढ-पीन-पयोधराम् ।।
हेम-कुण्डल-भूषाङ्गीं, पीत-चन्द्रार्द्ध-शेखराम्। पीत-भूषण-भूषाङ्गीं, स्वर्ण-सिंहासने स्थिताम् ।।

मध्याह्न-कालीन बगला-गायत्री का ध्यान-

दुष्ट-स्तम्भनमुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्र्य-विद्रावणम्[1]। भू-भृत्-स्तम्भन-कारणं[2] मृग-दृशां चेतः-समाकर्षणम्[3]।। सौभाग्यैक-निकेतनं मम दृशोः कारुण्य-पूर्णेक्षणम् । विघ्नौघं बगले! हर प्रति-दिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः ।।

सायं-कालीन बगला-गायत्री का ध्यान-

मातर्भञ्जय मद्-विपक्ष-वदनं जिह्वाञ्चलं कीलय । ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामंघ्र्यो-गतिं स्तम्भय ।। शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे! । विघ्नौघं बगले! हर प्रति-दिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः ।।

मानस-पूजन- **ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीब्रह्मास्त्र-बगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः।**

मन्त्र – **ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-बाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात् ।**

विशेष

'बगला-गायत्री-मन्त्र' (ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-वाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात्) के प्रारम्भ में **'ॐ'** लगाकर जप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। **'ऐं'** लगाने से शान्ति, **'क्लीं'** लगाने से सम्मोहन, **'ह्लीं'** लगाने से स्तम्भन, **'हूं हूं'** लगाने से विद्वेषण, **'ग्लौं'** लगाने से उच्चाटन की शक्ति प्राप्त होती है। **'ऐं क्लीं सौः'** लगाकर जप करने से वाञ्छित पत्नी की प्राप्ति होती है। **'श्रीं'** लगाने से कुबेर के समान वैभव की प्राप्ति होती है।

ताक्ष्र्य-वीज **'क्ष्रीं'** को आदि में लगाने से विष-प्रयोग, ग्रह-बाधा एवं रोगादि का नाश होता है। अमृत-वीज **'वं'** को लगाकर जप करने से ताप-ज्वर, महा-तापादि की शान्ति होती है। वायु-वीज **'यं'** लगाकर जपने से उच्चाटन होता है और **'रं'** लगाकर जपने से शत्रु नष्ट हो जाते हैं। माया-वीज **'ह्रीं'** लगाकर जपने से वशीकरण होता है। **'गायत्री'** का अर्थ है, जिसके गायन अर्थात् मनन से त्राण हो। **'बगला-गायत्री'** का अर्थ है– **भगवती बगला** का वह मन्त्र, जिसके मनन से सभी प्रकार से रक्षा होती है। **'बगला-गायत्री'** के बिना **भगवती बगला** का कोई भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता । अतः सर्व-प्रथम **'बगला-गायत्री'** का **'जप'** अवश्य करना चाहिए।

श्रीबगला-गायत्री-साधना के कठिन शब्दों का अर्थ

१. दारिद्र्य-विद्रावणम्	दरिद्रता को दूर भगानेवाला।
२. भू-भृत्-स्तम्भन-कारणं	राजा (शासक) को नियन्त्रित करनेवाला।
३. मृग-दृशां चेतः समाकर्षणम्	हरिणी-जैसी आँखोंवाली सुन्दर नारियों का आकर्षण करनेवाला।

श्रीबगला-मातृका-साधना

पहले 'ध्यान' करे। फिर शरीर के अङ्गों में मन्त्रों का 'न्यास' अर्थात् स्थापन करे। यथा-
चतुर्भुजां त्रि-नयनां, कमलासन-संस्थिताम् । त्रिशूलं पान-पात्रं च, गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ।।
बिम्बोष्ठीं कम्बु-कण्ठीं च, सम-पीन-पयोधराम् । पीताम्बरां मदाघूर्णां, ध्याये ब्रह्मास्त्र-देवताम् ।।

।। मातृका-न्यास ।।

१. ॐ ह्लीं श्रीं अं श्रीबगलामुख्यै नमः —शिरसि (सिर में) ।
२. ॐ ह्लीं श्रीं आं श्रीस्तम्भिन्यै नमः —मुखे (मुख में) ।
३. ॐ ह्लीं श्रीं इं श्रीजम्भिन्यै नमः —दक्ष-नेत्रे (दाईं आँख में) ।
४. ॐ ह्लीं श्रीं ईं श्रीमोहिन्यै नमः—वाम-नेत्रे (बाईं आँख में) ।
५. ॐ ह्लीं श्रीं उं श्रीवश्यायै नमः —दक्ष-कर्णे (दाएँ कान में) ।
६. ॐ ह्लीं श्रीं ऊं श्रीचलायै नमः —वाम-कर्णे (बाएँ कान में) ।
७. ॐ ह्लीं श्रीं ऋं श्रीअचलायै नमः —दक्ष-नासा-पुटे (दाएँ नथुने में) ।
८. ॐ ह्लीं श्रीं ॠं श्रीदुर्द्धरायै नमः —वाम-नासा-पुटे (बाएँ नथुने में) ।
९. ॐ ह्लीं श्रीं लृं श्रीअकल्मषायै नमः —दक्ष-गण्डे (कनपटी-सहित दाएँ गाल में) ।
१०. ॐ ह्लीं श्रीं ॡं श्रीधीरायै नमः —वाम-गण्डे (कनपटी-सहित बाएँ गाल में) ।
११. ॐ ह्लीं श्रीं एं श्रीकल्पनायै नमः —ऊर्ध्व-ओष्ठे (ऊपरी ओंठ में) ।
१२. ॐ ह्लीं श्रीं ऐं श्रीकाल-कर्षिण्यै नमः —अधरोष्ठे (नीचे के ओंठ में) ।
१३. ॐ ह्लीं श्रीं ओं श्रीभ्रामिकायै नमः —ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ (ऊपरी दाँतों की कतार में) ।
१४. ॐ ह्लीं श्रीं औं श्रीमन्द-गमनायै नमः —अधो दन्त-पंक्तौ (नीचे के दाँतों की कतार में)।
१५. ॐ ह्लीं श्रीं अं श्रीभोगिन्यै नमः —मुख-वृत्ते (सम्पूर्ण मुख-मण्डल में) ।
१६. ॐ ह्लीं श्रीं अः श्रीयोगिन्यै नमः —कण्ठे (गले में) ।
१७. ॐ ह्लीं श्रीं कं श्रीभगाम्बायै नमः —दक्ष-बाहु-मूले (दाईं काँख अर्थात् दाएँ हाथ व कन्धे के जोड़ में)।
१८. ॐ ह्लीं श्रीं खं श्रीभग-मालायै नमः —दक्ष-कर्पूरे (दाएँ हाथ की कोहनी में) ।
१९. ॐ ह्लीं श्रीं गं श्रीभग-वाहायै नमः —दक्ष-मणि-बन्धे (दाईं कलाई में) ।
२०. ॐ ह्लीं श्रीं घं श्रीभगोदर्यै नमः —दक्ष-करांगुलि-मूले (दाएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में)।
२१. ॐ ह्लीं श्रीं ङं श्रीभगिन्यै नमः —दक्ष-करांगुल्यग्रे (दाएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में)।
२२. ॐ ह्लीं श्रीं चं श्रीभग-जिह्वायै नमः —वाम-बाहु-मूले (बाईं काँख में)
२३. ॐ ह्लीं श्रीं छं श्रीभगस्थायै नमः —वाम-कर्पूरे (बाईं कोहनी में) ।
२४. ॐ ह्लीं श्रीं जं श्रीभग-सर्पिण्यै नमः —वाम-मणि-बन्धे (बाईं कलाई में) ।

२५. ॐ ह्लीं श्रीं झं श्रीभग-लोलायै नमः —वाम-करांगुलि-मूले (बाँएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में)।

२६. ॐ ह्लीं श्रीं ञं श्रीभगाख्यै नमः--वाम-करांगुल्यग्रे (बाँएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में)।

२७. ॐ ह्लीं श्रीं टं श्रीशिवायै नमः —दक्ष-उरु-मूले (दाईं जाँघ एवं कमर के जोड़ में)।

२८. ॐ ह्लीं श्रीं ठं श्रीभग-निपातिन्यै नमः —दक्ष-जानुनि (दाँएँ घुटने में)।

२९. ॐ ह्लीं श्रीं डं श्रीजयायै नमः —दक्ष-गुल्फे (दाँएँ टखने में)।

३०. ॐ ह्लीं श्रीं ढं श्रीविजयायै नमः -- दक्ष-पादांगुलि-मूले (दाँएँ पैर की अँगुलियों की जड़ में)।

३१. ॐ ह्लीं श्रीं णं श्रीधात्र्यै नमः -- दक्ष-पादांगुल्यग्रे (दाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में)।

३२. ॐ ह्लीं श्रीं तं श्रीअजितायै नमः —वामोरु-मूले (बाईं जाँघ एवं कमर के जोड़ में)।

३३. ॐ ह्लीं श्रीं थं श्रीअपराजितायै नमः —वाम-जानुनि (बाँएँ घुटने में)।

३४. ॐ ह्लीं श्रीं दं श्रीजम्भिन्यै नमः —वाम-गुल्फे (बाँएँ टखने में)।

३५. ॐ ह्लीं श्रीं धं श्रीस्तम्भिन्यै नमः--वाम-पादांगुलि-मूले (बाँएँ पैर की अँगुलियों की जड़ में)।

३६. ॐ ह्लीं श्रीं नं श्रीमोहिन्यै नमः -- वाम-पादांगुल्यग्रे (बाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में)।

३७. ॐ ह्लीं श्रीं पं श्रीआकर्षिण्यै नमः —दक्ष-पार्श्वे (दाईं बगल में)।

३८. ॐ ह्लीं श्रीं फं श्रीउमायै नमः —वाम-पार्श्वे (बाईं बगल में)

३९. ॐ ह्लीं श्रीं बं श्रीरम्भिण्यै नमः —पृष्ठे (पीठ में)।

४०. ॐ ह्लीं श्रीं भं श्रीजृम्भण्यै नमः —नाभौ (नाभि में)।

४१. ॐ ह्लीं श्रीं मं श्रीकीलिन्यै नमः —जठरे (पेट में)।

४२. ॐ ह्लीं श्रीं यं श्रीवशिन्यै नमः —हृदि (हृदय में)।

४३. ॐ ह्लीं श्रीं रं श्रीरम्भायै नमः —दक्षांसे (दाँएँ कन्धे में)।

४४. ॐ ह्लीं श्रीं लं श्रीमाहेश्वर्यै नमः —ककुदि (गर्दन के पीछे मध्य में)।

४५. ॐ ह्लीं श्रीं वं श्रीमङ्गलायै नमः —वामांसे (बाँएँ कन्धे में)।

४६. ॐ ह्लीं श्रीं शं श्रीरूपिण्यै नमः -- हृदयादि दक्ष-करान्तम् (हृदय से दाहिने हाथ के अन्त तक)।

४७. ॐ ह्लीं श्रीं षं श्रीपीतायै नमः —हृदयादि वाम-करान्तम् (हृदय से बाँएँ हाथ के अन्त तक)।

४८. ॐ ह्लीं श्रीं सं श्रीपीताम्बरायै नमः--हृदयादि दक्ष-पादान्तम् (हृदय से दाँएँ पैर वे अन्त तक)।

४९. ॐ ह्लीं श्रीं हं श्रीभव्यायै नमः—हृदयादि वाम-पादान्तम् (हृदय से बाँएँ पैर के अन्त तक)।

५०. ॐ ह्लीं श्रीं ळं श्रीसु-रूपा बहु-भाषिण्यै नमः —हृदयादि मुखे (हृदय से मुख तक)।

विशेष

अन्त में भगवती बगला का मानसिक पूजन करना चाहिए। यथा–

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापिनी-बगला-मुख्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि ।

क्लीं विद्या-तत्त्व-व्यापिनी-बगला-मुख्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि ।

सौः शिव-तत्त्व-व्यापिनी-बगला-मुख्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि ।

श्रीबगला-मातृका-साधना के गूढ़ नामों का अर्थ

१. श्रीबगला-मुख्यै नमः	श्रीबगला-मुखी को नमस्कार। भगवती बगला-मुखी का वास्तविक नाम 'वल्गा-मुखी' है। सामान्य बोल-चाल की भाषा में 'वल्गा' के अक्षर उलट कर 'वगला' या 'बगला' हो जाते हैं। 'वल्गा'-शब्द का अर्थ होता है-'लगाम'। अत: 'वल्गा-मुखी' या 'बगला-मुखी' से 'नियन्त्रित' करनेवाली शक्ति का बोध होता है न कि बगला पक्षी का। यही नहीं, संस्कृत भाषा में 'बगला'-शब्द का, जब विशेषण के रूप में प्रयोग होता है, तब उसका अर्थ 'अरिष्ट' अर्थात् अक्षत, पूर्ण, अविनाशी, निरापद होता है। इससे भी भगवती बगला-मुखी की विशिष्ट शक्तियों का बोध होता है।।
२. श्रीस्तम्भिन्यै नमः	शत्रुओं का वाक्-स्तम्भन (नियन्त्रण) करनेवाली शक्ति को नमस्कार।
३. श्रीजम्भिन्यै नमः	दुष्टों या दुवृत्तियों को कुतर-कुतर कर टुकड़े करनेवाली को नमस्कार।
४. श्रीचलायै नमः	ऐश्वर्यत्व की देवी 'चला'-लक्ष्मी को नमस्कार।
५. श्रीअचलायै नमः	'पृथ्वी', 'ब्रह्म-शक्ति' को नमस्कार ।
६. श्रीदुर्द्धरायै नमः	जिसका सामना न किया सके या जिसे रोका न जा सके, उसको नमस्कार।
७. श्रीअकल्मषायै नमः	पुण्य-दायी-शक्ति को नमस्कार।
८. श्रीकाल-कर्षिण्यै नमः	काल को कर्षित (नियन्त्रित) करनेवाली को नमस्कार।
९. श्रीभ्रामिकायै नमः	दुष्ट-शक्तियों को उलझानेवाली को नमस्कार।
१०. श्रीभगाम्बायै नमः	ऐश्वर्य-दात्री-शक्ति को नमस्कार।
११. श्रीभग-मालायै नमः	ऐश्वर्य-धात्री-शक्ति को नमस्कार।
१२. श्रीभग-वाहायै नमः	ऐश्वर्य-प्रदात्री-शक्ति को नमस्कार।
१३. श्रीभगोदर्यै नमः	लावण्य-मयी-शक्ति को नमस्कार।
१४. श्रीभगिन्यै नमः	सौभाग्य-दायक-शक्ति को नमस्कार।
१५. श्रीभग-जिह्वायै नमः	ऐश्वर्य-प्रिया-शक्ति को नमस्कार।
१६. श्रीभगस्थायै नमः	ऐश्वर्यस्थ शक्ति को नमस्कार।
१७. श्रीभग-सर्पिण्यै नमः	ऐश्वर्य की ओर ले जानेवाली शक्ति को नमस्कार।
१८. श्रीभग-लोलायै नमः	ऐश्वर्य-लक्ष्मी को नमस्कार।
१९. श्रीभगाक्ष्यै नमः	ऐश्वर्य-मयी को नमस्कार।
२०. श्रीभग-निपातिन्यै नमः	विपुल ऐश्वर्य को देनेवाली को नमस्कार।
२१. श्रीजृम्भिण्यै नमः	सर्व-प्रकार से विकसित होनेवाली/प्रसारित होनेवाली शक्ति को नमस्कार।
२२. श्रीकीलिन्यै नमः	दुष्ट-शक्तियों को बाँधनेवाली शक्ति को नमस्कार।
२३. श्रीरम्भायै नमः	अत्यन्त सुन्दरी को नमस्कार।
२४. श्रीपीतायै नमः	पीत-वर्णा स्थिरता-बोधक शक्ति को नमस्कार।
२५. श्रीपीताम्बरायै नमः	'पीतं अम्बरं यया सा' अर्थात् पी लिया है, महा-आकाश को जिसने, उस शक्ति को नमस्कार। अथवा पीले वस्त्रवाली देवी को नमस्कार।

श्रीबगला-मुखी-शत्रु-विनाशक-कवचम्

प्रस्तुत '**श्रीबगला-मुखी-शत्रु-विनाशक-कवचम्**' की महिमा नाम से ही स्पष्ट है। इस '**कवच**' के ऋषि स्वयं भगवान् शिव हैं और इसके स्मरण-मात्र से शत्रु-गण स्तम्भित हो जाते हैं। आन्तरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि) के शमन हेतु यह '**कवच**' विशेष रूप से उपयोगी है। -सम्पादक

।। पूर्व-पीठिका-श्री देव्युवाच ।।

नमस्ते शम्भवे तुभ्यं, नमस्ते शशि-शेखर! । त्वत् प्रसादाच्छ्रुतं सर्वमधुना कवचं वद ।।१

।। श्रीशिव उवाच ।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कवचं परमाद्भुतम् । यस्य स्मरण-मात्रेण, रिपोः स्तम्भो भवेत् क्षणात् ।।२

विनियोग – **ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-कवचस्य श्रीशिव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास – **श्रीशिव-ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिः-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

।। मूल कवच-स्तोत्र ।।

'ॐकारो' मे शिरः पातु, 'ह्लींकारो' वदनेऽवतु । 'बगला-मुखी' दोर्युग्मं, कण्ठे 'सर्व' सदाऽवतु ।।१

'दुष्टानां' पातु हृदयं, 'वाचं मुखं' ततः 'प्रदम्' । उदरे सर्वदा पातु, 'स्तम्भये'ति सदा मम ।।२

'जिह्वां कीलय' मे मातर्बगला सर्वदाऽवतु । 'बुद्धिं विनाशय' पादौ, 'ह्लीं ॐ' मे दिग्-विदिक्षु च ।।

'स्वाहा' मे सर्वदा पातु, सर्वत्र सर्व-सन्धिषु ।।३

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं देवि! कवचं परमाद्भुतम् । यस्य स्मरण-मात्रेण, सर्व-स्तम्भो भवेत् क्षणात् ।।१

।। श्रीबगला-मुखी-शत्रु-विनाशकं कवचम् ।।

विशेष

उक्त '**कवच**' की विस्तृत '**फल-श्रुति**' में स्वयं भगवान् शिव के शब्दों में यह उल्लिखित है कि प्राचीन काल में इस कवच को धारण कर भगवान् वासुदेव ने विविध दैत्यों का विनाश किया था। इसी के फल-स्वरूप स्वयं उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी।

'**कण्ठ**' या '**दाहिनी भुजा**' में उक्त कवच को लिखकर धारण करने से सभी प्रकार से षट्-कर्मों में सिद्धि प्राप्त होती है। बिना इस '**कवच**' को जाने भगवती बगला के मन्त्रों की सिद्धि नहीं होती।

श्रीबगला शिव-प्राण-प्रद कवच

'एक-वीरा तन्त्र' में सङ्कलित भगवती बगला का उक्त 'कवच' तीन बातों में अपनी विशेषता रखता है।

प्रथम तो यह कि यदि कोई शत्रुओं से घिर जाए, अथवा धन या पराक्रम से गर्वित व्यक्तियों द्वारा सताया जाए, अथवा हाथी, साँप आदि जन्तुओं का भय हो, तो उनके '**स्तम्भन**' में यह **कवच** उपयोगी होता है।

दूसरे यह कि इसके 'पूर्व-पीठिका'-भाग से यह स्पष्ट है कि कृत-युग में एक भयङ्कर वात-क्षोभ उपस्थित हुआ, जिससे सातों समुद्र एक हो गए और देवता भी भयभीत हो उठे। **इन्द्र, विष्णु** आदि सभी **शङ्कर जी** के शरणागत हुए। उस समय स्वयं **शिव जी** ने सभी भयों को दूर करनेवाला यह '**कवच**' देवों को प्रदान किया।

तीसरे **भस्मासुर** के त्रास से इसी कवच द्वारा **श्री शिव** जी ने अपनी रक्षा की थी। यही कारण है कि इस '**कवच**' को '**शिव-प्राण-प्रद**' कहा गया है। –सम्पादक

।। पूर्व-पीठिका–श्रीमहोग्र-तारा उवाच ।

राज्ञां मण्डल-गामीनां, प्रबलारिषु सर्पताम् । स-गर्वाणां महा-देव!, धन-विक्रम-चेतसाम् ।।
गज-सर्पादि-जन्तूनां, स्तम्भनं वद शङ्कर!

।। श्रीभैरव उवाच ।।

पुरा कृत-युगे देवि!, वात-क्षोभमुपस्थिते । सप्तार्णवानामेकत्वं, गतं क्षोभं ययुः सुराः ।।
सेन्द्रा स-विष्णवः सर्वे, सामयं[१] सायुषः स्थिताः ।।

।। देवा उचुः ।।

शिव शङ्कर, रुद्रेश!, रक्षास्मान् शरणागतान् । महा-वातादि-विक्षोभ-क्षोभादस्मान् महार्णवात् ।।
तच्छ्रुत्वाऽऽह महेशानि!, कवचं पूर्व-निर्मितम् । दत्तवान् सर्व-देवेभ्यो, महा-भय-निकृन्तनम् ।।
कवचं बगलामुख्याः, शिव-प्राण-प्रदं महत् । पूर्वं भस्माऽसुर-त्रासात्, भय-विह्वलतः स्वयम् ।।
पठते तेन मत्-प्राणान्, स्व-रक्षः परमेश्वरि!। शिव-प्राण-प्रदं तस्माद्, विश्रुतं रक्षकं परम् ।।

।। मूल-पाठ–श्रीबगला शिव-प्राण-प्रद कवच ।।

विनियोगः– **ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, अद्वैत-रूपिणी महा-स्तम्भन-कारिणी श्रीपीताम्बरा देवता, 'स्थिर-माया' (ह्लीं) बीजं, 'स्वाहा' शक्तिः, 'प्रणवः' (ॐ) कीलकं, मम दूरस्थानां समीपस्थानां शत्रूणां वाक्-पद-गति-मुख-स्तम्भनार्थं पर-सैन्य-पर-मन्त्र-यन्त्र-मन्त्रौषधि-स्तम्भनार्थं सर्व-राज-कुल-मोहनार्थं श्रीबगला-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास – **श्रीभैरव-ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे। अद्वैत-रूपिणी महा-स्तम्भन-कारिणी श्रीपीताम्बरा-देवतायै नमः हृदि । 'ह्लीं'-बीजाय नमः गुह्ये ।**

'स्वाहा'-शक्तये नमः नाभौ । 'ॐ'-कीलकाय नमः पादयोः। मम दूरस्थानां समीपस्थानां शत्रूणां वाक्-पद-गति-मुख-स्तम्भनार्थं पर-सैन्य-पर-मन्त्र-यन्त्र-मन्त्रौषधि-स्तम्भनार्थं सर्व-राज-कुल-मोहनार्थं श्रीबगला-मुखी-प्रीत्यर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास – 'ॐ ह्लां' अंगुष्ठाभ्यां नमः। 'ॐ ह्लीं' तर्जनीभ्यां नमः। 'ॐ ह्लूं' मध्यमाभ्यां नमः। 'ॐ ह्लैं' अनामिकाभ्यां नमः। 'ॐ ह्लौं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। 'ॐ ह्लः' करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास – 'ॐ ह्लां' हृदयाय नमः। 'ॐ ह्लीं' शिरसे स्वाहा। 'ॐ ह्लूं' शिखायै वषट्। 'ॐ ह्लैं' कवचाय हुम्। 'ॐ ह्लौं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। 'ॐ ह्लः' अस्त्राय फट्।

मूल-मन्त्र-न्यास – 'ॐ ह्लीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। 'बगला-मुखि' तर्जनीभ्यां नमः। 'सर्व-दुष्टानां' मध्यमाभ्यां नमः। 'वाचं मुखं पदं स्तम्भय' अनामिकाभ्यां नमः। 'जिह्वां कीलय' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। 'बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः। 'ॐ ह्लीं' हृदयाय नमः। 'बगलामुखि' शिरसे स्वाहा। 'सर्व-दुष्टानां' शिखायै वषट्। 'वाचं मुखं पदं स्तम्भय' कवचाय हुम्। 'जिह्वां कीलय' नेत्र-त्रयाय वौषट्। 'बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्याम्। सिंहासनोपरि - गतां परि-पीत-वर्णाम् ।।
पीताम्बराऽऽभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीम्। देवीं नमामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।।

यथा-शक्ति मूल-मन्त्र का जप कर '**कवच**' का पाठ करें-

षट्-त्रिंशदक्षरा मेऽव्याद्, बगला परमा शिरे । सहस्रारे गुरुः पातु, मे शक्त्या परमोज्ज्वला ।।१
चिद्-रूपा परमा शक्तिः, ललाटं शिव-गेहिनी[२] । भ्रू-युग्मं मे महा-काली, नेत्र-युग् परमेश्वरी ।।२
कर्ण-युग्मं पीत-पुष्प-प्रिया देवी कपोलयोः । चिबुके[३] परमा शक्तिरोष्ठयोः परमा कला ।।३
वदनं सकलं पातु, पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी । पीत-पुष्पार्चिता कण्ठं, स्कन्धौ स्कन्द-स्तन-प्रदा ।।४
पीताम्बरा दक्ष-भुजां, वामे वामाङ्ग-हारिणी । हृदयं च स्तन-द्वन्द्वं, नाभिं विश्व-स्वरूप-धृक् ।।५
उदरं दुर्धरा मेऽव्यात्, कटिं कन्दर्प-रूप-धृक् । नितम्बौ नमिताऽशेष-देवता जघनं रमा ।।६
जङ्घा-युग्मं मणि-धरा, जानुनि जन्तु-रूपिणी । ऊरू धर्म-प्रदा मेऽव्यात्, गुल्फौ गगन-रूप-धृक् ।।७
प्रपदौ कच्छप-पदा, पीता पादांगुलिस्तथा । शिरसः पद-पर्यन्तं, पातु मां परमा कला ।।८
गणेश-रूपिणी मेऽव्यादाधारं स-चतुर्दलम् । स्वाधिष्ठानं च षट्-दलं, पातु मां विधि-रूपिणी ।।९
मणि-पूरं दश-दलं, पातु केशव-रूप-धृक् । हृत्-पङ्कजं शैव-शक्तिः, विशुद्धं जीव-रूपिणी ।।१०
आज्ञा-चक्रं विन्दु-रूपा, पर-ब्रह्म-कुटुम्बिनी । ब्रह्म-रन्ध्रं सहस्रारे, पङ्कजाख्ये स्वरूप-धृक् ।।११
पातु मां परमा शक्तिश्भ्रमरी कुटिलालका । षट्-त्रिंशदक्षरा विद्या, पीता पीत-वपुर्धरा[४] ।।१२
पीत-पुष्पार्चिता पीत-नैवेद्यादि-बलि-प्रिया । सर्वाङ्गं मे शुभा पातु, वैरि-स्तम्भन-कारिणी ।।१३

(अब सहस्रार से आधार तक)

ब्रह्म-रन्ध्रेषु परमा, संसारार्णव-तारिणी । तारयेन् मां महा-देवी, मनो-वाञ्छित-दायिनी ।।१४
आज्ञा-चक्रे गुरु-रूपा, महा-भय-विनाशिनी । सर्व-विद्या-धरा पातु, जिह्वां शास्त्र-वपुर्धरा ।।१५
विशुद्धे षोडश-दले, जीवेश्वर-वपुर्धरा । षट्-त्रिंशत्-तत्त्व-रूपाख्या, कण्ठस्था मां सदाऽवतु ।।१६
हृत्-पङ्कजे भवानी-स्वरूपा तु परमात्मिका । इन्द्रियाणां महा-शत्रून्, विदारयतु दारुणा ।।१७

मणि-पूरे दश-दले, महा-विष्णु-स्वरूप-धृक् । दारयेन्निखिलान् मोहान्, मां माया सा पराऽवतु ।।१८
प्रजापति-स्वरूपेयं, स्वाधिष्ठाने तु षट्-दले । सृष्टि-स्थिति-परा-विद्या, मां मोहाद् बगलाऽवतु ।।१९
गणेश-रूप-धृक् पातु, मामाधारे चतुर्दले । षोडश-स्वर-रूपा च, पातु मां परमा कला ।।२०
कं खं गं घं तथा ङं चं, छं जं झं ञं तथाऽवतु । टं ठं डं ढं त्वमाकारा, णं तं थं दं तथाऽवतु ।।२१
धं नं पं फं तु शत्रुभ्यो, पीता मां ध्यान-तत्परा । बं भं मं यं हन्यात् शत्रून्[५], पातु मां वाक्-स्वरूपिणी ।।२२
रं लं वं शं तथा शत्रोः, षं सं जिह्वां विदारय[६] । मे वाचं मे मुखं जिह्वां, सदा रक्षतु रक्षतु ।।२३
हं ळं क्षं सकलं पातु, रक्ष मां परमं यशः । एषा विद्या महा-विद्या, शत्रु-स्तम्भन-कारिणी ।। २४

(त्रिधा मन्त्रं समुच्चार्य सर्वाङ्गे व्यापकं न्यसेत् ।)

अन्त में तीन बार मूल-मन्त्र (**ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा**) का उच्चारण कर पुनः **मन्त्र-न्यास** करे। यथा-

'**ॐ ह्लीं**' अंगुष्ठाभ्यां नमः। '**बगलामुखि**' तर्जनीभ्यां नमः। '**सर्व-दुष्टानां**' मध्यमाभ्यां नमः। '**वाच मुखं पदं स्तम्भय**' अनामिकाभ्यां नमः। '**जिह्वां कीलय**' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। '**बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा**' करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः। '**ॐ ह्लीं**' हृदयाय नमः। '**बगलामुखि**' शिरसे स्वाहा। '**सर्व-दुष्टानां**' शिखायै वषट्। '**वाचं मुखं पदं स्तम्भय**' कवचाय हुम्। '**जिह्वां कीलय**' नेत्र-त्रयाय वौषट्। '**बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा**' अस्त्राय फट्।

विशेष

उक्त **कवच** का पाठ करते समय अर्थ पर अवश्य ध्यान रखना चाहिए। **माता बगला के एक-एक नाम** में जो अर्थ भरा है, वह हृदय को गद्‌गद कर देता है। यथा-**स्कन्द-स्तन-प्रदा : स्कन्द स्वामी (कार्तिकेय)** को स्तन-पान करानेवाली, **वामाङ्ग-हारिणी : शिव के वाम अङ्ग का हरण करके उन्हें अर्द्ध-नारीश्वर बनानेवाली, गगन-रूप-धृक् : आकाश-रूप धारण करनेवाली**-इससे '**पीत्वा पीत्वैक-शेषां**' की स्मृति हो जाती है। इसी प्रकार अन्य नामों के अर्थ की गहराई में जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि इस **कवच** में **षट्-चक्रों** को समझकर उनका ध्यान करना भी आवश्यक है। ९वें श्लोक से ११वें श्लोक तक **मूलाधार से सहस्त्रार** तक उल्लेख कर १४वें श्लोक से पुनः **सहस्त्रार से मूलाधार** तक के चक्रों का उल्लेख २०वें श्लोक तक है। इन श्लोकों में **चक्रों के स्वरूप** तथा **चक्रों में अधिष्ठित देवताओं (गणपति, विधाता, केशव** अर्थात् **क्षीर-शायी विष्णु, हंस-कञ्ज** अर्थात् **अनाहत में शिव-शक्ति, विशुद्ध में जीव-शक्ति, आज्ञा में विन्दु-रूपा** तथा **पर-ब्रह्म, सहेस्त्रार में परमा शक्ति**) का सङ्केत भी किया गया है। तदनुसार ही उनका ध्यान करते हुए **पाठ** करने से **विशेष अनुभूति** की प्राप्ति होगी।

★★★

१. **सामयं** =मनो-व्यथा-सहित, २. **शिव-गेहिनी** = शिव की पत्नी, ३. **चिबुके** = ठोडी में, ४. **पीत-वपुर्धरा** = सुन्दर पीत छवि, ५. **हन्यात् शत्रून्** = शत्रुओं को नष्ट करना, ६. **जिह्वां विदारय** = शत्रु की वाक्-शक्ति को छिन्न-भिन्न करना।

सर्व-शत्रु-क्षय-कर एवं सर्व-दारिद्रय-नाशक

बगला-मुखी ब्रह्मास्त्र-रक्षा-कवचम्

दक्षिणामूर्ति-संहिता में उल्लिखित प्रस्तुत 'बगला-मुखी ब्रह्मास्त्र-रक्षा-कवच' के नाम से ही इसका महत्त्व स्पष्ट है। इस 'कवच' के पाठ से सभी प्रकार के शत्रुओं एवं दरिद्रता का समूल नाश होता है। शत्रुओं, चोरों एवं बाघ जैसे खूँखार पशुओं आदि का भय नहीं रहता तथा सभी लोग वशीभूत होते हैं। —सम्पादक

।। पूर्व-पीठिका-श्रीब्रह्मोवाच ।।

विश्वेश! दक्षिणामूर्ते! निगमागम-वित् प्रभो! । मह्यं पुरा त्वया दत्ता, विद्या ब्रह्मास्त्र-संज्ञिता ।।
तस्य मे कवचं ब्रूहि, येनाऽहं सिद्धिमाप्नुयाम् । भवामि वज्र-कवचं, ब्रह्मास्त्र-न्यास-मात्रतः ।।

।। श्रीदक्षिणामूर्तिरुवाच ।।

श्रृणु ब्रह्मन्! परं गुह्यं, ब्रह्मास्त्र-कवचं शुभम् । यस्योच्चारण-मात्रेण, भवेद् वै सूर्य-सन्निभः[1] ।।
सुदर्शनं मया दत्तं, कृपया विष्णवे तथा । तद्-वत् ब्रह्मास्त्र-विद्यायाः, कवचं कथयाम्यहम् ।।
अष्टाविंशत्यस्त्र-हेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रमुत्तमम् । सर्व-तेजो-मयं सर्वं, सामर्थ्य-विग्रहं परम् ।।
सर्व-शत्रु-क्षय-करं, सर्व-दारिद्र्य-नाशनम् । सर्वापच्छैल-राशि-नामस्त्रकं[2] कुलिशोपमम्[3] ।।
न तस्य शत्रवश्चापि, भयं चौर्य-भयं जरा । नरा नार्यश्च राजेन्द्राः, खगा व्याघ्रादयोऽपि च ।।
तं दृष्ट्वा वशमायान्ति, किमन्यत् साधवो जनाः । यस्य देहे न्यसेद् धीमान्, कवचं बगला-मयम् ।।
स एव पुरुषो लोके, केवलः शङ्करोपमः । न देयं पर-शिष्याय, शठाय पिशुनाय[4] चं
दातव्यं भक्ति-युक्ताय, गुरु-प्रियाय धीमते ।।७

विनियोग – ॐ **अस्य श्रीबगला-मुखी-ब्रह्मास्त्र-रक्षा-कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, 'स्वाहा' बीजं, 'ह्लीं' शक्तिः, स्व-कार्ये सर्व-सिद्ध्यर्थे पा[ठे] विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास – **श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, 'स्वाहा'-वीजाय नमः गुह्ये, 'ह्लीं'-शक्त्यै नमः नाभौ, स्व-कार्ये सर्व-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

ध्यान –

शुद्ध-स्वर्ण-निभां रामां, पीतेन्दु-खण्ड-शेखराम् । पीत-गन्धानुलिप्ताङ्गीं, पीत-रत्न-विभूषणाम् ।।१
पीनोन्नत-कुचां स्निग्धां, पीतालाङ्गीं सुपेशलाम् । त्रि-लोचनां चतुर्हस्तां, गम्भीरां मद-विह्वलाम् ।।२
वज्रारि-रसना-पाश-मुद्गरं दधतीं करैः । महा-व्याघ्रासनां देवीं, सर्व-देव-नमस्कृताम् ।।३

प्रसन्नां सुस्मितां क्लिन्नां, सु-पीतां प्रमदोत्तमाम् । सु-भक्त-दुःख-हरणे, दयार्द्रां दीन-वत्सलाम् ।
एवं ध्यात्वा परेशानि! बगला-कवचं स्मरेत् ।।४

मानस-पूजन- ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल रक्षा-कवच-स्तोत्र ।।

बगला मे शिरः पातु, ललाटे ब्रह्म-संस्तुता । बगला मे भ्रुवौ नित्यं, कर्णयोः क्लेश-हारिणी ।।१
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु, स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा । मोहिनी नासिकां पातु, श्रीदेवी बगलामुखी ।।२
ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु, सर्व-दन्तेषु चञ्चला । सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां, जिह्वाग्रे शारदाम्बिके ।।३
अकल्मषा मुखे पातु, चिबुके बगलामुखी । धीरा मे कण्ठ-देशे तु, कण्ठाग्रे काल-कर्षिणी ।।४
शुद्ध-स्वर्ण-निभा[५] पातु, कण्ठ-मध्ये तथाऽम्बिका । कण्ठ-मूले महा-भोगा, स्कन्धौ शत्रु-विनाशिनी ।।५
भुजौ मे पातु सततं, बगला सुस्मिता परा । बगला मे सदा पातु, कूर्परे कमलोद्भवा ।।६
बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ[६] तु, मणि-बन्धे महा-बला । बगला-श्रीः हस्तयोश्च, कुरु-कुल्ला करांगुलीम् ।।७
नखेषु वज्र-हस्ता च, हृदये ब्रह्म-वादिनी । स्तनौ मे मन्द-गमना, कुक्षयोः[७] योगिनी तथा ।।८
उदरं बगला माता, नाभिं ब्रह्मास्त्र-देवता । पुष्टिं मुद्गर-हस्ता च, पातु नो देव-वन्दिता ।।९
पार्श्वयोः हनुमद्-वन्द्या, पशु-पाश-विमोचिनी । करौ राम-प्रिया पातु, ऊरु-युग्मं महेश्वरी ।।१०
भग-माला तु गुह्यं मे, लिङ्गं कामेश्वरी तथा । लिङ्ग-मूले महा-क्लिन्ना[८], वृषणौ[९] पातु दूतिका ।।११
बगला जानुनी पातु, जानु-युग्मं च नित्यशः। जङ्घे पातु जगद्धात्री, गुल्फौ रावण-पूजिता ।।१२
चरणौ दुर्जया पातु, पीताम्बा चरणांगुलीः । पाद-पृष्ठं पद्म-हस्ता, पादाधश्चक्र-धारिणी ।।१३
सर्वाङ्गं बगला देवी, पातु श्रीबगला-मुखी । ब्राह्मी मे पूर्वतः पातु, माहेशी वह्नि-भागतः[१०] ।।१४
कौमारी दक्षिणे पातु, वैष्णवी स्वर्ग-मार्गतः[११]। ऊर्ध्वं पाश-धरा पातु, शत्रु-जिह्वा-धरा ह्यधः ।।१५
रणे राज-कुले वादे, महा-योगे महा-भये। बगला भैरवी पातु, नित्यं क्लीं-कार-रूपिणी ।।१६

।। फल-श्रुति ।।

इत्येवं वज्र-कवचं, महा-ब्रह्मास्त्र-संज्ञकम् । त्रि-सन्ध्यं यः पठेद् धीमान्, सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ।।१
न तस्य शत्रवः केऽपि, सखायः सर्व एव च । बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात्, सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात् ।।३
शत्रुत्वे मरुता तुल्यो, धनेन धनदोपमः । रूपेण काम-तुल्यः स्याद्, आयुषा शूल-धृक्-समः[१२] ।।४
सनकादि-समो धैर्ये, श्रिया विष्णु-समो भवेत् । सः विद्यया ब्रह्म-तुल्यो, यो जपेत् कवचं नरः ।।५
नारी वापि प्रयत्नेन, वाञ्छितार्थमवाप्नुयान् । द्वितीया सूर्य-वारेण, यदा भवति पद्म-भूः ।।६

तस्यां जातं शतावृत्त्या, शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात् । याता तुरीयं संध्यायां, भू-शय्यायां प्रयत्नतः ।।७
सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा, विजयं प्राप्नुयान् नरः । दारिद्र्यान् मुच्यते चाशु, स्थिरा लक्ष्मीः भवेद् गृहे ।।८
सर्वान् कामानवाप्नोति, स-विषो निर्विषो भवेत् । ऋणं निर्मोचनं स्याद् वै, सहस्रावर्तनाद् विधे! ।।९
भूत-प्रेत-पिशाचादि-पीडा तस्य न जायते । द्यु-मणि-भ्राजते यद्-वत्, तद्-वत् स्याच्छ्री-प्रभावतः ।।१०
स्थिराभया भवेत् तस्य, यः स्मरेद् बगला-मुखीम् । जयदं बोधनं काममुकं देहि मे शिवे ! ।।११
जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै, सोऽभीष्ट-फलमाप्नुयात् । इदं कवचमज्ञात्वा, यो जपेद् बगला-मुखीम् ।।१२
न स सिद्धिमवाप्नोति, साक्षाद् वै लोक-पूजितः । तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन, कवचं ब्रह्म-तेजसम् ।
नित्यं पदाम्बुज-ध्यानान्, महेशान-समो भवेत् ।।१३

।। श्रीदक्षिणामूर्ति-संहितायां ब्रह्मास्त्र-श्रीबगला-मुखी-रक्षा-कवचम् ।।

विशेष

जो साधक तीनों सन्ध्याओं में उक्त '**कवच**' का पाठ करता है, वह सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है। उसका कोई शत्रु नहीं होता, सभी उसके मित्र होते हैं।

रविवार को यदि '**द्वितीया**'-तिथि हो, तो ब्रह्म-मुहूर्त्त में इस '**कवच**' का १०० बार पाठ करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। **तुरीय संध्या (मध्य रात्रि)** में शय्या पर जो इस '**कवच**' का पाठ करता है, उसके सभी शत्रु नष्ट होते हैं और उसे विजय प्राप्त होती है। दरिद्रता का निवारण होता है तथा उसके गृह में स्थिर-लक्ष्मी का वास होता है।

जो साधक विधि-पूर्वक नियमित रूप से उक्त '**कवच**' का **१००० बार** पाठ करता है, उसकी सभी कामनाएँ पूरी होती हैं, विष का निवारण होता है, ऋण एवं भूत-प्रेत-पिशाच आदि की पीड़ा से मुक्ति मिलती है।

जो साधक उक्त '**कवच**'-पाठ के बाद '**जय श्री बगला-मुखि!**' कहकर मन-ही-मन '**अमुकं देहि मे शिवे!**' के रूप में अपनी कामना का स्मरण करता है, उसकी अभीष्ट कामना पूरी होती है।

★★★

१. सूर्य-सन्निभः = सूर्य के समान, **२. सर्वापच्छैल-राशि-नामस्त्रकं** = सर्व-आपत्ति-रूपी प्रस्तर (पत्थर) राशि नामक अस्त्र, **३. कुलिशोपमम्** = वज्र के समान, **४. पिशुनाय** = कुटिल प्रदर्शन करनेवाले दुष्ट (क्रूर, अधम, मन्द-बुद्धि), **५. शुद्ध-स्वर्ण-निभा** = शुद्ध स्वर्ण की आभावाली, **६. प्रकोष्ठौ** = कोहनी से नीचे दोनों भुजाओं में, **७. कुक्षयोः** = पेट के दोनों ओर 'कोखों' में, **८. महा-क्लिन्ना** = अत्यन्त आर्द्र-शक्ति, **९. वृषणौ** = अण्ड-कोषों में, **१०. वह्नि-भागतः** = पश्चिम दिशा में, **११. स्वर्ग-मार्गतः** = उत्तर दिशा में, **१२. शूल-धृक्-समः** = भगवान् शिव के समान।

श्रीबगला-त्रैलोक्य-विजय-कवच

'विष्णु-यामल' में उल्लिखित भगवती बगला के उक्त कवच के ऋषि श्रीभैरव जी हैं। इससे इस 'कवच' की महिमा स्वतः स्पष्ट हो जाती है। कलि-युग में यह 'कवच' सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला है। इसका नाम ही है–'त्रैलोक्य-विजय-कवच'। –सम्पादक

विनियोग–ॐ अस्य श्रीबगला-त्रैलोक्य-विजय-कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, 'ह्लीं' वीजं, 'ॐ' शक्तिः, 'स्वाहा' कीलकं, त्रि-वर्ग-फल-प्राप्तये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–श्रीभैरव-ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, 'ह्लीं'-वीजाय नमः गुह्ये, 'ॐ'- शक्तये नमः नाभौ, 'स्वाहा'-कीलकाय नमः पादयोः, त्रि-वर्ग-फल-प्राप्तये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यान–

चन्द्रोद्-भासित-मूर्धजां रिपु-रसां[१] मुण्डाक्ष-माला-कराम् ।
बालां सत्-स्रेक-चञ्चलां मधु-मदां रक्तां जटा-जूटिनीम् ।।
शत्रु-स्तम्भन-कारिणीं शशि-मुखीं पीताम्बरोद्-भासिनीम् ।
प्रेतस्थां बगला-मुखीं भगवतीं कारुण्य-रूपां भजे ।।

मानस-पूजन– ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-प्रीतये समर्पयामि नमः।

'प्राणायाम' कर 'कवच-स्तोत्र' का पाठ करें–

।। कवच-स्तोत्र ।।

ॐ ह्लीं मम शिरः पातु, देवी श्रीबंगलामुखी । ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं, देवी स्तम्भन-कारिणी ।।१
ॐ अं इं हं भ्रुवौ पातु, बगला क्लेश-हारिणी । ॐ हं पातु मे नेत्रे, नारसिंही शुभङ्करी ।।२
ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ, अं आं इं भुवनेश्वरी । ॐ ऐं क्लीं सौः श्रुतौ पातु, इं ईं ऊं च परमेश्वरी ।।३
ॐ ह्लीं हूं ह्लीं सदाऽव्यान् मे, नासां ह्लीं सरस्वती । ॐ ह्रां ह्लीं मे मुखं पातु, लीं एं ऐं छिन्न-मस्तिका ।।४
ॐ श्रीं वं मेऽधरौ पातु, ओं औं दक्षिण-कालिका । ॐ क्लीं श्रीं शिरसः पातु, कं खं गं घं च सारिका ।।५
ॐ ह्रीं हं भैरवी पातु, ङं अं अः त्रिपुरेश्वरी । ॐ ऐं सौः मे हनुं पातु, चं छं जं च मनोन्मनी ।।६
ॐ श्रीं श्रीं मे गलं पातु, झं ञं टं ठं गणेश्वरी । ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् डं ढं णं, हूं हूं चैव तु तोतला ।।७

ॐ ह्रीं श्रीं मे भुजौ पातु, तं थं दं वर-वर्णिनी । ॐ ऐं क्लीं सौः स्तनौ पातु, धं नं पं परमेश्वरी ।।८
ॐ क्रों क्रों मे रक्षेद् वक्षः, फं बं भं भग-वासिनी । ॐ ह्रीं रां पातु कुक्षिं मे, मं यं रं वह्नि-वल्लभा ।। ९
ॐ श्रीं ह्रूं पातु मे पार्श्वौ, लं वं लम्बोदर-प्रसूः । ॐ श्रीं ह्रीं हूं पातु नाभिं, शं षं षण्मुख-पालिनी ।।१०
ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठं, सं हं हाटक-रूपिणी । ॐ क्लीं ऐं मे कटिं पातु, पञ्चाशद्-वर्ण-मालिका ।।११
ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं, अं आं कं गुह्यकेश्वरी । ॐ श्रीं ऊं ॠं सदाऽव्यान् मे, इं ईं खं खा-स्वरूपिणी ।।१२
ॐ जूं सः पातु मे जङ्घे, रुं रूं धं अघ-हारिणी । ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे जानु, उं ऊं णं गण-वल्लभा ।।१३
ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ, लिं लीं ऊं चं च चण्डिका । ॐ ऐं ह्रीं पातु मे वाणी, एं ऐं छं जं जगत्-प्रिया ।।१४
ॐ श्रीं क्लीं पातु पादौ मे, झं ञं टं ठं भगोदरी । ॐ ह्रीं सर्वं वपुः पातु, अं अः त्रिपुर-मालिनी ।।१५
ॐ ह्रीं पूर्वे सदाऽव्यान् मे, झं झां डं ढं शिखा-मुखी । ॐ सौः याम्यं सदाऽव्यान् मे, इं ईं णं तं च तारिणी ।।१६
ॐ वारुण्यां च वाराही, ऊं थं दं धं च कम्पिला । ॐ श्रीं मां पातु चैशान्यां, पातु ॐ नं जनेश्वरी ।।१७
ॐ श्रीं मां चाग्नेयां पातु, ॠं भं मं धं च योगिनी । ॐ एं मां पातु नैऋत्यां, ॡं लं राजेश्वरी तथा ।।१८
ॐ श्रीं मां पातु वायव्यां, ॡं लं मे वीत-केशिनी । ॐ प्रभाते च मां पातु, लीं लं वागीश्वरी सदा ।।१९
ॐ मध्याह्ने च मां पातु, ऐं क्षं शङ्कर-वल्लभा । ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं पातु सायं, ऐं आं शाकम्भरी सदा ।।२०
ॐ ह्रीं निशादौ मां पातु, ॐ सं सागर-वासिनी । क्लीं निशीथे च मां पातु, ॐ हं हरि-हरेश्वरी ।।२१
ॐ क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद्, लं लां त्रिपुर - सुन्दरी । विसर्गा तु यद्-यत् स्थानं, वर्जितं कवचेन तु ।।
क्लीं तन्मे सकलं पातु, अं क्षं ह्रीं बगला-मुखी ।।२२

।। फल-श्रुति ।।

इतीदं कवचं दिव्यं, मन्त्राक्षर-मयं परम् । त्रैलोक्य-विजयं नाम, सर्व-वर्ण-मयं स्मृतम् ।।१

।। विष्णु-यामले श्रीबगला-त्रैलोक्य-विजय-कवचम् ।।

विशेष

उक्त '**कवच**' की विशेष महिमा यह है कि इसके पाठ-मात्र से पाठ-कर्त्ता '**दीक्षित**' हो जाता है। अतः **सिद्ध-विद्या**, **ब्रह्म-विद्या** की भाँति यथेष्ट फल-प्राप्ति हेतु इसका पाठ अत्यन्त गोपनीय रूप से निरन्तर करना चाहिए। जो साधक उक्त '**मन्त्र-गर्भ-कवच**' का सतत स्मरण करता है, वह सभी शत्रुओं को '**काल**' की भाँति जीत लेता है। '**कवच**' का '**मनसा-वाचा-कर्मणा**' पाठ करने से सभी प्रकार के उत्पातों में, घोर भय-दायक स्थिति में, विविध रोगों में शान्ति प्राप्त होती है। '**त्रैलोक्य-विजय-कवच**' पुत्र-पौत्र-धन-प्रदायक है। इसके पाठ से ऋणों का निवारण होता है, लक्ष्मी एवं भोग की वृद्धि होती है।

विशेष अनुभूति के लिए **रविवार की रात्रि** में स्नान आदि करके '**पूजा-गृह**' में '**दीपक**' जलाकर उक्त '**कवच**' का पाठ करें। ऐसे ही लगातार **तीन रविवारों की रात्रि** में पाठ करना चाहिए।

★★★

१. रिपु-रसा = शत्रु की जिह्वा।

कीर्ति, श्री एवं विजय-प्रदायक

श्रीबगला-मुखी-विश्व-विजय-कवच

'**श्रीविश्व-सारोद्धार तन्त्र**' में वर्णित उक्त '**श्रीबगला-मुखी-विश्व-विजय-कवच**' के ऋषि भी **श्रीभैरव** जी हैं, किन्तु इसको पूछनेवाली **श्रीपार्वती** जी हैं और बतानेवाले **श्रीशङ्कर** जी। श्रीशङ्कर जी भगवती से इसे बताते हुए कहते हैं कि '**कवच**' और कवच के साथ उल्लिखित '**महा-मन्त्र**' समृद्धि एवं मुक्ति-दायक हैं। —सम्पादक

विनियोग – **ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-विश्व-विजय-कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीबगला-मुखी देवता, 'क्लीं' बीजं, 'ऐं' शक्तिः, 'श्रीं' कीलकं, मम परस्य च मनोभिलषितेष्ट-कार्य-सिद्धये पाठे विनियोगः ।**

ऋष्यादि-न्यास – **श्रीभैरव-ऋषये नमः शिरसि, विराट्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-मुखी-देवतायै नमः हृदि, 'क्लीं'-वीजाय नमः गुह्ये, 'ऐं'-शक्तये नमः नाभौ, 'श्रीं'-कीलकाय नमः पादयोः, मम परस्य च मनोभिलषितेष्ट-कार्य-सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कर-न्यास – **ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।**

अङ्ग-न्यास – **ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।**

ध्यान –

सौवर्णासन-संस्थितां, त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् ।
हेमाभाङ्ग-रुचिं शशाङ्क-मुकुटां स-चम्पक-स्त्रग्-युताम् ।।
हस्तैर्मुद्गर - पाश - वज्र - रसनाः संबिभ्रतीं भूषणै –
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ।।

मन्त्र –

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने! मम रिपून् नाशय नाशय, ममैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनो-वाञ्छितं कार्यं साधय साधय, ह्लीं स्वाहा। (४८ अक्षर)।

।। कवच-स्तोत्र-पाठ ।।

शिरो मे पातु 'ॐ ह्रीं ऐं', 'श्रीं क्लीं' पातु ललाटकम् । सम्बोधन-पदं पातु, नेत्रे 'श्रीबगलानने' ।।१
श्रुतौ 'मम रिपून्' पातु, नासिकां 'नाशय'-द्वयम् । पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।।२
'देहि'-द्वन्द्वं सदा जिह्वां, पातु 'शीघ्रं' वचो मम । कण्ठ-देशं 'मनः' पातु, 'वाञ्छितं' बाहु-मूलकम् ।।३

'कार्यं' 'साधय'-द्वन्द्वं तु, करौ पातु सदा मम। 'माया'-युक्ता तथा 'स्वाहा', हृदयं पातु सर्वदा ।।४
अष्टाधिक-चत्वारिंश-दण्डाढ्या बगला-मुखी । रक्षां करोतु सर्वत्र, गृहेऽरण्ये सदा मम ।।५
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु, सर्वाङ्गे सर्व-सन्धिषु । मन्त्र-राजः सदा रक्षां, करोतु मम सर्वदा ।।६
'ॐ ह्लीं' पातु नाभि-देशं, कटिं मे 'बगला'ऽवतु । 'मुखि'-वर्ण-द्वयं पातु, लिङ्गं मे मुष्क-युग्मकम्[१] ।।७
जानुनी 'सर्व-दुष्टानां', पातु मे वर्ण-पञ्चकम् । 'वाचं मुखं' तथा 'पादं', षड्-वर्णा परमेश्वरी ।।८
जङ्घा-युग्मे सदा पातु, बगला रिपु-मोहिनी । 'स्तम्भये'ति पदं पृष्ठं, पातु वर्ण-त्रयं मम ।।९
जिह्वा-वर्ण-द्वयं पातु, गुल्फौ मे 'कीलये'ति च । पादोर्ध्वं सर्वदा पातु, 'बुद्धिं' पाद-तले मम ।।१०
'विनाशय'-पदं पातु, पादांगुल्योर्नखानि मे । 'ह्लीं' बीजं सर्वदा पातु, बुद्धीन्द्रिय-वचांसि मे ।।११
सर्वाङ्गं 'प्रणवः' पातु, 'स्वाहा' रोमाणि मेऽवतु । ब्राह्मी पूर्व-दले पातु, चाग्नेय्यां विष्णु-वल्लभा ।।१२
माहेशी दक्षिणे पातु, चामुण्डा राक्षसेऽवतु । कौमारी पश्चिमे पातु, वायव्ये चापराजिता ।।१३
वाराही चोत्तरे पातु, नारसिंही शिवेऽवतु । ऊर्ध्वं पातु महा-लक्ष्मीः, पाताले शारदाऽवतु ।।१४
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु, सायुधाश्च स-वाहनाः । राज-द्वारे महा-दुर्गे, पातु मां गण-नायकः ।।१५
श्मशाने जल-मध्ये च, भैरवश्च सदाऽवतु । द्वि-भुजा रक्त-वसनाः, सर्वाभरण-भूषिताः ।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु, महाऽरण्ये सदा मम ।।१६

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं देवि! कवचं परमाद्भुतम् । 'श्रीविश्व-विजयं' नाम, कीर्ति-श्री-विजय-प्रदम् ।।१

।। श्रीविश्व-सारोद्धार-तन्त्रे श्रीबगला-मुखी-विश्व-विजये-कवचम् ।।

विशेष

उक्त '**कवच**' के पाठ से '**अपुत्र**' को 'पुत्र', '**निर्धन**' को 'धन' और '**उद्योगी/साहसी**' को १०० वर्ष की 'पूर्णायु' की प्राप्ति होती है।

जो साधक रात्रि में **श्रीबगला-मुखी** का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का जप कर '**कवच**' का पाठ नियमित रूप से करता है, उसकी सभी साध्य/असाध्य कामनाएँ पूरी होती हैं तथा विवादों में उसे विजय प्राप्त होती है।

उक्त '**कवच**' का पाठ कर अभिमन्त्रित '**मक्खन**' पत्नी को खिलाने से विद्यावान्, स्वस्थ पुत्र की प्राप्ति होती है। '**भोज-पत्र**' पर '**अष्ट-गन्ध**' से '**कवच**'-पाठ द्वारा अभिमन्त्रित '**उक्त मन्त्र**' को लिखकर '**साधक**' की '**दाहिनी भुजा**' तथा '**पत्नी**' की '**बाँई भुजा**' में धारण करने से '**साधक**' को सर्वत्र '**विजय**' प्राप्त होती है और '**पत्नी**' पुत्र-वती होती है।

१. **मुष्क-युग्मकम्** = दोनों अण्ड-कोष।

सर्व-काम-प्रद एवं समृद्धि-दायक

श्रीमहा-विद्या-पीताम्बरा-बगला-मुखी-कवच

'श्रीरुद्र-यामल' में वर्णित 'श्रीमहा-विद्या-पीताम्बरा-बगला-मुखी-कवच' के सन्दर्भ में स्वयं भगवान् शङ्कर पार्वती जी से कहते हैं कि यह 'कवच' सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला है और इसके स्मरण-मात्र से महा-विद्या पीताम्बरा बगला-मुखी प्रसन्न होती हैं। सबसे पहले 'गुरु' का ध्यान कर, 'प्राणायाम' करना चाहिए। फिर 'कवच' का पाठ करना चाहिए। –सम्पादक

विनियोग – ॐ अस्य श्रीमहा-विद्या-पीताम्बरा-बगलामुखी-कवचस्य श्रीमहा-देव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, 'ह्लीं' वीजम्, 'स्वाहा' शक्तिः, 'अं ठः' कीलकम्, मम सन्निहितानां दूर-स्थानां सर्व-दुष्टानां वाङ्-मुख-पद-जिह्वापवर्गाणां स्तम्भन-पूर्वकं सर्व-सम्पत्ति-प्राप्ति-चतुर्वर्ग-फल-साधनार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास – श्रीमहा-देव-ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीपीताम्बरा-देवतायै नमः हृदि, 'ह्लीं'-वीजाय नमः गुह्ये, 'स्वाहा'-शक्तये नमः नाभौ, 'अं ठः'-कीलकाय नमः पादयोः, मम सन्निहितानां दूर-स्थानां सर्व-दुष्टानां वाङ्-मुख-पद-जिह्वापवर्गाणां स्तम्भन-पूर्वकं सर्व-सम्पत्ति-प्राप्ति-चतुर्वर्ग-फल-साधनार्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यान –

मध्ये-सुधाब्धि मणि-मण्डप-रत्न-वेद्याम् । सिंहासनोपरि-गतां परिपीत-वर्णाम् ।।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीम् । देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।।१

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं, वामेन शत्रून् परि - पीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि ।।२

'प्राणायाम' कर 'कवच-स्तोत्र' का पाठ करे –

।। कवच-स्तोत्र ।।

सर्व-सिद्धि-प्रदा प्राच्यां, पातु मां बगलामुखी । पीताम्बरा तु चाग्नेय्यां, याम्यां महिष-मर्दिनी ।।१
नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु, भक्तानुग्रह-कारिणी । पातु नित्यं महा-देवी, प्रतीच्यां शूकरानना ।।२
वायव्ये पातु मां काली, कौबेर्यां त्रिपुराऽवतु । ईशान्यां भैरवी पातु, पातु नित्यं सुर-प्रिया ।।३
ऊर्ध्वं वागीश्वरी पातु, मध्ये मां ललिताऽवतु । अधस्ताद् अपि मां पातु, वाराही चक्र-धारिणी ।।४
मस्तकं पातु मे नित्यं, श्रीदेवी बगला-मुखी । भालं पीताम्बरा पातु, नेत्रे त्रिपुर-भैरवी ।।५
श्रवणौ विजया पातु, नासिका-युगलं जया । शारदा वचनं पातु, जिह्वां पातु सुरेश्वरी ।।६
कण्ठं रक्षतु रुद्राणी, स्कन्धौ मे विन्ध्य-वासिनी । सुन्दरी पातु बाहू मे, जया पातु करौ सदा ।।७

भवानी हृदयं पातु, मध्यं मे भुवनेश्वरी । नाभिं पातु महा-माया, कटिं कमल-लोचना ।।८
ऊरू मे पातु मातङ्गी, जानुनी चापराजिता । जङ्घे कपालिनी पातु, चरणौ चञ्चलेक्षणा ।।९
सर्वतः पातु मां तारा, योगिनी पातु चाग्रतः । पृष्ठं मे पातु कौमारी, दक्ष-पार्श्वे शिवाऽवतु ।।१०
रुद्राणी वाम-पार्श्वे तु, पातु मां सर्वदेष्टदा । स्तुता सर्वेषु देवेषु, रक्त-बीज-विनाशिनी ।।११

।। फल-श्रुति ।।

इत्येतत् कवचं दिव्यं, धर्म-कामार्थ-साधनम् । गोपनीयं प्रयत्नेन, कस्यचिन्न प्रकाशयेत् ।।१
यः सकृच्छ्रणुयाद् एतत्, कवचं मन्मुखोदितम् । स सर्वान् लभते कामान्, मूर्खो विद्यामवाप्नुयात् ।
तस्याशु शत्रवो यान्ति, यमस्य भवने शिवे ! ।।२

।। श्रीरुद्र-यामले महा-तन्त्रे श्रीमहा-विद्या-पीताम्बरा-बगला-मुखी-कवचम् ।।

विशेष

धर्म-अर्थ एवं काम –'त्रि-वर्ग' की प्राप्ति हेतु उक्त 'कवच' का गुप्त रूप से नियमित पाठ करना चाहिए। जो गोपनीय ढङ्ग से उक्त '**कवच**' का पाठ सुनता है, उसकी सभी कामनाएँ पूरी होती हैं, विद्या की प्राप्ति होती है और सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं।

★★★

'कवच'-पाठ की महिमा

'**कवच-पाठ**' की महिमा के सम्बन्ध में **जगद्-गुरु श्रीशङ्कराचार्य जी** के दो प्रसिद्ध वचन हैं- **(१) 'कवचं कवच-रूपं स्यात्', (२) 'सारूप्यं कवचाख्यम्'** ।

अर्थात् अपने इष्ट-देवता के '**कवच**' का पाठ करने से '**कवच**' के समान रक्षा होती है एवं देवता का '**सारूप्य**' प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में पाठ-कर्त्ता देवता के समान '**विशिष्ट-शक्ति-सम्पन्न**' बनता है।

अतः '**कवच**' का पाठ पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ करना चाहिए। पाठ-कर्त्ता की सभी कठिनाईयों का निवारण मात्र '**कवच'-पाठ** के द्वारा हो सकता है। शर्त केवल यह है कि '**पाठ**'– **पूर्ण श्रद्धा व विश्वास** के साथ, **नित्य नियमित रूप से निश्चित समय पर** करे। साथ ही '**कवच**' को शीघ्र-से-शीघ्र **कण्ठस्थ (याद)** कर, घर से बाहर चलते-फिरते, सूर्योदय/सूर्यास्त आदि पवित्र बेला में, मन्दिर आदि जैसे पवित्र स्थानों में, पर्व/त्योहार आदि विशेष अवसरों पर भी करना चाहिए। ऐसा करने से '**कवच**' जाग्रत हो जाता है और पाठ-कर्त्ता सभी प्रकार से सफल होता है।

श्रीबगला-सहस्त्र-नाम-साधना

'श्रीबगला-सहस्त्र-नाम-साधना'– नामक पुस्तक 'कल्याण मन्दिर प्रकाशन', प्रयाग द्वारा संवत् २०४१ वि० (सन् १९८४ ई०) में प्रकाशित हुई थी। पिछले कई वर्षों से यह पुस्तक अप्राप्य थी और पाठकों द्वारा इसकी निरन्तर माँग हो रही थी। अस्तु, 'चण्डी'-पत्रिका द्वारा जब इसे एक विशेषाङ्क के रूप में पुनः प्रकाशित करने की घोषणा हुई, तो 'चण्डी'-पत्रिका के सम्मानित पाठक एवं 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला-केन्द्र', जनपथ, नई दिल्ली के एसोशिएट् प्रोफेसर डॉ. नारायण दत्त शर्मा का पत्र हमें प्राप्त हुआ।

श्रीशर्मा जी ने अपने पत्र द्वारा हमें यह सूचना दी कि–"...बगला-मुखी सहस्त्र-नाम की पाण्डुलिपि 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय' के सरस्वती-भवन में सुरक्षित है। सम्भवतः पाण्डुलिपि सं० १९६९० है। कैटलॉग देखना चाहिए।... 'वृन्दावन-शोध-संस्थान', वृन्दावन में 'पीताम्बरा सहस्त्र-नाम' की दो पाण्डुलिपियाँ हैं– (१) सं० ११६५९ तथा एक्सेशन सं० ११६६६, (२) सं० ११६६० तथा एक्सेशन सं० १२७२६।... इलाहाबाद में ही 'गङ्गानाथ झा रिसर्च इन्स्टीट्यूट' में 'बगला-मुखी सहस्त्र-नाम-स्तोत्र' की पाण्डु-लिपि सं० ७५२३ सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त पाण्डु-लिपि सं० १०९२३ तथा सं० १०९२४ है। इस प्रकार कुल 'तीन पाण्डुलिपियाँ' वहाँ सुरक्षित हैं।..."

श्रीशर्मा जी के द्वारा दी गई उक्त महत्त्व-पूर्ण सूचनाओं के आधार पर हमने प्रयाग-स्थित 'गङ्गानाथ झा केन्दीय संस्कृत विद्यापीठ' के प्रधानाचार्य जी से सम्पर्क स्थापित करने का निर्णय लिया क्योंकि वे हमारे लिए सबसे अधिक निकटस्थ हैं, साथ ही वे हमारे परिचितों में हैं।

प्रधानाचार्य जी ने पाण्डु-लिपियों की फोटो-कापी प्राप्त करने हेतु हमारे आवेदन को देखते ही मान्यता प्रदान की और इस हेतु 'पाण्डु-लिपि-विभाग' को आवश्यक निर्देश भी दिए। 'पाण्डु-लिपि'-विभाग में हमें उक्त 'तीनों पाण्डु-लिपियाँ' देखने को मिलीं। तीन में से दो पाण्डुलिपियाँ अपूर्ण थीं। केवल एक 'पाण्डु-लिपि' पूर्ण थी, किन्तु वह 'मैथिली'-लिपि में थी। हम लोगों को इस लिपि का ज्ञान नहीं था। हमारे लिए यह कठिनाई उत्पन्न हुई कि इसे 'देव-नागरी'-लिपि में किससे 'लिपि-बद्ध' कराया जाए?

माँ भगवती बगला की कृपा से वहीं 'पाण्डु-लिपि'-विभाग में कार्य-रत डॉ. रामकिशोर जी झा से चर्चा हुई। उन्होंने भी पाण्डु-लिपि को देखा और यह बताया कि पाण्डु-लिपि की लिखावट सु-स्पष्ट नहीं है, फिर भी वे प्रयास करेंगे और इसमें हमारे द्वारा प्रकाशित 'श्रीबगला-सहस्त्र-नाम' से जो भिन्नता होगी, उसे लिखकर हमें देंगे। 'मैथिली भाषा में पाण्डु-लिपि' के अनुसार डॉ. रामकिशोर झा द्वारा बताए गए 'पाठ-भेदों' में से कुछ 'पाठ-भेद' हमें उचित लगे। उन्हीं उचित 'पाठ-भेदों' के अनुसार 'संशोधित श्रीबगला-सहस्त्र-नाम' यहाँ प्रस्तुत हो रहा है। 'सहस्त्र'-नाम इस बार बड़े अक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। साथ ही, इसमें प्रत्येक नाम के साथ उसकी संख्या भी दी जा रही है। आवश्यकता है कि 'श्रीबगला-सहस्त्र-नाम' से सम्बन्धित सभी पाण्डुलिपियाँ एकत्रित की जाएँ और पाठ-भेदों की एक विस्तृत सूची बनाई जाए तथा फिर विधि-वत् संशोधित पाठ तैयार किया जाए। माँ बगला की कृपा हुई, तो भविष्य में ऐसा प्रकाशन भी होगा।

अन्त में, हम डॉ. नारायणदत्त शर्मा, प्राचार्य श्रीगोप-राजन जी एवं डॉ. रामकिशोर जी झा के प्रति यहाँ अपना हृदय से आभार प्रकट करते हैं। –सम्पादक

श्रीबगला-मुखी सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

।। पूर्व-पीठिका ।।

सुरालये प्रधाने तु, देव - देवं महेश्वरम् । शैलाधिराज - तनया, सङ्गे हरमुवाच ह ।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

परमेष्ठिन्, परं धाम, प्रधानं परमेश्वर! । नाम्नां सहस्रं बगलामुख्यास्त्वं ब्रूहि वल्लभ! ।

।। श्रीईश्वरोवाच ।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, नाम-धेयं-सहस्त्रकम् । पर-ब्रह्मास्त्र-विद्यायाश्चतुर्वर्ग - फल - प्रदम् ।
गुह्याद् गुह्य-तरं देवि! सर्व-सिद्धैक-वन्दितम् । अति-गुप्त-तरा विद्या, सर्व - तन्त्रेषु गोपिता ।
विशेषतः कलि-युगे, महा-सिद्ध्यौघ-दायिनी । गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीयं प्रयत्नतः ।
अप्रकाश्यमिदं सत्यं, स्व - योनिरिव सुव्रते! । रोधिनी विघ्न-सङ्घानां, मोहिनी सर्व-योषिताम् ।
स्तम्भिनी राज-सैन्यानां, वादिनी पर-वादिनाम् । पुरा चैकार्णवे घोरे, काले परम - भैरवः ।
सुन्दरी-सहितो देवः, केशवः क्लेश-नाशनः । उरगासनमासीनो, योग - निद्रामुपागमत् ।
निद्रा-काले च त्रे काले, मया प्रोक्तः सनातनः । महा-स्तम्भ-करं देवि!, स्तोत्रं वा शत-नामकम् ।
सहस्र - नाम परमं, वद देवस्य कस्यचित् ।।९

।। श्रीभगवानुवाच ।।

शृणु शङ्कर, देवेश! परमाति-रहस्यकम् । अजोऽहं यत्प्रसादेन, विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन, प्रकाशात् सिद्धि-हानि-कृत् ।।१०

विनियोग – ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीभगवान् सदा-शि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्-वश्य-करी पीताम्बरा देवता, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोग

ऋष्यादि-न्यास – श्रीभगवान् सदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् -छन्दसे नमः मुखे श्रीजगद्-वश्य-करी-पीताम्बरा-देवतायै नमः हृदि। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यान –

पीताम्बर - परीधानां, पीनोन्नत-पयोधराम् । जटा-मुकुट-शोभाढ्यां, पीत-भूमि-सुखासनाम् ।। १
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च, बिभ्रतीं परमां कलाम् । सर्वागम - पुराणेषु, विख्यातां भुवन - त्रये ।। २
सृष्टि-स्थिति - विनाशानामादि - भूतां महेश्वरीम् । गोप्यां सर्व-प्रयत्नेन, ध्यायामि तां पुनः पुनः ।। ३
जगद्-विध्वंसिनीं देवीमजरामर - कारिणीम् । तां नमामि महा-मायां, महदैश्वर्य-दायिनीम् ।। ४

।। मन्त्रोद्धार ।।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य, स्थिर - मायां ततो वदेत् । बगला-मुखि! सर्वेति, दुष्टानां वाचमेव च ।। १५
मुखं पदं स्तम्भयेति, जिह्वां कीलय बुद्धि-मत् । विनाशयेति तारं च, स्थिर-मायां ततो वदेत् ।। १६
वह्नि - प्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्ग - फल - प्रदः। ब्रह्मास्त्रं ब्रह्म-विद्यां च, ब्रह्म-माया सनातनीम् ।। १७

स्पष्ट मन्त्र – ॐ ह्लीं बगला-मुखि ! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा।

उक्त मन्त्र का यथा-शक्ति 'जप' कर 'जप-समर्पण' कर 'सहस्र-नामों का पाठ' करे। यथा –

।। मूल सहस्त्र-नाम-पाठ ।।

ब्रह्मेशी[१] ब्रह्म - कैवल्यं[२], बगला[३] ब्रह्म - चारिणी[४] ।
नित्यानन्दा[५] नित्य - सिद्धा[६], नित्य - रूपा[७] निरामया[८] ।।१
संहारिणी[९] महा - माया[१०], कटाक्ष - क्षेम - कारिणी[११] ।
कमला[१२] विमला[१३] लीला[१४], रत्न - कान्तिर्गुणाश्रिता[१५] ।।२
मङ्गला[१६] विजया[१७] जया[१८], सर्व - मङ्गल - कारिणी[१९] ।
कामिनी[२०] कामनी[२१] काम्या[२२], कामुका[२३] काम - चारिणी[२४] ।।३
काम-प्रिया[२५] काम - रता[२६], कामा[२७] काम - स्वरूपिणी[२८] ।
कामाख्या[२९] काम - बीजस्था[३०], काम - पीठ - निवासिनी[३१] ।।४
कामदा[३२] कामहा[३३] काली[३४], कपाली[३५] च करालिका[३६] ।
कंसारिः[३७] कमला - कामा[३८], कैलासेश्वर - वल्लभा[३९] ।।५
कात्यायनी[४०] केशवा[४१] च, करुणा[४२] काम - केलि - भुक्[४३] ।
क्रिया[४४] कीर्तिः[४५] कृत्तिका[४६] च, काशिका[४७] मथुरा[४८] शिवा[४९] ।।६
कालाक्षी[५०] कालिका[५१] काली[५२], धवलानन - सुन्दरी[५३] ।
खेचरी[५४] च ख - मूर्तिश्च[५५], क्षुद्र - क्षुद्रा[५६] क्षुधा[५७] वरा[५८] ।।७
खड्ग - हस्ता[५९] खड्ग - रता[६०], खड्गिनी[६१] खर्पर - प्रिया[६२] ।
गङ्गा[६३] गौरी[६४] गामिनी[६५] च, गीता[६६] गोत्र - विवर्द्धिनी[६७] ।।८
गो - धरा[६८] गो - करा[६९] गोधा[७०], गन्धर्व - पुर - वासिनी[७१] ।
गन्धर्वा[७२] गन्धर्व - कला[७३], गोपनी[७४] गरुडासना[७५] ।।९
गोविन्द - भावा[७६] गोविन्दा[७७], गान्धारी[७८] गन्ध - मादिनी[७९] ।
गौराङ्गी[८०] गोपिका - मूर्तिर्गोपी - गोष्ठ - निवासिनी[८१-८२] ।।१०
गन्धा[८३] गजेन्द्र - गामिन्या[८४], गदाधर - प्रिया[८५] ग्रहा[८६] ।
घोर - घोरा[८७] घोर - रूपा[८८], घन - श्रोणी[८९] घन - प्रभा[९०] ।।११

दैत्येन्द्र - प्रबला[९१] घण्टा - वादिनी[९२] घोर - निःस्वना[९३] ।
डाकिन्युमा[९४-९५] उपेन्द्रा[९६] च, उर्वशी[९७] उरगासना[९८] ।।१२
उत्तमा[९९] उन्नता[१००] उन्ना[१०१], उत्तम - स्थान - वासिनी[१०२] ।
चामुण्डा[१०३] मुण्डिका[१०४] चण्डी[१०५], चण्ड - दर्प - हरेति[१०६] च ।।१३
उग्र-चण्डा[१०७] चण्ड - चण्डा[१०८], चण्ड - दैत्य - विनाशिनी[१०९] ।
चण्ड - रूपा[११०] प्रचण्डा[१११] च, चण्डा[११२] चण्ड - शरीरिणी[११३] ।।१४
चतुर्भुजा - प्रचण्डा[११४] च, चराचर - निवासिनी[११५] ।
छत्र - प्राय - शिरोवाहा[११६], छला[११७] छल-तरा[११८] छली[११९] ।।१५
छत्र - रूपा[१२०] छत्र - धरा[१२१], क्षत्रिय - क्षय - कारिणी[१२२] ।
जया[१२३] च जय - दुर्गा[१२४] च, जयन्ती[१२५] जयदा - परा[१२६] ।।१६
जायिनी[१२७] जयिनी[१२८] ज्योत्स्ना[१२९], जटाधर - प्रियाऽजिता[१३०] ।
जितेन्द्रिया[१३१] जित - क्रोधा[१३२], जय - माना[१३३] जनेश्वरी[१३४] ।।१७
जित - मृत्युर्जरातीता[१३५-१३६], जाह्नवी[१३७] जनकात्मजा[१३८] ।
झङ्कारा[१३९] झंझरी[१४०] झण्टा[१४१], झङ्कारी[१४२] झक - शोभिनी[१४३] ।।१८
झखा[१४४] झमेशा[१४५] झङ्कारी, योनि - कल्याण - दायिनी[१४६] ।
झर्झरा[१४७] झमुरी[१४८] झारा[१४९], झरा[१५०] झर - तरा - परा[१५१] ।।१९
झंझा[१५२] झमेता[१५३] झङ्कारी[१५४], झणा - कल्याण - दायिनी[१५५] ।
ईमना - मानसी - चिन्त्या[१५६], ईमुना - शङ्कर - प्रिया[१५७] ।।२०
टङ्कारी[१५८] टिटिका[१५९] टीका[१६०], टङ्कनी[१६१] च ट - वर्गगा[१६२] ।
टापा[१६३] टोपा[१६४] टट - पतिर्यमनी - यमन - प्रिया[१६५-१६६] ।।२१
ठकार - धारिणी[१६७] ठीका[१६८], ठकारी[१६९] ठक्कर - प्रिया[१७०] ।
ठेक - ठासा[१७१] ठकरती[१७२], ठामिनी[१७३] ठमन - प्रिया[१७४] ।।२२
डारहा[१७५] डाकिनी[१७६] डारा[१७७], डामरा[१७८] डमरु - प्रिया[१७९] ।
डाकिनी[१८०] डण्ड - युक्ता[१८१] च, डमरु - कर - वल्लभा[१८२] ।।२३

ढक्का[१८३] ढक्की[१८४] ढक्क-नादा[१८५], ढोल-शब्द-प्रबोधिनी[१८६] ।
ढामिनी[१८७] ढामन - प्रीता[१८८], ढग - तन्त्र - प्रकाशिनी[१८९] ।।२४
अनेक - रूपिणी - अम्बा[१९०], अणिमा - सिद्धि-दायिनी[१९१] ।
अमन्त्रिणी[१९२] अणु - करी[१९३], अणु - मद् - भानु - संस्थिता[१९४] ।।२५
तारा[१९५] तन्त्रावती[१९६] तन्त्र - तत्त्व - रूपा[१९७] तपस्विनी[१९८] ।
तरङ्गिणी[१९९] तत्त्व - परा[२००], तन्त्रिका[२०१] तन्त्र - विग्रहा[२०२] ।।२६
तपो-रूपा[२०३] तत्त्व - दात्री[२०४], तपः - प्रीति - प्रदर्षिणी[२०५] ।
तन्त्र - यन्त्रार्चन - परा[२०६], तलातल - निवासिनी[२०७] ।।२७
तल्पदा[२०८] त्वत्सदा-काम्या[२०९], स्थिरा[२१०] स्थिर-तरा[२११] स्थितिः[२१२] ।
स्थाणु-प्रिया[२१३] स्थल-परा[२१४], स्थिता[२१५] स्थान-प्रदायिनी[२१६] ।।२८
दिगम्बरा[२१७] दया - रूपा[२१८], दावाग्नि - दमनी[२१९] दमा[२२०] ।
दुर्गा[२२१] दुर्ग - परा - देवी[२२२], दुष्ट - दैत्य - विनाशिनी[२२३] ।।२९
दमन - प्रमदा[२२४] दैत्य - दया[२२५] दान - परायणा[२२६] ।
दुर्गार्ति - नाशिनी[२२७] दान्ता[२२८], दम्भनी[२२९] दम्भ - वर्जिता[२३०] ।।३०
दिगम्बर - प्रिया[२३१] दम्भा[२३२], दैत्य - दम्भ - विदारिणी[२३३] ।
दमना[२३४] दन्त - सौन्दर्या[२३५], दानवेन्द्र - विनाशिनी[२३६] ।।३१
दयाधारा[२३७] च दमनी[२३८], दर्भ - पत्र - विलासिनी[२३९] ।
धरिणी[२४०] धारिणी[२४१] धात्री[२४२], धराधर - धर - प्रिया[२४३] ।।३२
धराधर - सुता - देवी[२४४], सुधर्मा[२४५] धर्म - चारिणी[२४६] ।
धर्मज्ञा[२४७] धवला[२४८] धूला[२४९], धनदा[२५०] धन - वर्द्धिनी[२५१] ।।३३
धीराऽधीरा[२५२-२५३] धीर - तरा[२५४], धीर - सिद्धि - प्रदायिनी[२५५] ।
धन्वन्तरि - धरा[२५६] धीरा[२५७], ध्येया[२५८] ध्यान - स्वरूपिणी[२५९] ।।३४
नारायणी[२६०] नारसिंही[२६१], नित्यानन्दा[२६२] नरोत्तमा[२६३] ।
नक्ता[२६४] नक्त - वती[२६५] नित्या[२६६], नील - जीमूत - सन्निभा[२६७] ।।३५

नीलाङ्गी[२६८] नील - वस्त्रा[२६९] च, नील - पर्वत - वासिनी[२७०] ।
सुनील - पुष्प - खचिता[२७१], नील - जम्बु - सम - प्रभा[२७२] ।।३६

नित्याख्या-षोडशी - विद्या[२७३], नित्या[२७४] नित्य - सुखावहा[२७५] ।
नर्मदा[२७६] नन्दनाऽऽनन्दा[२७७], नन्दानन्द - विवर्द्धिनी[२७८] ।।३७

यशोदानन्द - तनया[२७९], नन्दनोद्यान - वासिनी[२८०] ।
नागान्तका[२८१] नाग - वृद्धा[२८२], नाग - पत्नी[२८३] च नागिनी[२८४] ।।३८

नमिताशेष - जनता[२८५], नमस्कार - वती[२८६] नमः ।
पीताम्बरा[२८७] पार्वती[२८८] च, पीताम्बर - विभूषिता[२८९] ।।३९

पीत - माल्याम्बर - धरा[२९०], पीताभा[२९१] पिङ्ग - मूर्द्धजा[२९२] ।
पीत - पुष्पार्चन - रता[२९३], पीत - पुष्प - समर्चिता[२९४] ।।४०

पर - प्रभा[२९५] पितृ - पतिः[२९६], पर - सैन्य - विनाशिनी[२९७] ।
परमा[२९८] पर - तन्त्रा[२९९] च, पर - मन्त्रा[३००] परात्परा[३०१] ।।४१

परा - विद्या[३०२] परा - सिद्धिः[३०३], परा - स्थान - प्रदायिनी[३०४] ।
पुष्पा[३०५] पुष्प - वती - नित्या[३०६], पुष्प - माला - विभूषिता[३०७] ।।४२

पुरातना[३०८] पूर्व - परा[३०९], पर - सिद्धि - प्रदायिनी[३१०] ।
पीता - नितम्बिनी[३११] पीता[३१२], पीनोन्नत - पयस्विनी[३१३] ।।४३

प्रमा[३१४] प्र - मध्यमाशेषा[३१५], पद्म - पत्र - विलासिनी[३१६] ।
पद्मावती[३१७] पद्म - नेत्रा[३१८], पद्मा[३१९] पद्म - मुखी[३२०] परा[३२१] ।।४४

पद्मासना[३२२] पद्म - प्रिया[३२३], पद्म - राग - स्वरूपिणी[३२४] ।
पावनी[३२५] पालिका[३२६] पात्री[३२७], परदा - वरदा - शिवा[३२८] ।।४५

प्रेत - संस्था[३२९] परानन्दा[३३०], पर - ब्रह्म - स्वरूपिणी[३३१] ।
जिनेश्वर - प्रिया - देवी[३३२], पशु - रक्त - रत - प्रिया[३३३] ।।४६

पशु - मांस - प्रियाऽपर्णा[३३४], परामृत - परायणा[३३५] ।
पाशिनी[३३६] पाशिका[३३७] चापि, पाशघ्नी[३३८] पशु - भक्षिणी[३३९] ।।४७

फुल्लारविन्द - वदना[३४०], फुल्लोत्पल - शरीरिणी[३४१] ।
परानन्द - प्रदा वीणा[३४२], पशु - पाश - विनाशिनी[३४३] ।।४८
फूत्कारा[३४४] फुत्परा[३४५] फेनी[३४६], फुल्लेन्दीवर - लोचना[३४७] ।
फट्-मन्त्रा[३४८] स्फटिका[३४९] स्वाहा[३५०], स्फोटा[३५१] च फट्-स्वरूपिणी[३५२] ।।४९
स्फाटिका - घुटिका - घोरा[३५३], स्फटिकाद्रि - स्वरूपिणी[३५४] ।
वराङ्गना[३५५] वर - धरा[३५६], वाराही[३५७] वासुकी[३५८] वरा[३५९] ।।५०
विन्दुस्था[३६०] विन्दुनी[३६१] वाणी[३६२], विन्दु - चक्र - निवासिनी[३६३] ।
विद्याधरी[३६४] विशालाक्षी[३६५], काशी - वासि - जन - प्रिया[३६६] ।।५१
वेद - विद्या[३६७] विरूपाक्षी[३६८], विश्व - युग् - बहु - रूपिणी[३६९] ।
ब्रह्म-शक्तिर्विष्णु-शक्तिः[३७०-३७१], पञ्च - वक्त्रा - शिव - प्रिया[३७२] ।।५२
वैकुण्ठ - वासिनी - देवी[३७३], वैकुण्ठ - पद - दायिनी[३७४] ।
ब्रह्म - रूपा[३७५] विष्णु - रूपा[३७६], पर - ब्रह्म - महेश्वरी[३७७] ।।५३
भव - प्रिया[३७८] भवोद्भावा[३७९], भव - रूपा[३८०] भवोत्तमा[३८१] ।
भव - पारा[३८२] भवाधारा[३८३], भाग्य - वत् - प्रिय - कारिणी[३८४] ।।५४
भद्रा[३८५] सुभद्रा[३८६] भवदा[३८७], शुम्भ - दैत्य - विनाशिनी[३८८] ।
भवानी[३८९] भैरवी[३९०] भीमा[३९१], भद्र - काली[३९२] सुभद्रिका[३९३] ।।५५
भगिनी[३९४] भग - रूपा[३९५] च, भग - माना[३९६] भगोत्तमा[३९७] ।
भग - प्रिया[३९८] भगवती[३९९], भग - वासा[४००] भगाकरा[४०१] ।।५६
भग - सृष्टा[४०२] भाग्यवती[४०३], भग - रूपा[४०४] भगासिनी[४०५] ।
भग - लिङ्ग - प्रिया - देवी[४०६], भग - लिङ्ग - परायणा[४०७] ।।५७
भग - लिङ्ग - स्वरूपा[४०८] च, भग - लिङ्ग - विनोदिनी[४०९] ।
भग - लिङ्ग - रता - देवी[४१०], भग - लिङ्ग - निवासिनी[४११] ।।५८
भग - माला[४१२] भग - कला[४१३], भगाधारा[४१४] भगाम्बरा[४१५] ।
भग - वेगा[४१६] भगाभूषा[४१७], भगेन्द्रा[४१८] भाग्य - रूपिणी[४१९] ।।५९

भग - लिङ्गाङ्ग - सम्भोगा[४२०], भग - लिङ्गासवावहा[४२१] ।
भग - लिङ्ग - स - माधुर्या[४२२], भग - लिङ्ग - निवेशिता [४२३]।।६०
भग - लिङ्ग - सु - पूज्या[४२४] च, भग - लिङ्ग - समन्विता[४२५] ।
भग - लिङ्ग - विरक्ता[४२६] च, भग - लिङ्ग - समावृता[४२७] ।।६१
माधवी[४२८] माधवी - मान्या[४२९], मधुरा[४३०] मधु - मानिनी [४३१]।
मद - हासा[४३२] महा - माया[४३३], मोहिनी[४३४] महदुत्तमा[४३५] ।।६२
महा-मोहा[४३६] महा - विद्या[४३७], महा - घोरा[४३८] महा - स्मृतिः[४३९] ।
मनस्विनी[४४०] मान - वती[४४१], मोदिनी[४४२] मधुरानना[४४३] ।।६३
मेनका[४४४] मानिनी[४४५] मान्या[४४६], मणि - रत्न - विभूषणा[४४७] ।
मल्लिका[४४८] मौलिका - माला[४४९], मालाधर - मदोत्तमा[४५०] ।।६४
मदना - सुन्दरी[४५१] मेधा[४५२], मधु - मत्ता[४५३] मधु - प्रिया[४५४] ।
मत्त - हंस - समोल्लासा[४५५], मत्त - सिंह - महासना[४५६] ।।६५
महेन्द्र - वल्लभा[४५७] भीमा[४५८], मौल्यं च मिथुनात्मजा[४५९] ।
महा - काल्या[४६०] महा - काली[४६१], महा - बुद्धिर्महोत्कटा[४६२-४६३] ।।६६
माहेश्वरी[४६४] महा - माया[४६५], महिषासुर - घातिनी[४६६] ।
मधुरा - कीर्ति[४६७] मत्ता[४६८] च, मत्त - मातङ्ग - गामिनी[४६९] ।।६७
मद-प्रिया[४७०] मांस - रता[४७१], मत्त - युक् - काम - कारिणी[४७२] ।
मैथुन्य - वल्लभा देवी[४७३], महानन्दा[४७४] महोत्सवा[४७५] ।।६८
मरीचिर्मा - रतिर्माया[४७६], मनो - बुद्धि - प्रदायिनी[४७७] ।
मोहा[४७८] मोक्षा[४७९] महा - लक्ष्मीर्महत्पद - प्रदायिनी[४८०-४८१] ।।६९
यम - रूपा[४८२] च यमुना[४८३], जयन्ती[४८४] च जय - प्रदा[४८५] ।
याम्या[४८७] यम - वती[४८७] युद्धा[४८८], यदोः - कुल - विवर्द्धिनी[४८९] ।।७०
रमा[४९०] रामा[४९१] राम - पत्नी[४९२], रत्न - माला[४९३] रति - प्रिया[४९४] ।
रत्न - सिंहासनस्था[४९५] च, रत्नाभरण - मण्डिता[४९६] ।।७१

रमणी[४९७] रमणीया[४९८] च, रत्या[४९९] रस - परायणा[५००] ।
रतानन्दा[५०१] रतवती[५०२], रघूणां - कुल - वर्द्धिनी[५०३] ।।७२
रमणारि - परिभ्राज्या[५०४], रैवारातिक - रत्नजा[५०५] ।
रावी[५०६] रस - स्वरूपा[५०७] च, रात्रि - राज - सुखावहा[५०८-५०९] ।।७३
ऋतुजा[५१०] ऋतुदा[५११] ऋद्धा[५१२], ऋतु - रूपा[५१३] ऋतु - प्रिया[५१४] ।
रक्त - प्रिया[५१५] रक्त - वती[५१६], रङ्गिणी[५१७] रक्त - दन्तिका[५१८] ।।७४
लक्ष्मीर्लज्जा[५१९-५२०] लतिका[५२१] च, लीला-लग्ना-निरीक्षिणी[५२२] ।
लीला[५२३] लीलावती[५२४] लोमा - हर्षाह्लादन - पट्टिका[५२५] ।।७५
ब्रह्म - स्थिता[५२६] ब्रह्म - रूपा[५२७], ब्रह्मणा[५२८] वेद - वन्दिता[५२९] ।
ब्रह्मोद्-भवा[५३०] ब्रह्म-कला[५३१], ब्रह्माणी[५३२] ब्रह्म-बोधिनी[५३३] ।।७६
वेदाङ्गना[५३४] वेद - रूपा[५३५], वनिता[५३६] विनता[५३७] वसा[५३८] ।
बाला[५३९] च युवती[५४०] वृद्धा[५४१], ब्रह्म - कर्म - परायणा[५४२] ।।७७
विन्ध्यस्था-विन्ध्य-वासी [५४३] च, विन्दु-युक्-विन्दु-भूषणा[५४४] ।
विद्यावती[५४५] वेद - धारी[५४६], व्यापिका - बार्हिणी - कला[५४७] ।।७८
वामाचार - प्रिया[५४८] वह्निर्वामाचार - परायणा[५४९-५५०] ।
वामाचार - रता - देवी[५५१], वाम - देव - प्रियोत्तमा[५५२] ।।७९
बुद्धेन्द्रिया[५५३] विबुद्धा[५५४] च, बुद्धाचरण - मालिनी[५५५] ।
बन्ध - मोचन - कर्त्री[५५६] च, वारुणा[५५७] वरुणालया[५५८] ।।८०
शिवा[५५९] शिव-प्रिया-शुद्धा[५६०], शुद्धाङ्गी-शुक्ल-वर्णिका[५६१] ।
शुक्ल - पुष्प - प्रिया-शुक्ला[५६२], शिव - धर्म - परायणा[५६३] ।।८१
शुक्लस्था-शुक्लनी[५६४] शुक्ल-रूपा - शुक्ल-पशु-प्रिया[५६५] ।
शुक्रस्था-शुक्रणी-शुक्रा[५६६], शुक्र - रूपा च शुक्रिका[५६७] ।।८२
षण्मुखी च षडङ्गा[५६८] च, षट् - चक्र - विनिवासिनी[५६९] ।
षड् - ग्रन्थि - युक्ता - षोढा[५७०] च, षण्माता च षडात्मिका[५७१] ।।८३

षडङ्ग - युवती - देवी[५७२], षडङ्ग - प्रकृतिर्वशी[५७३] ।
षडानना - षड्रसा[५७४] च, षष्ठी - षष्ठेश्वरी - प्रिया[५७५] ।।८४
षड्ज - वादा[५७६] षोडशी[५७७] च, षोढा - न्यास - स्वरूपिणी[५७८] ।
षट् - चक्र - भेदन - करी[५७९], षट् - चक्रस्थ - स्वरूपिणी[५८०] ।।८५
षोडश - स्वर - रूपा[५८१] च, षण्मुखी[५८२] षट् - पदान्विता[५८३] ।
सनकादि - स्वरूपा[५८४] च, शिव - धर्म - परायणा[५८५] ।।८६
सिद्धा[५८६] सिद्धेश्वरी[५८७] शुद्धा[५८८], सुर-माता[५८९] स्वरोत्तमा[५९०] ।
सिद्ध-विद्या[५९१] सिद्ध-माता[५९२], सिद्धा[५९३] सिद्ध-स्वरूपिणी[५९४] ।।८७
हरा[५९५] हरि-प्रिया-हारा[५९६], हरिणी[५९७] हार-युक्[५९८] तथा ।
हरि - रूपा[५९९] हरि - धारा[६००], हरिणाक्षी - हरि - प्रिया[६०१] ।।८८
हेतु - प्रिया[६०२] हेतु - रता[६०३], हिताहित - स्वरूपिणी[६०४] ।
क्षमा[६०५] क्षमावती[६०६] क्षिता[६०७], क्षुद्र - घण्टा - विभूषणा[६०८] ।।८९
क्षयङ्करी[६०९] क्षितीशा[६१०] च, क्षीण - मध्य - सुशोभना[६११] ।
अजानन्ता[६१२] अपर्णा[६१३] च, अहल्या[६१४] शेष-शायिनी[६१५] ।।९०
स्वान्तर्गता[६१६] च साधूनामन्तरानन्त - रूपिणी[६१७] ।
अरूपा[६१८] अमला[६१९] चाद्या[६२०], अनन्त - गुण - शालिनी[६२१] ।।९१
स्व-विद्या[६२२] विधिज्ञा[६२३] विद्याऽविद्या[६२४] च विन्दु-लोचना[६२५] ।
अपराजिता[६२६] जात-वेदा[६२७], अजपा[६२८] अमरावती[६२९] ।।९२
अल्पा[६३०] स्वल्पा[६३१] अनल्पाऽऽद्या[६३२], अणिमा-सिद्धि-दायिनी[६३३] ।
अष्ट - सिद्धि - प्रदा - देवी[६३४], रूप - लक्षण - संयुता[६३५] ।।९३
अरविन्द - मुखी - देवी[६३६], भोग - सौख्य - प्रदायिनी[६३७] ।
आदि-विद्या[६३८] आदि-भूता[६३९], आदि-सिद्धि-प्रदायिनी[६४०] ।।९४
सित् - कार - रूपा - देवी[६४१], सर्वासन - विभूषिता[६४२] ।
इन्द्र - प्रिया[६४३] च इन्द्राणी[६४४], इन्द्र - प्रस्थ - निवासिनी[६४५] ।।९५

इन्द्राक्षी[६४६] इन्द्र - वज्रा[६४७] च, इन्द्रमद्योक्षिणी[६४८] तथा ।
ईला[६४९] काम - निवासा[६५०] च, ईश्वरीश्वर - वल्लभा[६५१] ।।९६
जननी[६५२] चेश्वरी[६५३] दीना[६५४], भेदा[६५५] चेश्वर - कर्म - कृत्[६५६] ।
उमा कात्यायनी[६५७] ऊर्ध्वा[६५८], मीना[६५९] चोत्तर - वासिनी[६६०] ।।९७
उमा - पति - प्रिया - देवी[६६१], शिवा चोङ्कार-रूपिणी[६६२] ।
उरगेन्द्र - शिरो - रत्ना[६६३], उरगोरग - वल्लभा[६६४] ।।९८
उद्यान - वासिनी - माला[६६५], प्रशस्त - मणि - भूषणा[६६६] ।
ऊर्ध्व - दन्तोत्तमाङ्गी[६६७] च, उत्तमा - चोर्ध्व - केशिनी[६६८] ।।९९
उमा - सिद्धि - प्रदाया[६६९] च, उरगासन - संस्थिता[६७०] ।
ऋषि-पुत्री[६७१] ऋषिच्छन्दा[६७२], ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायिनी[६७३] ।।१००
उत्सवोत्सव - सीमन्ता[६७४], कामिका च गुणान्विता[६७५] ।
एला[६७६] एकार-विद्या[६७७] च, एणी[६७८] विद्या-धरा[६७९] तथा ।।१०१
ॐकार - वलयोपेता[६८०], ॐकार - परमा - कला[६८१] ।
ॐ वद - वद - वाणी[६८२] च, ॐकाराक्षर - मण्डिता[६८३] ।।१०२
ऐन्द्री[६८४] कुलिश - हस्ता[६८५] च, ॐलोक - पर - वासिनी[६८६] ।
ॐकार - मध्य - बीजा[६८७] च, ॐनमो - रूप - धारिणी[६८८] ।।१०३
पर - ब्रह्म - स्वरूपा[६८९] च, अंशुकांशुक - वल्लभा[६९०] ।
ॐकारा[६९१] अः-फट् - मन्त्रा[६९२] च, अक्षाक्षर - विभूषिता[६९३] ।।१०४
अमन्त्रा[६९४] मन्त्र - रूपा[६९५] च, पद - शोभा - समन्विता[६९६] ।
प्रणवोङ्कार - रूपा[६९७] च, प्रणवोच्चार - भाक्[६९८] पुनः ।।१०५
ह्रींकार - रूपा[६९९] ह्रीङ्कारी[७००], वाग्वीजाक्षर - भूषणा[७०१] ।
हृल्लेखा[७०२] सिद्धि - योगा[७०३] च, हृत् - पद्मासन - संस्थिता[७०४] ।।१०६
वीजाख्या[७०५] नेत्र - हृदया[७०६], ह्रीं - वीजा[७०७] भुवनेश्वरी[७०८] ।
क्लीं-काम-राजा[७०९] क्लिन्ना[७१०] च, चतुर्वर्ग-फल-प्रदा[७११] ।।१०७

क्लींक्लींक्लीं-रूपिका देवी[७१२], क्रींक्रींक्रीं-नाम-धारिणी[७१३] ।
कमला - शक्ति - वीजा[७१४] च, पाशांकुश - विभूषिता[७१५] ।।१०८

श्रीं श्रींकारा महा-विद्या[७१६], श्रद्धा[७१७] श्रद्धावती[७१८] तथा ।
ॐऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा[७१९] च, क्लीं-कारी परमा कला[७२०] ।।१०९

ह्रींक्लींश्रींकार - रूपा[७२१] च, सर्व - कर्म - फल - प्रदा[७२२] ।
सर्वाढ्या[७२३] सर्व - देवी[७२४] च, सर्व - सिद्धि - प्रदा[७२५] तथा ।।११०

सर्वज्ञा[७२६] सर्व-शक्तिश्च[७२७], वाग् - विभूति-प्रदायिनी[७२८] ।
सर्व - मोक्ष - प्रदा - देवी[७२९], सर्व - भोग - प्रदायिनी[७३०] ।।१११

गुणेन्द्र - वल्लभा[७३१] वामा[७३२], सर्व - शक्ति - प्रदायिनी[७३३] ।
सर्वानन्द - मयी[७३४] चैव, सर्व - सिद्धि - प्रदायिनी[७३५] ।।११२

सर्व - चक्रेश्वरी देवी[७३६], सर्व - सिद्धेश्वरी[७३७] तथा ।
सर्व - प्रियङ्करी[७३८] चैव, सर्व - सौख्य - प्रदायिनी[७३९] ।।११३

सर्वानन्द - प्रदा - देवी[७४०], ब्रह्मानन्द - प्रदायिनी[७४१] ।
मनो - वाञ्छित - दात्री[७४२] च, मनो - बुद्धि - समन्विता[७४३] ।।११४

अकारादि - क्षकारान्ता[७४४], दुर्गा - दुर्गति - नाशिनी[७४५] ।
पद्म-नेत्रा[७४६] सु-नेत्रा[७४७] च, स्वधा[७४८] स्वाहा[७४९] वषट्-करी[७५०] ।।११५

स्व - वर्गा[७५१] देव - वर्गा[७५२], चतुर्वर्गा च समन्विता[७५३] ।
अन्तःस्था[७५४] वेश्म - रूपा[७५५] च, नव - दुर्गा[७५६] नरोत्तमा[७५७] ।।११६

तत्त्व - सिद्धि - प्रदा[७५८] नीला[७५९], तथा नील - पताकिनी[७६०] ।
नित्य - रूपा[७६१] निशाकारी[७६२], स्तम्भिनी[७६३] मोहिनीति[७६४] च ।।११७

वशङ्करी[७६५] तथोच्चाटी[७६६], उन्मादी[७६७] कर्षिणीति[७६८] च ।
मातङ्गी[७६९] मधुमत्ता[७७०] च, अणिमा[७७१] लघिमा[७७२] तथा ।।११८

सिद्धा[७७३] मोक्ष - प्रदा[७७४] नित्या[७७५], नित्यानन्द - प्रदायिनी[७७६] ।
रक्ताङ्गी[७७७] रक्त - नेत्रा[७७८] च, रक्त - चन्दन - भूषिता[७७९] ।।११९

सद्यो - मांस - समालब्धा[८४५], सद्यश्छिन्नासि - शङ्करा[८४६] ।
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा, पश्चिमा दिक्[८४७] तथैव च ।।१३२
अग्नि - नैर्ऋति - वायव्या, ऐशानी - दिक्[८४८] तथा स्मृता[८४९] ।
ऊर्ध्वाङ्गाधो-गता[८५०] श्वेता[८५१], कृष्णा[८५२] रक्ता[८५३] च पीतका[८५४] ।।१३३
चतुर्वर्गा[८५५] चतुर्वर्णा[८५६], चतुर्मात्रात्मिकाऽक्षरा[८५७]।
चतुर्मुखी[८५८] चतुर्वेदा[८५९], चतुर्विद्या[८६०] चतुर्मुखा[८६१] ।।१३४
चतुर्गणा[८६२] चतुर्माता[८६३], चतुर्वर्ग - फल - प्रदा[८६४] ।
धात्री[८६५] विधात्री[८६६] मिथुना[८६७], नारी[८६८] नायक-वासिनी[८६९] ।।१३५
सुरा[८७०] मुदा[८७१] मुद-वती[८७२], मोदिनी[८७३] मेनकात्मजा[८७४] ।
ऊर्ध्व-काली[८७५] सिद्धि-काली[८७६], दक्षिणा-कालिका-शिवा[८७७] ।।१३६
नीला[८७८] सरस्वती[८७९] सत्त्वा[८८०], बगला[८८१] छिन्न-मस्तका[८८२] ।
सर्वेश्वरी[८८३] सिद्ध - विद्या[८८४], परा[८८५] परम - देवता[८८६] ।।१३७
हिंगुला[८८७] हिंगुलाङ्गी[८८८] च, हिंगुलाधर - वासिनी[८८९] ।
हिंगुलोत्तम - वर्णाभा[८९०], हिंगुलाभरणा[८९१] च सा ।।१३८
जाग्रती[८९२] च जगन्माता[८९३], जगदीश्वर - वल्लभा[८९४] ।
जनार्दन - प्रिया देवी[८९५], जय - युक्ता[८९६] जय-प्रदा[८९७] ।।१३९
जगदानन्द - कारी[८९८] च, जगदाह्लाद - कारिणी[८९९] ।
ज्ञान - दान - करी[९००] यज्ञा[९०१], जानकी[९०२] जनक - प्रिया[९०३] ।।१४०
जयन्ती[९०४] जयदा[९०५] नित्या[९०६], ज्वलदग्नि - सम - प्रभा[९०७] ।
बिम्बाधरा[९०८] च बिम्बोष्ठी[९०९], कैलासाचल - वासिनी[९१०] ।।१४१
विभवा[९११] वडवाग्निश्च[९१२], अग्नि - होत्र - फल - प्रदा[९१३] ।
मन्त्र - रूपा[९१४] परा - देवी[९१५], तथैव गुरु - रूपिणी[९१६] ।।१४२
गया[९१७] गङ्गा[९१८] गोमती[९१९] च, प्रभासा[९२०] पुष्कराऽपि[९२१] च ।
विन्ध्याचल - रता - देवी[९२२], विन्ध्याचल - निवासिनी[९२३] ।।१४३

बहू - बहु - सुन्दरी[१२४] च, कंसासुर - विनाशिनी[१२५] ।
शूलिनी[१२६] शूल - हस्ता[१२७] च, वज्रा - वज्र - धरापि[१२८] च ।।१४४
दुर्गा-शिवा[१२९] शान्ति-करी[१३०], ब्रह्माणी[१३१] ब्राह्मण-प्रिया[१३२] ।
सर्व - लोक - प्रणेत्री[१३३] च, सर्व - रोग - हराऽपि[१३४] च ।।१४५
मङ्गला[१३५] शोभना[१३६] शुद्धा[१३७], निष्कला[१३८] परमा - कला[१३९]।
विश्वेश्वरी[१४०] विश्व - माता[१४१], ललिता[१४२] हसितानना[१४३] ।।१४६
सदा - शिवा उमा[१४४] क्षेमा[१४५], चण्डिका - चण्ड - विक्रमा[१४६] ।
सर्व - देव - मयी - देवी[१४७], सर्वागम - भयापहा[१४८] ।।१४७
ब्रह्मेश - विष्णु - नमिता[१४९], सर्व - कल्याण - कारिणी[१५०] ।
योगिनी[१५१] योग - माता[१५२] च, योगीन्द्र - हृदय - स्थिता[१५३] ।।१४८
योगि - जाया[१५४] योग - वती[१५५], योगीन्द्रानन्द - योगिनी[१५६] ।
इन्द्रादि - नमिता - देवी[१५७], ईश्वरी[१५८] चेश्वर -प्रिया[१५९] ।।१४९
विशुद्धिदा[१६०] भय - हरा[१६१], भक्त - द्वेषि - भयङ्करी[१६२] ।
भव - वेषा[१६३] कामिनी[१६४] च, भेरुण्डा[१६५] भय - कारिणी[१६६] ।।१५०
बलभद्र - प्रियाकारा[१६७], संसारार्णव - तारिणी[१६८] ।
पञ्च - भूता[१६९] सर्व - भूता[१७०], विभूतिर्भूति - धारिणी[१७१-१७२] ।।१५१
सिंह - वाहा[१७३] महा - मोहा[१७४], मोह - पाश - विनाशिनी[१७५] ।
मन्दरा[१७६] मदिरा[१७७] मुद्रा[१७८], मुदा - मुद्गर - धारिणी[१७९]।।१५२
सावित्री च महा - देवी[१८०], पर - प्रिय - विनायिका[१८१] ।
यम - दूती[१८२] च पिङ्गाक्षी[१८३], वैष्णवी[१८४] शङ्करी[१८५] तथा ।।१५३
चन्द्र - प्रिया[१८६] चन्द्र - रता[१८७], चन्दनारण्य - वासिनी[१८८] ।
चन्दनेन्दु - समायुक्ता[१८९], चण्ड - दैत्य - विनाशिनी[१९०] ।।१५४
सर्वेश्वरी[१९१] यक्षिणी[१९२] च, किराती[१९३] राक्षसी[१९४] तथा ।
महा - भोग - वती - देवी[१९५], महा - मोक्ष - प्रदायिनी[१९६] ।।१५५

विश्व - हन्त्री[९९७] विश्व - रूपा[९९८], विश्व - संहार - कारिणी[९९९] ।
धात्री च सर्व - लोकानां[१०००], हित - कारण - कामिनी[१००१] ।।१५६
कमला[१००२] सूक्ष्मदा - देवी[१००३], धात्री - हर - विनाशिनी[१००४] ।
सुरेन्द्र - पूजिता - सिद्धा[१००५], महा - तेजो - वतीति[१००६] च ।।१५७
परा - रूप - वती देवी[१००७], त्रैलोक्याकर्ष - कारिणी[१००८] ।
इति ते कथितं देवि! पीता - नाम - सहस्रकम् ।।१५८

।। फल-श्रुति ।।

पठेद् वा पाठयेद् वापि, सर्व-सिद्धिर्भवेत् प्रिये !। इति मे विष्णुना प्रोक्तं, महा-स्तम्भ-करं परम् ।।१
प्रातः-काले च मध्याह्ने, सन्ध्या-काले च पार्वति! एक-चित्तः पठेदेतत्, सर्व-सिद्धिर्भविष्यति ।।२
एक-वारं पठेद्यस्तु, सर्व-पाप-क्षयो भवेत् । द्वि - वारं प्रपठेद्यस्तु, विघ्नेश्वर - समो भवेत् ।।३
त्रि-वारं पठनाद् देवि! सर्व सिद्ध्यति सर्वथा । स्तवस्यास्य प्रभावेण, साक्षाद् भवति सुव्रते ।।४
मोक्षार्थी लभते मोक्षं, धनार्थी लभते धनम् । विद्यार्थी लभते विद्यां, तर्क-व्याकरणान्विताम् ।।५
महित्वं वत्सरान्ताच्च, शत्रु-हानिः प्रजायते । क्षोणी-पतिर्वशस्तस्य, स्मरेण सदृशो भवेत् ।।६
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या, श्रेयस्तु भवति प्रिये !। गणाध्यक्ष-प्रतिनिधिः, कविः काव्य-परो वरः ।।७
गोपनीयं प्रयत्नेन, जननी - जार - वत् सदा । हेतु-युक्तो भवेन्नित्यं, शक्ति-युक्तः सदा भवेत् ।।८
य इदं पठते नित्यं, शिवेन सदृशो भवेत् । जीवः धर्मार्थ-भोगी, स्यान्मृतो मोक्ष-पतिर्भवेत् ।।९
सत्यं सत्यं महा-देवि! सत्यं सत्यं न संशयः । स्तवस्यास्य प्रभावेण, देवेन सह मोदते ।।१०
सु-चित्ताश्च सुराः सर्वे, स्तव-राजस्य कीर्तनात् । पीताम्बर-परीधानात्, पीत-गन्धानुलेपनात् ।
परमोदय-कीर्तिः स्यात्, परतः सुर-सुन्दरि!।११

।। श्रीउत्कट-शम्बरे नागेन्द्र-प्रयाण-तन्त्रे षोडश-साहस्रे
विष्णु-शङ्कर-सम्वादे पीताम्बरा-सहस्र-नाम-स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

।। माहात्म्य ।।

भगवती बगला के प्रस्तुत १००८ नाम अत्यन्त रहस्य-मय हैं। एकाग्र-चित्त होकर पूर्ण श्रद्धा के साथ इन नामों का पाठ-जप-मनन करना चाहिए और इनके द्वारा 'हवन', 'तर्पण' आदि करना चाहिए। कलि-युग में ये विशेष रूप से फल-दायी हैं। प्रातः, मध्याह्न एवं सायं-काल, जो इसका पाठ करता है, उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। जो एक बार पढ़ता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो दो बार इसका पाठ करता है, वह विघ्नेश्वर के समान हो जाता है। जो तीन बार इसका पाठ करता है, उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। मोक्ष चाहनेवाले को मोक्ष, धन चाहनेवाले को धन एवं विद्या चाहनेवाले को विद्या की प्राप्ति होती है। एक वर्ष लगातार पाठ करने से पाठ-कर्त्ता के शत्रुओं का विनाश हो जाता है।

★★★

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त
श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त
श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त

श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त

श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त
श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीगङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्या-पीठ, प्रयाग द्वारा प्राप्त

श्रीनिरञ्जन शर्मा द्वारा सन् १२९७ में लिखित

श्रीबगला-मुखी-सहस्र-नाम-स्तोत्रम्

(पाण्डु-लिपि : 'मैथिली'-लिपि : पृष्ठ १२)

श्रीबगला-सहस्त्र-नाम-होम-साधना

॥ विधि ॥

अपने दाहिने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अङ्गुल ऊँची बालुका (रेत) की 'वेदी' बनाए। 'वेदी' को 'मूल-मन्त्र' अथवा श्रीबगलायै नमः नमस्कार-मन्त्र पढ़कर देखे। 'फट्'-मन्त्र पढ़कर 'पञ्च-पात्र' के पवित्र जल से 'वेदी' का 'प्रोक्षण' करे। दुबारा 'फट्'-मन्त्र पढ़कर 'कुश' के अग्र भाग से 'वेदी' का 'ताड़न' करे। 'हुम्'-मन्त्र पढ़कर एक मूठी जल द्वारा 'वेदी' का 'सिञ्चन' करे।

फिर 'अग्नि' लाए। 'अग्नि' का एक अङ्गार-'मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः'-यह मन्त्र पढ़कर 'नैर्ऋत्य कोण' में क्रव्याद का अंश समझ कर गिरा दे। तब 'अग्नि' को 'मूल-मन्त्र' पढ़ते हुए 'वेदी' पर रखे और 'समिधा' रखकर अग्नि प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़े-

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्ण - वर्णमनलं, ममीद्धः सर्वतो मुखम् ॥

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर 'सङ्कल्प' पढ़े। यथा-

ॐ तत्सत्। अद्यैतस्य, ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त्त-देशे, अमुक-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास, श्रीबगला-मुखी-प्रीत्यर्थे सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे सहस्त्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति होमं करिष्ये।

अब 'मूल-मन्त्र' से 'प्राणायाम' कर 'विनियोग-ऋष्यादि-न्यास' करे और 'भगवती बगला का ध्यान' एवं 'मानस-पूजन' करे। यथा-

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबगला-मुखी-सहस्त्र-नाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीभगवान् सदा - शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्-वश्य-करी पीताम्बरा देवता, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे श्रीबगला-सहस्त्र-नाम-होमे विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

श्रीभगवान् सदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् -छन्दसे नमः मुखे। श्रीजगद्-वश्य-करी-पीताम्बरा-देवतायै नमः हृदि। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे श्रीबगला-सहस्त्र-नाम-होमे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ ध्यान ॥

पीताम्बर - परीधानां, पीनोन्नत - पयोधराम् ।
जटा-मुकुट-शोभाढ्यां, पीत-भूमि सुखासनाम् ॥
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च, बिभ्रतीं परमां कलाम् ।
सर्वागम - पुराणेषु, विख्यातां भुवन - त्रये ॥
सृष्टि-स्थिति - विनाशानामादि - भूतां महेश्वरीम् ।

गोप्यां सर्व-प्रयत्नेन, ध्यायामि तां पुनः पुनः ॥
जगद्-विंध्वसिनीं देवीमजरामर - कारिणीम् ।
तां नमामि महा-मायां, महदैश्वर्य-दायिनीम् ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-मुखी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

फिर 'मूल-मन्त्र' पढ़कर अथवा श्रीबगलायै नमः कहकर 'अग्नि' के ऊपर जल छिड़के। 'अग्नि' का 'पञ्चोपचारों से पूजन' करे तथा भगवती बगला का अग्नि-रूप में ध्यान कर उनका 'पञ्चोपचारों से पूजन' करे।

अब 'अग्नि' में 'घृत' या 'पायस' की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे-ॐ स्य्रूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्य्रूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्य्रूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्य्रूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्य्रूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ रय्रूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्य्रूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

फिर 'मूलं श्रीबगलायै स्वाहा बगलाया इदं'-यह मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे।

इसके बाद-**१. 'ॐ गुरवे स्वाहा'**, २. 'ॐ परम-गुरवे स्वाहा', **३. 'ॐ परापर-गुरवे स्वाहा'**, ४. 'ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा'-इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं के लिए और १. 'ॐ क्रोधिन्यै स्वाहा', **२. 'ॐ स्तम्भिन्यै स्वाहा'**, ३. 'ॐ मोहिन्यै स्वाहा'-इन तीन मन्त्रों से तीन प्रधान आवरण-शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे।

फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिए छः आहुतियाँ दे-ह्लां हृच्छक्त्यै स्वाहा। ह्लीं शिरः-शक्त्यै स्वाहा। ह्लूं शिखा-शक्त्यै स्वाहा। ह्लैं कवच-शक्त्यै स्वाहा। ह्लौं नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। ह्लः अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा- ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ कामदेवाय स्वाहा।

तब काम-देवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा- 'ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा।'

फिर आठ शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे-१. ॐ सुभगायै स्वाहा, २. ॐ भगायै स्वाहा, ३. ॐ भग-सर्पिण्यै स्वाहा, ४. ॐ भग-मालायै स्वाहा, ५. ॐ अनङ्गायै स्वाहा, ६. ॐ अनङ्ग-कुसुमायै स्वाहा, ७. ॐ अनङ्ग-मेखलायै स्वाहा, ८. ॐ अनङ्ग-मदनायै स्वाहा।

तब अष्ट-मातृकाओं को आहुतियाँ दे-**१. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा, २. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा, ३. ॐ कौमार्यै स्वाहा, ४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा, ५. ॐ वाराह्यै स्वाहा, ६. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ७. ॐ चामुण्डायै स्वाहा, ८. ॐ महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।**

फिर आठ भैरवों को आहुतियाँ दे- १. ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, २. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ३. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ४. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा, ५. ॐ उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा, ६. ॐ कपालि-भैरवाय स्वाहा, ७. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ८. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

पुनः आठ पीठों को आहुतियाँ दे-१. ॐ काम-रूप-पीठाय स्वाहा, २. ॐ मलय-पीठाय स्वाहा, ३. ॐ कुल-नाग-पीठाय स्वाहा, ४. ॐ कुलान्त-पीठाय स्वाहा, ५. ॐ चौहार-पीठाय स्वाहा, ६. ॐ जालन्धर-पीठाय स्वाहा, ७. ॐ उड्डीयान-पीठाय स्वाहा, ८. ॐ देवी-कोट-पीठाय स्वाहा।

तब दस भैरवों को आहुतियाँ दे-१. ॐ हेतुकाय स्वाहा, २. ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा, ३. ॐ वेतालाय स्वाहा, ४. ॐ अग्नि-जिह्वाय स्वाहा, ५. ॐ कालान्तकाय स्वाहा, ६. ॐ कपालाय स्वाहा, ७. ॐ एक-पादाय स्वाहा, ८. ॐ भीम-रूपाय स्वाहा, ९. ॐ मलयाय स्वाहा, १०. ॐ हाटकेश्वराय स्वाहा।

फिर दस दिक्-पालों को आहुतियाँ दे-१. ॐ इन्द्राय स्वाहा, २. ॐ अग्नये स्वाहा, ३. ॐ यमाय स्वाहा, ४. ॐ निर्ऋताय स्वाहा, ५. ॐ वरुणाय स्वाहा, ६. ॐ वायवे स्वाहा, ७. ॐ कुबेराय स्वाहा, ८. ॐ ईशानाय स्वाहा, ९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, १०. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

पुनः दिक्-पालों के आयुधों को आहुतियाँ दे-१. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्त्यै स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अंकुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदायै स्वाहा, ८. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा, ९. ॐ पद्माय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

तब बलि-देवताओं को आहुतियाँ दे-१. ॐ वटुकाय स्वाहा, २. ॐ योगिन्यै स्वाहा, ३. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा, ४. ॐ गणेशाय स्वाहा, ५. ॐ वसवे स्वाहा, ६. ॐ सूर्याय स्वाहा, ७. ॐ शिवाय स्वाहा, ८. ॐ भूताय स्वाहा।

फिर 'स्वाहा'-युक्त १००८ नामों को क्रम से पढ़ते हुए १००८ आहुतियाँ प्रदान करे। यथा-

श्रीबगला सहस्त्र-नामावली

ॐ ह्लीं ब्रह्मेश्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-कैवल्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बगलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-चारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्यानन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्य-सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्य-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं निरामयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं संहारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं महा-मायायै नमः स्वाहा ।।१०।।
ॐ ह्लीं कटाक्ष-क्षेम-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कमलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विमलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं लीलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं रत्न-कान्तिर्गुणाश्रितायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं मङ्गलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विजयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामिन्यै नमः स्वाहा ।।२०।।
ॐ ह्लीं कामन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामुकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-चारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-रतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामाख्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-बीजस्थायै नमः स्वाहा ।।३०।।
ॐ ह्लीं काम-पीठ-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कपाल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं करालिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कंसार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कमला-कामायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कैलासेश्वर-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कात्यायन्यै नमः स्वाहा ।।४०।।
ॐ ह्लीं केशवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं करुणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काम-केलि-भुके नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं क्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कीर्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कृत्तिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काशिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मथुरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शिवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कालाक्ष्यै नमः स्वाहा ।।५०।।
ॐ ह्लीं कालिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धवलानन-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं खेचर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ख-मूर्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं क्षुद्र-क्षुद्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं क्षुधायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं खड्ग-हस्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं खड्ग-रतायै नमः स्वाहा ।।६०।।
ॐ ह्लीं खड्गिन्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं खर्पर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गङ्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गौर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गीतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोत्र-विवर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गो-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गो-करायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोधायै नमः स्वाहा ।।७०।।
ॐ ह्लीं गन्धर्व-पुर-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गन्धर्वायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गन्धर्व-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोपन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गरुडासनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोविन्द-भावायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोविन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गान्धार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गन्ध-मादिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गौराङ्ग्यै नमः स्वाहा ।।८०।।
ॐ ह्लीं गोपिका-मूर्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोपी-गोष्ठ-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गन्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गजेन्द्र-गामिन्यायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं गदाधर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ग्रहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घोर-घोरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घोर-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घन-श्रोण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घन-प्रभायै नमः स्वाहा ।।९०।।
ॐ ह्लीं दैत्येन्द्र-प्रबलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घण्टा-वादिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं घोर-निःस्वनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डाकिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उपेन्द्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उर्वश्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उरगासनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उन्नतायै नमः स्वाहा ।।१००।।
ॐ ह्लीं उन्नायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उत्तम-स्थान-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चामुण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मुण्डिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड-दर्प-हरेत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उग्र-चण्डायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं चण्ड-चण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड-दैत्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड-रूपायै नमः स्वाहा ।।११०।।
ॐ ह्लीं प्रचण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड-शरीरिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्भुजा-प्रचण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चराचर-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छत्र-प्राय-शिरोवाहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छल-तरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छत्र-रूपायै नमः स्वाहा ।।१२०।।
ॐ ह्लीं छत्र-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं क्षत्रिय-क्षय-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जय-दुर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयन्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयदा-परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ज्योत्स्नायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जटाधर-प्रियाऽजितायै नमः स्वाहा ।।१३०।।

ॐ ह्लीं जितेन्द्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जित-क्रोधायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जय-मानायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जनेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जित-मृतवे नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जरातीतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जाह्नव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जनकात्मजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झङ्कारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झंझर्यै नमः स्वाहा ।।१४०।।
ॐ ह्लीं झण्टायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झङ्कार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झक-शोभिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झखायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झमेशायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झङ्कारी-योनि-कल्याण-दायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झर्झरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झमुर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झरायै नमः स्वाहा ।।१५०।।
ॐ ह्लीं झर-तरा-परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झंझायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झमेतायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं झङ्कार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं झणा-कल्याण-दायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ईमना-मानसी-चिन्त्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ईमुना-शङ्कर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टङ्कार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टिटिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टीकायै नमः स्वाहा ।।१६०।।
ॐ ह्लीं टङ्कन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ट-वर्गगायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टापायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टोपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टट-पतिर्यमन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं टट-पति-यमन-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठकार-धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठीकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठकार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठक्कर-प्रियायै नमः स्वाहा ।।१७०।।
ॐ ह्लीं ठेक-ठासायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठकरत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ठमन-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डारहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डाकिन्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं डारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डामरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डमरु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डाकिन्यै नमः स्वाहा ।।१८०।।
ॐ ह्लीं डण्ड-युक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं डमरु-कर-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढक्कायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढक्क्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढक्क-नादायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढोल-शब्द-प्रबोधिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढामन-प्रीतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ढग-तन्त्र-प्रकाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अनेक-रूपिणी-अम्बायै नमः स्वाहा ।।१९०।।
ॐ ह्लीं अणिमा-सिद्धि-दायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अमन्त्रिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अणु-कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अणु-मद्-भानु-संस्थितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तन्त्रावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तन्त्र-तत्त्व-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तपस्विन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तरङ्गिण्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं तत्त्व-परायै नमः स्वाहा ।।२००।।
ॐ ह्लीं तन्त्रिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तन्त्र-विग्रहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तपो-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तत्त्व-दात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तपः-प्रीति-प्रदर्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तन्त्र-यन्त्रार्चन-परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तलातल-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं तल्पदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं त्वत्-सदा-काम्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थिरायै नमः स्वाहा ।।२१०।।
ॐ ह्लीं स्थिर-तरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थित्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थाणु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थल-परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्थान-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दिगम्बरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दया-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दावाग्नि-दमन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दमायै नमः स्वाहा ।।२२०।।
ॐ ह्लीं दुर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दुर्गा-परा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दुष्ट-दैत्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दमन-प्रमदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दैत्य-दयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दान-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दुर्गार्ति-नाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दान्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दम्भन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दम्भ-वर्जितायै नमः स्वाहा ।।२३०।।
ॐ ह्लीं दिगम्बर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दम्भायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दैत्य-दम्भ-विदारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दमनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दन्त-सौन्दर्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दानवेन्द्र-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दयाधारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दमन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दर्भ-पत्र-विलासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धरिण्यै नमः स्वाहा ।।२४०।।
ॐ ह्लीं धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धराधर-धर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धराधर-सुता-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सु-धर्मायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं धर्म-चारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धर्मज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धवलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धूलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धनदायै नमः स्वाहा ।।२५०।।
ॐ ह्लीं धन-वर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धीरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अधीरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धीर-तरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धीर-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धन्वन्तरि-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धीरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ध्येयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ध्यान-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नारायण्यै नमः स्वाहा ।।२६०।।
ॐ ह्लीं नारसिंह्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्यानन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नरोत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नक्त-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नील-जीमूत-सन्निभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नीलाङ्ग्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं नील-वस्त्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नील-पर्वत-वासिन्यै नमः स्वाहा ।।२७०।।
ॐ ह्लीं सुनील-पुष्प-खचितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नील-जम्बु-सम-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्याख्या-षोडशी विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्य-सुखावहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नर्मदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नन्दनाऽऽनन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नन्दानन्द-विवर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं यशोदानन्द-तनयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नन्दनोद्यान-वासिन्यै नमः स्वाहा ।।२८०।।
ॐ ह्लीं नागान्तकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नाग-वृद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नाग-पत्न्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नागिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नमिताशेष-जनतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नमस्कार-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पीताम्बरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पार्वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पीताम्बर-विभूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पीत-माल्याम्बर-धरायै नमः स्वाहा ।।२९०।।
ॐ ह्लीं पीताभायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं पिङ्ग-मूर्द्धजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पीत-पुष्पार्चन-रतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पीत-पुष्प-समर्चितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पर-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पितृ-पत्यैः नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पर-सैन्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पर-तन्त्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पर-मन्त्रायै नमः स्वाहा ।।३००।।
ॐ ह्रीं परात्परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परा-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परा-सिद्ध्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परा-स्थान-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पुष्पायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पुष्प-वती-नित्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पुष्प-माला-विभूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पुरातनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पूर्व-परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पर-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा ।।३१०।।
ॐ ह्रीं पीता-नितम्बिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पीतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पीनोन्नत-पयस्विन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं प्रमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं प्र-मध्यमाशेषायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-पत्र-विलासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्मावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-नेत्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्मायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-मुख्यै नमः स्वाहा ।।३२०।।
ॐ ह्रीं परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्मासनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-राग-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पावन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पालिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परदा-वरदा-शिवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं प्रेत-संस्थायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परानन्दायै नमः स्वाहा ।।३३०।।
ॐ ह्रीं पर-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जिनेश्वर-प्रिया-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पशु-रक्त-रत-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पशु-मांस-प्रियाऽपर्णायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं परामृत-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पाशिकायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं पाशघ्न्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पशु-भक्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फुल्लारविन्द-वदनायै नमः स्वाहा ।।३४०।।
ॐ ह्लीं फुल्लोत्पल-शरीरिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परानन्द-प्रदा-वीणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पशु-पाश-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फूत्कारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फुत्परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फेन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फुल्लेन्दीवर-लोचनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फट्-मन्त्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्फटिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्वाहायै नमः स्वाहा ।।३५०।।
ॐ ह्लीं स्फोटायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं फट्-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्फाटिका-घुटिका-घोरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्फटिकाद्रि-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वराङ्गनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वर-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वाराह्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वासुक्यै नम स्वाहा
ॐ ह्लीं वरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्दुस्थायै नमः स्वाहा ।।३६०।।

ॐ ह्लीं विन्दुन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वाण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्दु-चक्र-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विद्या-धर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं काशी-वासि-जन-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वेद-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विश्व-युग् बहु-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-शक्त्यै नमः स्वाहा ।।३७०।।
ॐ ह्लीं विष्णु-शक्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पञ्च-वक्त्रा-शिव-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वैकुण्ठ-वासिनी देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वैकुण्ठ-पद-दायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विष्णु-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पर-ब्रह्म-महेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भव-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भवोद्-भावायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भव-रूपायै नमः स्वाहा ।।३८०।।
ॐ ह्लीं भवोत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भव-पारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भवाधारायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं भाग्य-वत्-प्रिय-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भद्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सुभद्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भवदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुम्भ-दैत्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भवान्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भैरव्यै नमः स्वाहा ।।३९०।।
ॐ ह्लीं भीमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भद्र-काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सु-भद्रिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-मानायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगोत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगवत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-वासायै नमः स्वाहा ।।४००।।
ॐ ह्लीं भगाकरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-सृष्टायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भाग्यवत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-प्रिया देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-स्वरूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-विनोदिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-रता देव्यै नमः स्वाहा ।।४१०।।
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-मालायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगाधारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगाम्बरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-वेगायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगाभूषायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भगेन्द्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भाग्य-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्गाङ्ग-सम्भोगायै नमः स्वाहा ।।४२०।।
ॐ ह्लीं भग-लिङ्गासवावहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-स-माधुर्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-निवेशितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-सु-पूज्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-समन्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-विरक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भग-लिङ्ग-समावृतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं माधव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं माधवी-मान्यायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं मधुरायै नमः स्वाहा ।।४३०।।
ॐ ह्रीं मधु-मानिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मद-हासायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-मायायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोहिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महदुत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-मोहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-घोरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-स्मृत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मनस्विन्यै नमः स्वाहा ।।४४०।।
ॐ ह्रीं मान-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोदिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मधुराननायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मेनकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मानिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मान्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मणि-रत्न-विभूषणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मल्लिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मौलिका-मालायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मालाधर-मदोत्तमायै नमः स्वाहा ।।४५०।।
ॐ ह्रीं मदना-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मेधायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मधु-मत्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मधु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मत्त-हंस-समोल्लासायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मत्त-सिंह-महासनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महेन्द्र-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भीमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मौल्यं मिथुनात्मजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-काल्यायै नमः स्वाहा ।।४६०।।
ॐ ह्रीं महा-काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-बुद्ध्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महोत्कटायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-मायायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महिषासुर-घातिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मधुरा-कीर्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मत्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मत्त-मातङ्ग-गामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मद-प्रियायै नमः स्वाहा ।।४७०।।
ॐ ह्रीं मांस-रतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मत्त-युक्-काम-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मैथुन्य-वल्लभा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महानन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महोत्सवायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं मरीचिर्मा-रतिर्मायायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मनो-बुद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोक्षायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।।४८०।।
ॐ ह्रीं महत्-पद-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं यम-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं यमुनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जय-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं याम्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं यम-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं युद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं यदोः-कुल-विवर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रमायै नमः स्वाहा ।।४९०।।
ॐ ह्रीं रामायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं राम-पत्न्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रत्न-मालायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रति-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रत्न-सिंहासनस्थायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रत्नाभरण-मण्डितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रमण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रमणीयायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं रत्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रस-परायणायै नमः स्वाहा ।।५००।।
ॐ ह्रीं रतानन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रतवत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रघूणां-कुल-वर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रमणारि-परिभ्राज्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रैवारातिक-रत्नजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं राव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रस-स्वरूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रात्रि-सुरवावहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं राज-सुखावहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ऋतुजायै नमः स्वाहा ।।५१०।।
ॐ ह्रीं ऋतुदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ऋद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ऋतु-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ऋतु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्त-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्त-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रङ्गिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्त-दन्तिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं लज्जायै नमः स्वाहा ।।५२०।।
ॐ ह्रीं लतिकायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं लीला-लग्ना-निरीक्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं लीलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं लीलावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं लोमा-हर्षाह्लादन-पट्टिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-स्थितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्मणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वेद-वन्दितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्मोद्-भवायै नमः स्वाहा ।।५३०।।
ॐ ह्लीं ब्रह्म-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-बोधिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वेदाङ्गनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वेद-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वनितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विनतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वसायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बालायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं युवत्यै नमः स्वाहा ।।५४०।।
ॐ ह्लीं वृद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्म-कर्म-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्ध्यस्था-विन्ध्य-वास्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्दु-युक्-विन्दु-भूषणायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं विद्यावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वेद-धार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं व्यापिका-बार्हिणी-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वामाचार-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वह्न्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वामाचार-परायणायै नमः स्वाहा ।।५५०।।
ॐ ह्लीं वामाचार-रता देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वामदेव-प्रियोत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बुद्धेन्द्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विबुद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बुद्धाचरण-मालिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बन्ध-मोचन-कर्त्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वारुणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वरुणालयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शिवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शिव-प्रिया-शुद्धायै नमः स्वाहा ।।५६०।।
ॐ ह्लीं शुद्धाङ्गी-शुक्ल-वर्णिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुक्ल-पुष्प-प्रिया-शुक्लायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शिव-धर्म-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुक्लस्था-शुक्लन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुक्ल-रूपा-शुक्ल-पशु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुक्रस्था-शुक्रणी-शुक्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुक्र-रूपा-शुक्रिकायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं षणमुखी षडङ्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षट्-चक्र-विनिवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षड्-ग्रन्थि-युक्ता-षोढायै नमः स्वाहा ।।५७०।।
ॐ ह्रीं षणमाता षडात्मिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षडङ्ग-युवती देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षडङ्ग-प्रकृतिर्वश्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षडानना-षड्रसायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षष्ठी-षष्ठेश्वरी-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षड्ज-वादायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षोडश्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षोढा-न्यास-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षट्-चक्र-भेदन-कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षट्-चक्रस्थ-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा ।।५८०।।
ॐ ह्रीं षोडश-स्वर-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षणमुख्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं षट्-पदान्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सनकादि-स्वरूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं शिव-धर्म-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्धेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं शुद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सुर-मातायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्वरोत्तमायै नमः स्वाहा ।।५९०।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्ध-मात्रे नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हरि-प्रिया-हारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हरिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हार-युजे नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हरि-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हरि-धारायै नमः स्वाहा ।।६००।।
ॐ ह्रीं हरिणाक्षी-हरि-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हेतु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हेतु-रतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं हिताहित-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षमावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षुद्र-घण्टा-विभूषणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षयङ्कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षितीशायै नमः स्वाहा ।।६१०।।
ॐ ह्रीं क्षीण-मध्य-सुशोभनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अजानन्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अपर्णायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं अहल्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं शेष-शायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्वान्तर्गतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं साधूनामन्तरानन्त-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अरूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अमलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं आद्यायै नमः स्वाहा ।।६२०।।
ॐ ह्रीं अनन्त-गुण-शालिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्व-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं विधिज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं विद्याऽविद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं विन्दु-लोचनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अपराजितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जात-वेदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अजपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अमरावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अल्पायै नमः स्वाहा ।।६३०।।
ॐ ह्रीं स्वल्पायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अनल्पाऽऽद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अणिमा-सिद्धि-दायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अष्ट-सिद्धि-प्रदा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रूप-लक्षण-संयुतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अरविन्द-मुखी देव्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं भोग-सौख्य-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं आदि-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं आदि-भूतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं आदि-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा ।।६४०।।
ॐ ह्रीं सित्-कार-रूपा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्वासन-विभूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्र-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्राण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्र-प्रस्थ-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्राक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्र-वज्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं इन्द्रमद्योक्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ईलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं काम-निवासायै नमः स्वाहा ।।६५०।।
ॐ ह्रीं ईश्वरीश्वर-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जनन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ईश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं दीनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भेदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ईश्वर-कर्म-कृते नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं उमा-कात्यायन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मीनायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं उत्तर-वासिन्यै नमः स्वाहा ।।६६०।।
ॐ ह्लीं उमा-पति-प्रिया देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शिवा ओङ्कार-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उरगेन्द्र-शिरो-रत्नायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उरगोरग-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उद्यान-वासिनी-मालायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं प्रशस्त-मणि-भूषणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऊर्ध्व-दन्तोत्तमाङ्ग्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उत्तमा उर्ध्व-केशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उमा-सिद्धि-प्रदायायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उरगासन-संस्थितायै नमः स्वाहा ।।६७०।।
ॐ ह्लीं ऋषि-पुत्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऋषिच्छन्दायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं उत्सवोत्सव-सीमन्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामिका गुणान्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं एलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं एकार-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं एण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विद्या-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐकार-वलयोपेतायै नमः स्वाहा ।।६८०।।
ॐ ह्लीं ॐकार-परमा-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐवद-वद-वाण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐकाराक्षर-मण्डितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कुलिश-हस्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐलोक-पर-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐकार-मध्य-बीजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ॐनमो-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पर-ब्रह्म-स्वरूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अंशुकांशुक-वल्लभायै नमः स्वाहा ।।६९०।।
ॐ ह्लीं ॐकारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अः-फट्-मन्त्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अक्षाक्षर-विभूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अमन्त्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पद-शोभा-समन्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं प्रणवोङ्कार-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं प्रणवोच्चार-भाके नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ह्लीं-कार-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ह्लीं-कार्यै नमः स्वाहा ।।७००।।
ॐ ह्लीं वाग्-वीजाक्षर-भूषणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हल्लेखायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सिद्धि-योगायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हृत्-पद्मासन-संस्थितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वीजाख्यायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं नेत्र-हृदयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ह्रीं-वीजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्लीं-काम-राजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्लिन्नायै नमः स्वाहा ।।७१०।।
ॐ ह्रीं चतुर्वर्ग-फल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं-रूपिका-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं-नाम-धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कमला-शक्ति-वीजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पाशांकुश-विभूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रीं-श्रींकारा महा-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रद्धावत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्लीं-कारी परमा कलायै नमः स्वाहा ।।७२०।।
ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं श्रींकार-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-कर्म-फल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्वाढ्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-शक्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वाग्-विभूति-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-मोक्ष-प्रदा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-भोग-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा ।।७३०।।
ॐ ह्रीं गुणेन्द्र-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वामायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-शक्ति-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्वानन्द-मय्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-चक्रेश्वरी देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-प्रियङ्कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-सौख्य-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्वानन्द-प्रदा देव्यै नमः स्वाहा ।।७४०।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मानन्द-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मनो-वाञ्छित-दात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मनो-बुद्धि-समन्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अकारादि-क्षकारान्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं दुर्गा-दुर्गति-नाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं पद्म-नेत्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सु-नेत्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्वधायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्वाहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वषट्-कर्यै नमः स्वाहा ।।७५०।।
ॐ ह्रीं स्व-वर्गायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं देव-वर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं चतुर्वर्गा समन्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अन्तःस्थायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वेश्म-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नव-दुर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नरोत्तमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं तत्त्व-सिद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नीलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नील-पताकिन्यै नमः स्वाहा ।।७६०।।
ॐ ह्रीं नित्य-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं निशाकार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्तम्भिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोहिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वशङ्कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं उच्चाट्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं उन्माद्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कर्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मातङ्ग्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मधुमत्तायै नमः स्वाहा ।।७७०।।
ॐ ह्रीं अणिमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं लघिमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मोक्ष-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नित्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं नित्यानन्द-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्ताङ्ग्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्त-नेत्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रक्त-चन्दन-भूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्वल्प-सिद्ध्यै नमः स्वाहा ।।७८०।।
ॐ ह्रीं सु-कल्पायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं दिव्य-चारण-सुक्रमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं संक्रान्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सर्व-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सप्त-वासर-भूषितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं प्रथमा-द्वितीया-तृतीया-चतुर्थिका-पञ्चमी-षष्ठी-विशुद्धा सप्तमी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-द्वादशी-त्रयोदशी चतुर्दशी-पूर्णिमा-अमावास्या-पूर्वा-उत्तरा-परि-पूर्णिमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं खड्गिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं चक्रिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं घोरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं गदिन्यै नमः स्वाहा ।।७९०
ॐ ह्रीं शूलिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भुशुण्ड्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं चापिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वाणायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं सर्वायुध-विभूषणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कुलेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कुल-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कुलाचार-परायणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कुल-कर्म-सुरक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कुलाचार-प्रवर्द्धिन्यै नमः स्वाहा ।।८००।।
ॐ ह्रीं कीर्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रियै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं रामायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं धर्मायै सततं नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क्षमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं धृत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्मृत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं मेधायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कल्प-वृक्ष-निवासिन्यै नमः स्वाहा ।।८१०।।
ॐ ह्रीं उग्रायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं उग्र-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं गौर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं वेद-विद्या-विबोधिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं साध्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं सु-सिद्धायै नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं विप्र-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं काली-कराल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं काल्यायै नमः स्वाहा ।।८२०।।
ॐ ह्रीं काल-दैत्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं कौलिनी-कालिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं क-च-ट-त-प-वर्णिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जय-युक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जयदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जृम्भिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं स्राविण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं द्राविणी-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भेरुण्डायै नमः स्वाहा ।।८३०।।
ॐ ह्रीं विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ज्योतिर्भूतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं जयदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ज्वाला-माला-समाकुलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं भिन्नाभिन्न-प्रकाशायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं विभिन्नाभिन्न-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं अश्विनी-भरणी-नक्षत्र-सम्भवान्वितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं काश्यप्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं विनतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं ख्यातायै नमः स्वाहा ।।८४०।।

ॐ ह्लीं दितिजा-दित्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कीर्तिः-काम-प्रिया देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कीर्त्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कीर्ति-विवर्द्धिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सद्यो मांस-समालब्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सद्यश्छिन्नासि-शङ्करायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दक्षिणा-उत्तरा-पूर्वा-पश्चिमा-दिके नमः स्वाहाद्र
ॐ ह्लीं अग्नि-नैर्ऋति-वायव्या-ऐशानी-दिके नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं स्मृतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऊर्ध्वाङ्गाधो-गतायै नमः स्वाहा ।।८५०।।
ॐ ह्लीं श्वेतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कृष्णायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं रक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पीतकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्वर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्मात्रात्मिकाऽक्षरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्मुख्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्वेदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्विद्यायै नमः स्वाहा ।।८६०।।
ॐ ह्लीं चतुर्मुखायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्गणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चतुर्मातायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं चतुर्वर्ग-फल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विधात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मिथुनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नायक-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सुरायै नमः स्वाहा ।।८७०।।
ॐ ह्लीं मुदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मुद-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मोदिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मेनकात्मजायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ऊर्ध्व-काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सिद्धि-काल्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दक्षिणा-कालिका-शिवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नीलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सत्त्वायै नमः स्वाहा ।।८८०।।
ॐ ह्लीं बगलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं छिन्न-मस्तकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्वेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सिद्ध-विद्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परम-देवतायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं हिंगुलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हिंगुलाङ्ग्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हिंगुलाधर-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हिंगुलोत्तम-वर्णाभायै नमः स्वाहा ।।८९०।।
ॐ ह्लीं हिंगुलाभरणायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जाग्रत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जगन्मात्रे नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जगदीश्वर-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जनार्दन-प्रिया देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जय-युक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जय-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जगदानन्द-कार्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जगदाह्लाद-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ज्ञान-दान-कर्यै नमः स्वाहा ।।९००।।
ॐ ह्लीं यज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जानक्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जनक-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयन्त्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं जयदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं नित्यायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ज्वलदग्नि-सम-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बिम्बाधरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बिम्बोष्ठ्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं कैलासाचल-वासिन्यै नमः स्वाहा ।।९१०।।
ॐ ह्लीं विभवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वडवाग्न्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं अग्नि-होत्र-फल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परा-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गुरु-रूपिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गयायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गङ्गायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं गोमत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं प्रभासायै नमः स्वाहा ।।९२०।।
ॐ ह्लीं पुष्करायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्ध्याचल-रता देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विन्ध्याचल-निवासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बहू-बहु-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कंसासुर-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शूलिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शूल-हस्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वज्रा-वज्र-धरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं दुर्गा-शिवायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शान्ति-कर्यै नमः स्वाहा ।।९३०।।
ॐ ह्लीं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्राह्मण-प्रियायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं सर्व-लोक-प्रणेत्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-रोग-हरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मङ्गलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शोभनायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शुद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं निष्कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परमा-कलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विश्वेश्वर्यै नमः स्वाहा ।।९४०।।
ॐ ह्लीं विश्व-मात्रे नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ललितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं हसिताननायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सदा-शिवा-उमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं क्षेमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्डिका-चण्ड-विक्रमायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-देव-मयी देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्वागम-भयापहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ब्रह्मेश-विष्णु-नमितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-कल्याण-कारिण्यै नमः स्वाहा ।।९५०।।
ॐ ह्लीं योगिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं योग-मात्रे नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं योगीन्द्र-हृदय-स्थितायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं योगि-जायायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं योग-वत्यै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं योगीन्द्रानन्द-योगिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं इन्द्रादि-नमिता देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ईश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं ईश्वर-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विशुद्धिदायै नमः स्वाहा ।।९६०।।
ॐ ह्लीं भय-हरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भक्त-द्वेषि-भयङ्कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भव-वेषायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भेरुण्डायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भय-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं बलभद्र-प्रियाकारायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं संसारार्णव-तारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पञ्च-भूतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-भूतायै नमः स्वाहा ।।९७०।।
ॐ ह्लीं विभूत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं भूति-धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सिंह-वाहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं महा-मोहायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मोह-पाश-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मन्दरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मदिरायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं मुद्रायै नमः स्वाहा

ॐ ह्लीं मुदा-मुद्गर-धारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सावित्री महा-देव्यै नमः स्वाहा ।।९८०।।
ॐ ह्लीं पर-प्रिय-विनायिकायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं यम-दूत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं पिङ्गाक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं वैष्णव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं शङ्कर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चन्द्र-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चन्द्र-रतायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चन्दनारण्य-वासिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चन्दनेन्दु-समायुक्तायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं चण्ड-दैत्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा ।।९९०।।
ॐ ह्लीं सर्वेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं यक्षिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं किरात्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं राक्षस्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं महा-भोग-वती देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं महा-मोक्ष-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विश्व-हन्त्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विश्व-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं विश्व-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सर्व-लोकानां धात्र्यै नमः स्वाहा ।।१०००।।
ॐ ह्लीं हित-कारण-कामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं कमलायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सूक्ष्मदा देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं धात्री-हर-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं सुरेन्द्र-पूजिता-सिद्धायै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं महा-तेजो-वत्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं परा-रूप-वती देव्यै नमः स्वाहा
ॐ ह्लीं त्रैलोक्याकर्ष-कारिण्यै नमः स्वाहा ।।१००८।।

फिर एक बार पुनः 'मूल-मन्त्र' के अन्त में 'स्वाहा' लगाकर २५ आहुतियाँ प्रदान कर चार व्याहृतियों की आहुतियाँ दें–

ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

सबसे अन्त में 'भस्म' को नमस्कार कर मस्तक पर लगावे तथा निम्न मन्त्र पढ़कर 'अग्नि' का विसर्जन करे–

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते!, सर्व-काम-प्रसाधक! ।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम् ।।

★★★

विशेष

१. 'श्रीबगला-सहस्त्र-नाम'-मन्त्रों द्वारा 'जप-पूजन-तर्पण'

'श्रीबगला-सहस्त्र-नाम'-मन्त्रों द्वारा 'जप' करने के लिए 'नाम'-मन्त्रों के अन्त में 'नमः' कहना चाहिए। 'पूजन' करने हेतु 'पूजयामि नमः' कहना चाहिए। 'पूजन' के साथ-साथ 'तर्पण' करने हेतु 'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः' कहना चाहिए।

उदाहरण के रूप में पूर्व प्रकाशित १००८ 'नाम'-मन्त्रों में से पहले १० 'नाम'-मन्त्रों को जप हेतु निम्न प्रकार से जपना चाहिए। यथा–

ॐ ह्लीं ब्रह्मेश्यै नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-कैवल्यायै नमः। ॐ ह्लीं बगलायै नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-चारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं नित्यानन्दायै नमः। ॐ ह्लीं नित्य-सिद्धायै नमः। ॐ ह्लीं नित्य-रूपायै नमः। ॐ ह्लीं निरामयायै नमः। ॐ ह्लीं संहारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं महा-मायायै नमः ।।१०।।

'पूजन' हेतु भगवती बगला के चित्र/मूर्ति अथवा 'यन्त्र' के सम्मुख पीले पुष्पादि के द्वारा निम्न प्रकार से पूजन करना चाहिए। यथा–

ॐ ह्लीं ब्रह्मेश्यै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-कैवल्यायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं बगलायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-चारिण्यै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्यानन्दायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्य-सिद्धायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्य-रूपायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं निरामयायै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं संहारिण्यै पूजयामि नमः। ॐ ह्लीं महा-मायायै पूजयामि नमः ।।१०।।

'पूजन' एवं 'तर्पण'-दोनों हेतु भगवती बगला के चित्र/मूर्ति अथवा 'यन्त्र' के सम्मुख पीले पुष्पादि के द्वारा निम्न प्रकार से पूजन-तर्पण करना चाहिए। यथा–

ॐ ह्लीं ब्रह्मेश्यै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-कैवल्यायै पूजयामि तर्पयामि नमः ॐ ह्लीं बगलायै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्म-चारिण्यै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्यानन्दायै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्य-सिद्धायै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं नित्य-रूपायै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं निरामयायै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं संहारिण्यै पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ह्लीं महा-मायायै पूजयामि तर्पयामि नमः ।।१०।।

सङ्कल्प, विनियोग, ऋष्यादि-न्यास में जहाँ 'होमं' है, वहाँ 'जपं', 'पूजनं', 'पूजनं तर्पणं' तथा जहाँ 'होमे' है वहाँ 'जपे', 'पूजने', 'पूजने तर्पणे' कहना चाहिए।

२. 'पञ्च-बलि'

'होम', 'जप', 'पूजन' एवं 'पूजन तर्पण' की पूर्णता के लिए अन्त में चारों दिशाओं एवं मध्य में अथवा एक स्थान पर १. बटुक, २. गणेश, ३. क्षेत्र-पाल, ४. योगिनी को 'बलि' प्रदान करना चाहिए।

★★★

श्रीबगला-खड्ग-माला-मन्त्र-साधना

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगला-खड्ग-माला-मन्त्रस्य श्रीनारायण ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबगला देवता, 'ह्लीं' बीजं, 'स्वाहा' शक्तिः, 'ॐ' कीलकं, ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास- श्री नारायण-ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगला-देवतायै नमः हृदि, 'ह्लीं'-बीजाय नमः गुह्ये, 'स्वाहा'-शक्तये नमः पादयोः, 'ॐ'-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास :	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगला-मुखि	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वाचं मुखं पदं स्तंम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
जिह्वां कीलय	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान-

मध्ये-सुधाब्धि मणि-मण्डित-रत्न-वेद्याम् ।
सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वस्त्राम् ।।
भ्राम्यद्-गदां कर-निपीडित-वैरि-जिह्वाम् ।
पीताम्बरां कनक-माल्य-वतीं नमामि ।।

मानस-पूजन- ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबगला-देवता-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबगला-देवता-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगला-देवता-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगला-देवता-प्रीतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ॐ ह्लीं बगला-मुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। (३६ अक्षर)।

॥ माला-मन्त्र ॥

ॐ ह्लीं सर्व-निन्दकानां, सर्व-दुष्टानां, वाचं स्तम्भय स्तम्भय, बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपर-बुद्धिं कुरु कुरु, अपस्मारं कुरु कुरु, आत्म-विरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठ-जिह्वा-तालु-कण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्व-द्वय-गुह्य-गुदाण्ड-त्रिक-जानु-पाद-सर्वाङ्गेषु पादादि-केश-पर्यन्तं केशादि-पाद-पर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, मारय मारय, पर-मन्त्र-पर-यन्त्र-पर-तन्त्राणि छेदय छेदय, आत्म-मन्त्र-यन्त्र-तन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्व-ग्रहान् निवारय निवारय, सर्वं अविधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हन हन, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्व-मन्त्र-स्वरूपिणि, सर्व-शल्य-योग-स्वरूपिणि, दुष्ट-ग्रह-चण्ड-ग्रह-भूत-ग्रहाऽऽकाश-ग्रह-चौर-ग्रह-पाषाण-ग्रह-चाण्डाल-ग्रह-यक्ष-गन्धर्व-किन्नर-ग्रह-ब्रह्म-राक्षस-ग्रह-भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी-डाकिनी-ग्रहाणां पूर्व-दिशं बन्धय बन्धय वाराहि बगला-मुखि मां रक्ष रक्ष, दक्षिण-दिशं बन्धय बन्धय किरात-वाराहि मां रक्ष रक्ष, पश्चिम-दिशं बन्धय बन्धय स्वप्न-वाराहि मां रक्ष रक्ष, उत्तर-दिशं बन्धय बन्धय धूम्र-वाराहि मां रक्ष रक्ष, सर्व-दिशो बन्धय बन्धय कुक्कुट-वाराहि मां रक्ष रक्ष, अधर-दिशं बन्धय बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सर्व-रोगान् विनाशय विनाशय, सर्व-शत्रु-पलायनाय, सर्व-शत्रु-कुलं मूलतो नाशय नाशय, शत्रूणां राज्य-वश्यं स्त्री-वश्यं जन-वश्यं दह दह पच पच, सकल-लोक-स्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय, स्तम्भन-मोहनाऽऽकर्षणाय सर्व-रिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु, ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाक्-प्रदानाय, क्लीं जगत्-त्रय-वशीकरणाय, सौः सर्व-मनः क्षोभणाय, श्रीं महा-सम्पत्-प्रदानाय, ग्लौं सकल-भूमण्डलाधिपत्य-प्रदानाय दां चिरंजीवने।

ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ॐ ह्लीं बगला-मुखि! सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय, राज-स्तम्भिनि! क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्व-जन सम्मोहिनि! सभा-स्तम्भिनि! स्त्रां स्त्रीं सर्व-मुख-रञ्जिनि! मुखं बन्धय बन्धय, ज्वल ज्वल, हंस हंस राजहंस प्रति-लोम इह-लोक पर-लोक परं-द्वार राज-द्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वा बन्धयामि, सकल-जन-सर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि, नागाश्व-मृग-सर्प-विहङ्गम-वृश्चिकादि-महोग्र-भूत-जातं बन्धयामि बन्धयामि, लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि, त्वम् इह आगच्छ आगच्छ, अत्रैव निवासं कुरु कुरु, ॐ ह्लीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

॥ श्रीविष्णु-यामले श्रीबगला-खड्ग-माला-मन्त्र॥

श्रीबगला-मुख्या-अर्चा-क्रम-स्तोत्रम्

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगला-मुख्या-अर्चा-क्रम-स्तोत्रस्य श्रीनारद ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, 'ह्लीं' बीजं, 'स्वाहा' शक्तिः, 'सं'-कीलकं, शत्रु-विनाशके पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास - श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, श्रीपीताम्बरा-देवतायै नमः हृदि, 'ह्लीं'-बीजाय नमः गुह्ये, 'स्वाहा'-शक्तये नमः नाभौ, 'सं'-कीलकाय नमः पादयोः, शत्रु-विनाशके पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

★ श्रीगुरु-वन्दना ★

वन्दे सकल-सन्देह-दाव-पावकमीश्वरम् । करुणा-वरुणा-वासं, भक्त-कल्पतरुं गुरुम् ।।१
उल्लसत्-पीत-विद्योति, विद्योतित-तनु-त्रयम् । निगमागम-सर्वस्वमीडेऽहं तन्महन्महः ।।२

★ 'मन्त्रोद्धार', 'विनियोग'-स्मरण-सहित वन्दना ★

ॐ पूर्वं स्थिर-मायां च, बगलामुखि सर्वतः । दुष्टानां वाचमुच्चार्य, मुखं पदं तथोद्धरेत् ।।३
स्तम्भयेति ततो जिह्वां, कीलयेति समुद्धरेत् । बुद्धिं विनाशयेति पदं, स्थिर-माया-मनुं स्मरेत् ।।४
प्रणवं वह्नि-जायां चेत्येष पैताम्बरो मनुः । पातु मां सर्वदा सर्व-निग्रहानुग्रह-क्षमः ।।५
कण्ठं नारद ऋषिः पातु, पंक्तिश्छन्दोऽवतान्मुखम् । पीताम्बरां देवता तु, हृन्मध्यमवतान् मम ।।६
ह्लीं वीजं स्तनयोर्मेऽव्यात्, स्वाहा शक्तिश्च दन्तयोः । सं कीलकं तथा गुह्ये, विनियोगोऽवताद् वपुः ।।७

★ 'षडङ्ग', 'तत्त्व-त्रय' एवं 'ध्यान'-स्मरण-सहित वन्दना ★

षड्-दीर्घ-भाजा वीजेन, न्यासोऽव्यान्मे करादिकम् । द्वि-पञ्च-पञ्च-नन्देषु-दशभिर्मन्त्र-वर्णकैः ।।८
षडङ्ग-कल्पना पातु, षडङ्गानि ह्यनुक्रमात् । ऐं विद्या-तत्त्वं क्लीं माया-तत्त्वं सौश्च शिवात्मकम् ।।९
तत्त्व-त्रयं सं वीजं च, मूलं हृत्-कण्ठ-मध्यगः । सुधाब्धौ हेम-भूरूढ-चम्पकोद्यान-मध्यतः ।।१०
गारुडोत्पल-निर्व्यूढ, स्वर्ण-सिंहासनोपरि । स्वर्ण-पङ्कज-संविष्टां, त्रि-नेत्रां शशि-शेखराम् ।।११
पीतालङ्कार-वसनां, मल्ली-चन्दन-शोभिताम् । सव्याभ्यां पञ्च-शाखाभ्यां, वज्रं जिह्वां च विभ्रतीम् ।।१२
मुद्गरं नाग-पाशं च, दक्षिणाभ्यां मदालसाम् । भक्तारि-विग्रहोद्योग-प्रगल्भां बगला-मुखीम् ।।१३

★ यन्त्रोद्धार-स्मरण-सहित आवरण-शक्ति-वन्दना ★

ध्यायमानस्य मे पातु, शात्रवोद्-द्वेषणे भृशम् । भू-कला-दल-दिक्-पत्र-षट्-कोणं त्र्यस्त्र-वैन्दुकम् ।।१४
यन्त्रं पैताम्बरं पायाद्, पायात्! सा माम् अविग्रहा । आधार-शक्तिमारभ्य, ज्ञानात्मान्तास्तु शक्तयः ।।१५
पीठाद्याः पान्तु पीठेऽत्र, प्रथमं मां च रक्षतु । शान्ति-शङ्ख-विशेषात्म-शक्ति-भूतानि पान्तु माम् ।।१६
आवाहनाद्याः पञ्चापि, मुद्राश्च सुमनोजलैः । त्रि-कोण-मध्यमारभ्य, पूजिता बगला-मुखी ।।१७
क्रोधिनी स्तम्भिनी चापि, धारिण्यश्चापि मध्यगाः । ओजः पूषादि-पीठानि, कोणाग्रेषु स्थितानि वै ।।१८
त्रिकोण-बाह्यतः सिद्ध-नाथाद्या गुरवस्तथा । सिद्ध-नाथः सिद्धानन्द-नाथः सिद्ध-परेष्ठि हि ।।१९
नाथः सिद्धः श्रीकण्ठश्च, नाथः सिद्ध-चतुष्टयम् । पातु मामथ षट्-कोणे, सुभगा भग-रूपिणी ।।२०
भगोदया च भग-निपातिनी भग-मालिनी । भगावहा च मां पातु, षट्-कोणाग्रेषु च क्रमात् ।।२१

त्वगात्मा शोणितात्मा च, मांसात्मा मेदसात्मकः । रूपात्मा परमात्मा च, पातु मां स्थिर-विग्रहा ।।२२
अष्ट-पत्रेषु मूलेषु, ब्राह्मी माहेश्वरी तथा । कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी च तथा पुनः ।। २३
चामुण्डा च महा-लक्ष्मीः, तत्र मध्ये पुनः जया । विजया च जयाम्बा च, राजिता जृम्भिणी तथा ।। २४
स्तम्भिनी मोहिनी वश्याऽऽकर्षिणी अथ तदग्रके । असिताङ्गो रुरुश्चण्डः, क्रोधोन्मत्त-कपालिनः ।
भीषणश्चापि संहार, एते रक्षन्तु मां सदा ।।२५
ततः षोडश-पत्रेषु, मङ्गला स्तम्भिनी तथा । जृम्भिणी मोहिनी वश्या, ज्वालासिंही वलाहका ।।२६
भू-धराऽकल्मषा धात्री, कन्यका काल-कर्षिणी । भान्तिका मन्द-गमना, भोगस्था भविकेति च ।। २७
पातु मामथ भू-सद्म, दश-दिक्षु दिगीश्वराः । इन्द्रोऽनलो यमो रक्षो, वरुणो मारुतः शशी ।
ईशाऽनन्तः स्वयम्भूश्च, दशैते पान्तु मे वपुः।।२८
वज्र शक्तिर्दण्ड-खड्गौ, पाशांकुश-गदाः क्रमात् । शूलं चक्रं सरोजं च, तत्तच्छस्त्राणि पान्तु माम् ।।२९
अथ च पूर्वादि-चतुः, द्वारेषु परतः क्रमात् । पातु विघ्नेश-वटुकौ, योगिनी क्षेत्र-पालकः ।।३०
गुरु-त्रयं त्रि-रेखासु, पातु मे वपुरञ्जसाः । पुनः पीताम्बरा पातु, उपचारैः प्रपूजिता ।।३१
साङ्गावरण-शक्तिश्च, जय-श्रीः पातु सर्वदा । वलयं वटुकादिभ्यो, रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ।
शक्तयः साधका वीराः, पान्तु मे देवता इमाः ।।३२

॥ फल-श्रुति, 'प्रयोग'-विधि॥

इत्यर्चा-क्रमतः प्रोक्तं, स्तोत्रं पैताम्बरं परम् । यः पठेत् सकृदप्येतत्, सोऽर्चा-फलमवाप्नुयात् ।।१
सर्वथा कारयेत् क्षिप्रं, प्रपद्यन्ते गदातुरान् । राजानो राज-पत्न्यश्च, पौरा जानपदास्तथा ।
वशगास्तस्य जायन्ते, सततं सेवका इव ।।२
गुरु-कल्पाश्च विबुधा, मूकतां यान्ति तेऽग्रतः। स्थिरी-भवति तद्-गेहे, चपलापि हरि-प्रिया ।।३
पीताम्बराङ्ग - वसनो यदि लक्ष - संख्यं, पैताम्बरं मनुममुं प्रजपेत् नरो यः ।
हैमीं सकृन्नियम-वान् विधिना हरिद्रा-मालां दधत् भवति तद्-वशगा त्रिलोकी ।।४

॥ स्तुति ॥

भवानि! बगला-मुखि!, त्रि-दश-कल्प-वल्लि! प्रभो! कृपा-जल-निधे! तव, चरण-घृत-बाधाखिलः।
सुरासुर-नरादिक-सकल-भक्त-भाग्य-प्रदे। त्वदङ्घ्रि-सरसीरुह-द्वयमहं तु ध्याये सदा ।।१
त्वम्ब ! जगतां जनि-स्थिति-विनाश-वीजं निज-प्रकाश-बहुल-द्युतिर्भवति भक्त-हृन्मध्यगा ।
त्रयी-मनु-सुपूजिता, हरि-हरादि-वृन्दारकैरनुक्षणमनुक्षणं मयि शिवे! क्षणं वीक्ष्यताम् ।।२
शिवे! तव तनूमहं, हरिहराद्य-गम्यां पराम् । निखिल-ताप-प्रत्यूह-हृद-दया-भाव-युक्तां स्मरे ।
विदारय विचूर्णय, ग्लपय शोषय स्तम्भय । प्रणोदय विरोधय, प्रविलय प्रबद्धारीणाम् ।।३
क्व पार्वति! कृपालसन्, मयि कटाक्ष-पातं मनाग् । अनाकुलतया क्षणं, क्षिप विपक्ष-संक्षोभिणि ! ।
यदीक्षण-पथं गतः, सकृदपि प्रभुः कश्चन् । स्फुटं मम वंश-वदो, भवतु तेन पीताम्बरे ! ।।४

विशेष– उक्त 'स्तोत्र' के 'पाठ'-मात्र से भगवती बगला की सम्पूर्ण पूजा का फल प्राप्त होता है। –सम्पादक

★★★

श्रीबगला की उपासना

-पं० काशीप्रसाद शुक्ल

श्रीबगला विद्या 'ऊर्ध्वाम्नाय' के अनुसार उपास्या हैं। इस आम्नाय में शक्ति सर्वथा पूज्या मानी जाती है, भोग्या नहीं। अतः श्रीबगला की साधना में साधक को सतर्कता से इन्द्रिय-निग्रह-पूर्वक साधना-पथ पर अग्रसर होते हुए सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्न करना चाहिए। यही आत्म-समर्पण की उच्च भावना है। श्रीबगला माँ की दया प्राप्त होने पर भी साधक को अपनी साधना की साध्य से जोड़नेवाली परम्परा को कभी शिथिल नहीं होने देना चाहिए-यही 'ऊर्ध्वाम्नाय' की उच्च कोटि की साधना का गूढ़ रहस्य है।

- श्रीबगला शक्ति की उपासना वैदिक रीति से ब्रह्मा ने की और सृष्टि रचने में समर्थ हुए। उन्हीं ने सनकादि मुनियों को विद्या का उपदेश किया। सनत्कुमार ने नारद को, नारद मुनि ने सांख्यायन नामक परमहंस को बताया। सांख्यायन ने ३६ पटलों का तन्त्र ही रच दिया। यह 'सांख्यायन तन्त्र' श्रीबगला उपासना के लिए अति उपयोगी है।
- दूसरे उपासक हुए भगवान् विष्णु, जिनका वर्णन 'स्वतन्त्र तन्त्र' और 'सहस्र-नाम' में मिलता है।
- तीसरे उपासक भगवान् शिव ने परशुराम को 'ब्रह्मास्त्र-विद्या' का उपदेश किया। जमदग्नि-पुत्र परशुराम ने द्रोणाचार्य को और द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वत्थामा को यह विद्या बताई। ब्राह्मण-वेष-धारी कर्ण को भार्गव राम ने सिखाया। च्यवन मुनि को भगवान् शिव ने ही यह विद्या प्रदान की, जिन्होंने अश्विनीकुमारों को यज्ञ का अधिकार देने के समय देव-राज इन्द्र के क्रोधित होने पर उनके वज्र को स्तम्भित कर दिया था। श्री हनुमान् जब सूर्य को निगलने चले थे, तब पवन देव ने स्तम्भन का प्रभाव दिखाया था।
- रावण-पुत्र मेघनाद ने हनुमान को बाँध कर लङ्का में उनकी गति को इसी शक्ति के बल पर अवरुद्ध किया था। अङ्गद ने रावण की सभा में अपना पैर जमा दिया था, जिसे उठाने में कोई सक्षम नहीं हुआ था। शक्ति की चोट से रण-भूमि में गिरे हुए लक्ष्मण को रावण नहीं उठा पाया था।
- द्वापर-युग में योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने जयद्रथ-वध के लिए सूर्य का स्तम्भन किया था।
- श्रीमद् गोविन्द-पाद की समाधि में विघ्न डालनेवाली रेवा नदी की धारा का स्तम्भन श्री भगवत्-पाद श्री शङ्कराचार्य द्वारा हुआ था।
- महा-मुनि श्री निम्बार्क ने नीम वृक्ष के ऊपर सूर्य का दर्शन एक परिव्राजक को कराया था।

श्रीभगवती पीताम्बरा के उपासकों के विषय में उक्त प्रकार से विविध ऐतिहासिक वर्णन आर्ष ग्रन्थों में मिलता है, जो एक स्वतन्त्र ही शोध का विषय है।

'पीताम्बरा'-माहात्म्य

पं० चन्द्रिकाप्रसाद पाठक शास्त्री

परमाराध्या पीताम्बरा जी की पूजा पापों और तापों को मिटा डालती है।

विविध बाधाओं को विनष्ट करनेवाली और अखिल अभिलाषाओं को परिपूर्ण कर देनेवाली जगज्जननी श्रीपीताम्बरा जी की आराधना को जो लोग श्रद्धा-भक्ति के सहित करते हैं, उन्हें दुर्लभतम भोग भी अनायास ही मिलते हैं।

'बगला'-'बगला'

'बगला'-'बगला' इस प्रकार निरन्तर जपनेवाले लोग शत्रु-रहित होकर आनन्दित रहते हैं।

भोगों की तो बात ही क्या है, श्रीपीताम्बरा जी की अर्चा से मोक्ष तक सुलभ हो जाता है।

पीताम्बरा जी को जो लोग 'पीताम्बर' चढ़ाते हैं, उनके कुल में लोगों को सदा 'पीताम्बर' पहिनने का अवसर मिलता रहता है। पीत-पुष्पों की मालाएँ जो लोग अर्पित करते हैं, उनका कुटुम्ब सर्वदा प्रफुल्लित और सुगन्धित बना रहता है।

'पीताम्बरा'-'पीताम्बरा'

'पीताम्बरा'-'पीताम्बरा' कहकर जो लोग माता जी को पुकारते हैं, उनके विविध उपद्रव जड़-सहित नष्ट हो जाते हैं।

मात्र 'पीताम्बरा' नाम का जापक, सर्व-बाधा-रहित होकर आनन्द-सिन्धु में स्नान करने का अधिकारी बन जाता है।

'पीताम्बरा'-पूजा

पीत आसन पर पीत-वस्त्र पहनकर, पीत सामग्रियों द्वारा माता पीताम्बरा जी की अर्चा करके, जो लोग हरिद्रा की माला से पीताम्बरा जी का महा-मन्त्र जपते हैं, वे लोग निश्चिन्त हो जाते हैं।

पीताम्बरा जी की प्रतिमा का पूजन 'सर्व-सिद्धि-प्रद' और 'लक्ष्मी-प्रद' माना गया है, 'शत्रु-पराजय' हेतु मङ्गल-वार को निर्मित प्रतिमा की शरण लेनी चाहिए। आनन्द की अभिवृद्धि के लिए गुरुवार-निर्मित प्रतिमा का उपयोग श्रेष्ठ माना गया है।

कोई ऐसा कार्य नहीं है, जो श्रीपीताम्बरा जी की पूजा से सफल न हो सके अर्थात् श्रीपीताम्बरा जी की पूजा से ऐहिक और पारलौकिक समस्त कार्य सफल हो जाते हैं।

अपने भक्तों की अभिलाषा को पूर्ण कर देना ही श्रीपीताम्बरा जी का स्वभाव है।

'पीताम्बरा'-स्मरण

महर्षि लोमश जी ने देवर्षि नारद जी से कहा है कि हे देवर्षे! नित्य 'पीताम्बरा-पीताम्बरा' यह नाम उच्चारण करनेवाला व्यक्ति कोटि यज्ञों का फल प्राप्त कर लेता है।

***